CMYK

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

अधिकतम :25°C
न्यूनतम: 24°C

मुजफ्फरनगर, मंगलवार 2 सितम्बर 2025 उत्तर प्रदेश संस्करण: वर्ष 26 अंक 231 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com भाद्रपद शुक्ल पक्ष 8 विक्रमी सम्वत् 2082 9 रबी उल अव्वल 1447 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

परिषदीय स्कूलों के विलय मामले में अगली सुनवाई 22 सितम्बर को पेज 2

महिला वनडे विश्वकप: पुरस्कार राशि में चार गुना वृद्धि खेल टाइम्स

जल प्रलय के संदेश सम्पादकीय

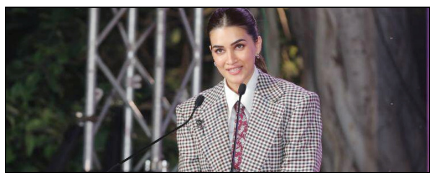

कृति सैनन बनीं यूएनएफपीए की मानद राजदूत पेज 12

अफगानिस्तान में भूकंप से तबाही

गांव के गांव बर्बाद, 800 लोगों की मौत, 2500 घायल

काबुल, वार्ता

पूर्वी अफगानिस्तान में आए एक शक्तिशाली भूकंप में लगभग 800 लोगों की मौत हो गई। अब तक 2,500 से ज्यादा लोगों के घायल होने की खबर है। रविवार देर रात 6.0 तीव्रता का भूकंप नंगरहार प्रांत के जलालाबाद शहर के पास कुनार प्रांत के कई कस्बों में आया, जिससे भारी नुकसान हुआ।

अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के मुताबिक, रात 11:47 बजे आए भूकंप का केंद्र नंगरहार प्रांत के जलालाबाद शहर से 27 किलोमीटर पूर्व-उत्तर-पूर्व में था। इसकी गहराई महज 8 किलोमीटर थी। कम तीव्रता वाले भूकंप ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं। इसके बाद भी इलाके में कई झटके आए। सोशल मीडिया और समाचार चैनलों पर प्रसारित वीडियो फुटेज में बचावकर्मी घायल लोगों को ढही हुई इमारतों से स्ट्रेचर पर उठाकर हेलीकॉप्टरों में ले जाते हुए दिखाई दे रहे हैं, जबकि कई लोग अपने हाथों से मलबा हटाने की कोशिश कर रहे हैं। तालिबान सरकार के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने सोमवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि मृतकों की संख्या बढ़कर 800 हो गई है। 2,500 लोग घायल हुए हैं। ज्यादातर लोग कुनार प्रांत में हताहत हुए हैं। कुनार के सबसे ज्यादा प्रभावित इलाकों में से एक नूरगल जिले के एक निवासी ने बताया कि लगभग पूरा गांव ही तबाह हो गया है। बच्चे मलबे के नीचे हैं। बुजुर्ग मलबे के नीचे हैं। युवा मलबे के नीचे हैं। हमें मदद की जरूरत है। हमें लोगों की जरूरत है, जो यहां आकर हमारी मदद करें। पूर्वी अफगानिस्तान पहाड़ी इलाका है। यह दूरदराज के इलाकों में फैला है। भूकंप के कारण संचार व्यवस्था बिगड़ गई है। एक जीवित बचे व्यक्ति ने बताया कि उसने अपनी आंखों के सामने घर ढहते और लोगों को मदद के लिए चीखते हुए देखा।

मोदी ने जान-माल के नुकसान पर शोक किया व्यक्त

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अफगानिस्तान में रविवार रात आए विनाशकारी भूकंप में हुए जानमाल के नुकसान पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए भारत की तरफ से हरसंभव मानवीय सहायता प्रदान करने की पेशकश की है। श्री मोदी ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर एक पोस्ट में सोमवार को कहा कि अफगानिस्तान में आए भूकंप में हुई जान-माल की हानि से अत्यंत दुखी हूं। इस कठिन घड़ी में हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं शोक संतप्त परिवारों के साथ हैं। हम घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं। भारत प्रभावित लोगों को हर संभव मानवीय सहायता और राहत प्रदान करने के लिए तत्पर है।

भारत ने अफगानिस्तान में एक हजार तंबू और 15 टन खाद्य सामग्री भेजी

नई दिल्ली। भारत ने अफगानिस्तान में भूकंप से हुई भारी तबाही के बाद मदद का हाथ बढ़ाते हुए तत्काल सहायता के तौर पर वहां एक हजार तंबू तथा 15 टन खाद्य सामग्री भेजी है। विदेश मंत्री डा. एस. जयशंकर ने अफगानिस्तान के विदेश मंत्री मौलवी अमीर खान मुत्तकी से बात कर भूकंप के कारण हुई जान-माल की हानि पर संवेदना व्यक्त की और कहा कि इस कठिन समय में भारत अफगानिस्तान के साथ है। उन्होंने कहा कि भारत ने काबुल में एक हजार तंबू पहुंचाए हैं। काबुल स्थित भारतीय मिशन द्वारा कुनार तक 15 टन खाद्य सामग्री भी तुरंत पहुंचाई जा रही है। उन्होंने कहा कि भारत की ओर से कल और राहत सामग्री भेजी जाएगी। डा. जयशंकर ने सोमवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि सोमवार को अफ़ग़ानिस्तान के विदेश मंत्री मौलवी अमीर खान मुत्तक़ी से बात की। भूकंप में हुई जान-माल की हानि पर अपनी संवेदना व्यक्त की। भारत ने आज काबुल में 1000 परिवारों के लिए तंबू पहुंचाए हैं। भारतीय मिशन द्वारा काबुल से कुनार तक 15 टन खाद्य सामग्री भी तुरंत पहुंचाई जा रही है। मंगलवार (आज) से भारत से और राहत सामग्री भेजी जाएगी। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। इस कठिन समय में भारत अफगानिस्तान के साथ है।

उत्तराखंड: चारधाम यात्रा पांच सितम्बर तक स्थगित

हिमाचल आपदा प्रभावित राज्य घोषित

शाह टाइम्स ब्यूरो

- हरियाणा में 2.50 लाख एकड़ में फसलों को नुकसान
- शिमला में लैंडस्लाइड, चार लोगों की मौत

नई दिल्ली/देहरादून। उत्तर भारत के हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर में भारी बारिश से हालात खराब हैं। हिमाचल में रविवार से तेज बारिश हो रही है। शिमला के कोटखाई, जुब्बल और जुन्गा में देर रात लैंडस्लाइड से 4 लोगों की मौत हो गई।

सीएम सुखविंदर सिंह सुक्खू ने विधानसभा में राज्य को आपदाग्रस्त प्रदेश घोषित किया है। चंडीगढ़-मनाली फोरलेन सहित 5 नेशनल हाईवे और करीब 800 सड़कें बंद पड़ी हैं। कुल्लू समेत 10 जिलों में सोमवार को स्कूल-कॉलेज बंद हैं। उत्तराखंड में केदारनाथ नेशनल हाईवे पर सोमवार को लैंडस्लाइड के बाद दो यात्रियों की मौत और छह लोग घायल हो गए। रेड और ऑरेंज अलर्ट के बाद चार धाम और हेमकुंड साहिब यात्रा 5 सितम्बर तक स्थगित कर दी गई है। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में लैंडस्लाइड के कारण 12 घर टूट गए। हरियाणा के 6 जिलों में भी बाढ़ जैसे हालात हैं। सिरसा में एक नहर टूटने से 50 एकड़ में खड़ी फसल पानी में डूब गई। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक प्रदेश में अब तक 2.50 लाख एकड़ में फसलों को नुकसान हुआ है। करीब 40 हजार किसान प्रभावित हुए हैं। सोमवार सुबह हथिनीकुंड बैराज से 29,313 क्यूसेक पानी छोड़ा गया, जिससे यमुना का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर है। दिल्ली सरकार ने बाढ़ का अलर्ट जारी किया है। पंजाब के 9 जिलों फाजिल्का, फिरोजपुर, कपूरथला, पठानकोट, तरनतारन, होशियारपुर, मोगा, गुरदासपुर और बरनाला में बाढ़ के हालात हैं। अब तक 1312 गांव बाढ़ से प्रभावित हो चुके हैं। भाखड़ा डैम में फ्लड गेट 4-4 फीट तक खोल दिए हैं। हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर में रविवार शाम को सड़क पर विशाल पेड़ गिर गया। वहां कई लोग और गाड़ियां खड़ी थीं। हालांकि, किसी को नुकसान नहीं पहुंचा। उत्तराखंड में सोनप्रयाग और गौरीकुंड के बीच मुनकटिया में लैंडस्लाइड हुई। इसके बाद वाहन फंसे हुए हैं। एसडीआरएफ टीम राहत कार्य में जुटी है।

42 दिन बाद उपराष्ट्रपति आवास से निकले धनखड़

नई दिल्ली। पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अब दक्षिणी दिल्ली के छतरपुर इलाके में स्थित अभय चौटाला के फॉर्महाउस में रहेंगे। सोमवार शाम 6 बजे उन्होंने इस्तीफे के 42 दिन बाद उपराष्ट्रपति आवास छोड़ा। इंडियन नेशनल लोकदल के प्रमुख अभय चौटाला ने बताया कि हमारे परिवार के घनखड़ जी से पुराने रिश्ते रहे हैं। हमने उनसे हमारे घर में रहने की अपील की, जो उन्होंने मान ली। धनखड़ ने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए मानसून सत्र के पहले दिन 21 जुलाई को पद से इस्तीफा दे दिया था। तब वे सार्वजनिक कहीं नजर नहीं आए। इस दौरान विपक्ष ने हाउस अरेस्ट जैसे कई आरोप लगाए। हालांकि सरकार ने इनसे इन्कार किया। धनखड़ अब तक संसद भवन के पास उपराष्ट्रपति एन्क्लेव में रह रहे थे। उनका कार्यकाल 10 अगस्त 2027 तक था। धनखड़ अभय चौटाला के फॉर्महाउस में तब तक रहेंगे, जब तक उन्हें टाइप-8 सरकारी बंगला आवंटित नहीं कर दिया जाता, जिसके वे पूर्व उपराष्ट्रपति होने के नाते हकदार हैं।

सकल GST राजस्व अगस्त में 6.5 % की वृद्धि के साथ 1,86,315 करोड़

नई दिल्ली। माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की सकल वसूली अगस्त 2025 में सालाना आधार पर 6.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1,86,315 करोड़ रुपये रही। पिछले साल अगस्त में सकल जीएसटी प्राप्ति 1,74,962 करोड़ रुपये थी। रिफंड के बाद जीएसटी से शुद्ध प्राप्ति अगस्त में 1,66,956 करोड़ रुपये रही जो पिछले साल के 1,50,791 करोड़ रुपये से 10.7 प्रतिशत अधिक है। वित्त मंत्रालय के जारी आंकड़ों के अनुसार, आलोच्य माह में घरेलू बाजार के सौदों से जीएसटी की सकल वसूली 9.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1,36,962 करोड़ रुपये रही। इसमें केंद्रीय जीएसटी का योगदान 34,076 करोड़ रुपये, राज्य जीएसटी का 42,854 करोड़ रुपये और आईजीएसटी का योगदान 48,639 करोड़ रुपये रहा।

MBBS, BDS में दाखिला संबंधी तेलंगाना के नियम पर सुप्रीम मुहर

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने नौवीं से 12वीं कक्षा तक तेलंगाना में पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को एमबीबीएस और बीडीएस में दाखिले से संबंधित राज्य सरकार के मूल निवास संबंधी आरक्षण का लाभ देने वाले राज्य सरकार के नियम को बरकरार रखा है। मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन की पीठ ने सोमवार को तेलंगाना सरकार की अपील स्वीकार कर ली। अदालत ने उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती देने वाली राज्य सरकार की याचिका पर यह फैसला सुनाया। शीर्ष अदालत ने संबंधित पक्षों की दलीलें सुनने के बाद पांच अगस्त को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। उच्च न्यायालय ने पिछले साल इस नियम को मनमाना करार दिया था। अदालत ने अपने आदेश में कहा था कि मूल निवास संबंधी नियम कुछ वर्षों के लिए राज्य से बाहर गए स्थायी निवासियों के बच्चों को दाखिले से वंचित कर देगा।

SCO ने की आतंकवाद के विरुद्ध कड़ी घोषणा

भारत की पहल पर एससीओ देशों ने की पहलगाम हमले की निंदा

तियांजिन / नई दिल्ली। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सदस्य देशों ने अप्रैल के पहलगाम आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की है और इस हमले में शामिल लोगों, इसकी साजिश करने वालों और इसका प्रायोजन करने वालों को कानून के हवाले किए जाने पर बल दिया है।

एससीओ की तियांजिन में आयोजित 25वीं शिखर बैठक में अनुमोदित प्रस्तावों में आतंकवाद को लेकर एक कड़ा प्रस्ताव पारित किया गया। एससीओ के सदस्यों ने आतंकवाद की, उसके हर रूप और हर तरीके की कड़ी निंदा की है। संगठन ने इस विषय में भारत की पहल को स्वीकार करते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से आतंकवाद का मुकाबला करने का आह्वान किया है, जिसमें सीमापार से आतंकवादियों की घुसपैठ के खिलाफ कार्रवाई का आह्वान भी शामिल है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सम्मेलन के पूर्ण अधिवेशन में कहा था कि आतंकवाद कहीं भी हो, किसी भी रूप में हो, उसका कड़ाई से मुकाबला -शेष पृष्ठ दो पर

पुतिन ने यूक्रेन संकट समाधान में भारत के प्रयासों को सराहा

तियांजिन। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन संकट में मध्यस्थता के लिए भारत और चीन के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा है कि उनकी पहल ने चल रही शांति वार्ताओं को और मूल्यवान बनाया है। श्री पुतिन ने यह बात कही।

आतंकवाद साझा चुनौती, इस पर दोहरा मापदंड मंजूर नहीं : मोदी

तियांजिन/नई दिल्ली। पीएम मोदी ने आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद को विकास की राह में बड़ी बाधा करार देते हुए कहा कि शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सभी सदस्य देशों को इस मुद्दे पर दोहरा मापदंड छोड़कर मानवता के खिलाफ इस साझा चुनौती का एकजुट होकर विरोध करने के अपने दायित्व को निभाना होगा। श्री मोदी ने सोमवार को यहां शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के राष्ट्र प्रमुखों के 25 वें शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए आतंकवाद के मुद्दे पर पूरी मजबूती के साथ भारत का पक्ष रखते हुए कहा कि सुरक्षा, शांति और स्थिरता किसी भी देश के विकास का आधार होते हैं लेकिन आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद इस राह में बड़ी चुनौतियां हैं।

एटम बम से बड़ा हाइड्रोजन बम ला रहे, मोदी जी मुंह नहीं दिखा सकेंगे: राहुल

पटना, वार्ता

राहुल गांधी ने कहा कि महाराष्ट्र में हमसे चुनाव चोरी किया गया था। तकरीबन एक करोड़ नए वोटर लोकसभा चुनाव के बाद जोड़े जाते हैं। जितना हमें लोकसभा में मिला, उतना विधानसभा में गया। नए सारे वोट भाजपा के खाते में चले गए। क्योंकि, चुनाव आयोग और भाजपा ने मिलकर वोट चोरी की।

हमने साफ दिखाया कि एक क्षेत्र में एक लाख से ज्यादा फर्जी वोटर थे। हमने डाटा के साथ दिखाया। चुनाव आयोग हमें वोटर लिस्ट नहीं देती। सीसीटीवी नहीं दिखाती। चार महीने, 16-17 घंटे काम कर हमने देश के सामने सबूत रखा। बिहार के युवाओं को मैं कहना चाहता हूं, वोट चोरी का मतलब अधिकार की चोरी, आरक्षण की चोरी, रोजगार की चोरी, शिक्षा की चोरी, लोकतंत्र की चोरी, युवाओं के भविष्य की चोरी। यह आपकी जमीन, आपका राशन कार्ड लेकर अडानी- अंबानी को दे देंगे। महात्मा गांधी की हत्या करने वाली शक्ति संविधान की हत्या करने की कोशिश कर रहे हैं। हम इन्हें संविधान की हत्या नहीं करने देंगे। हमने बिहार की यात्रा की। बिहार के सारे के सारे युवा खड़े हो गए।

अल्पसंख्यक स्कूलों को RTE छूट वाले फैसले पर SC संशय में

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को 2014 के प्रमति एजुकेशनल एंड कल्चरल ट्रस्ट मामले के उस फैसले पर गंभीर सवाल उठाए हैं, जिसमें कहा गया था कि अल्पसंख्यक स्कूलों को बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा देने वाले कानून (आरटीई एक्ट, 2009) से छूट है।

जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस आगस्टिन जॉर्ज मसीह की पीठ ने कहा कि उन्हें इस फैसले की सही होने पर संदेह है और उन्होंने यह मुद्दा मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई के पास भेज दिया है। आरटीई एक्ट के तहत छह से 14 वर्ष तक के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिया गया है। कानून में प्रावधान है कि निजी स्कूलों को 25 प्रतिशत सीटें कमजोर वर्गों और वंचित तबकों के बच्चों के लिए सुरक्षित रखनी होंगी। लेकिन 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने प्रमति केस में यह कहा था कि अल्पसंख्यक

- सीजेआई के पास भेजा मामला

स्कूलों को इस प्रावधान से छूट दी जाएगी। मौजूदा पीठ ने सवाल उठाया कि क्या यह छूट सही है और क्या इसे दोबारा विचार की जरूरत है। पीठ ने कहा कि अगर आरटीई एक्ट अल्पसंख्यकों के अधिकारों (अनुच्छेद 30) का उल्लंघन करता है, तो प्रमाटी फैसले में यह विचार करना चाहिए था कि धारा 12(1)(ब) को उस समुदाय के कमजोर तबके के बच्चों तक सीमित कर पढ़ा जा सकता था। अदालत ने कहा कि पूरी तरह छूट देना सही नहीं था।

इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल विवाद: सुनवाई से सुप्रीम कोर्ट का इन्कार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बिना इथेनॉल वाले पेट्रोल का विकल्प दिए 20 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल की बिक्री को उपभोक्ता अधिकारों के खिलाफ होने का दावा करने वाली जनहित याचिका पर सुनवाई करने से इन्कार कर दिया।

मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन की पीठ ने याचिकाकर्ता अक्षय मल्होत्रा की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता शादान फरासत की गुहार ठुकरा दी। पीठ के समक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता फरासत ने नीति आयोग की 2021 की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि उस रिपोर्ट में इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल मानकों का पालन न करने वाले पुराने वाहनों के प्रभाव के बारे में चिंता व्यक्त की गई है। अधिवक्ता मल्होत्रा की इस याचिका में दावा किया गया था कि यह उन लाखों वाहन मालिकों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है, जिनके वाहन इथेनॉल मिश्रण के अनुकूल नहीं हैं। अटॉर्नी जनरल आर. वेंकटरमणी ने याचिका का विरोध करते हुए कहा कि याचिकाकर्ता ने केवल प्रसिद्धि पाने के लिए इस मामले में शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाया है। उन्होंने यह भी दावा किया कि इस याचिका के पीछे एक बड़ा गुट काम रहा है।

सम्भल मस्जिद विवाद में यथास्थिति बढ़ी

शाह टाइम्स ब्यूरो

- सुप्रीम कोर्ट ने दो हफ्ते के लिए बढ़ाई समयसीमा

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को उत्तर प्रदेश के सम्भल मस्जिद विवाद में यथास्थिति बनाए रखने के अपने आदेश को दो हफ्ते के लिए बढ़ा दिया।

न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और जस्टिस आलोक राधे की पीठ ने कहा कि इस मामले में जामा मस्जिद सम्भल की प्रबंधन समिति की ओर से दो अपीलें दायर की गई थीं, जिनका प्रतिनिधित्व इसके सचिव (पहली याचिका) और उपाध्यक्ष (दूसरी याचिका) कर रहे थे। इसके बाद शीर्ष अदालत ने अपनी रजिस्ट्री को मामले की जांच करने और एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। मुकदमे में हिंदू पक्षकारों की ओर से पेश हुए अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन ने यथास्थिति बढ़ाने का विरोध किया। हालांकि, मस्जिद प्रबंधन का प्रतिनिधित्व कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता हुजेफा अहमदी ने रिपोर्ट प्रस्तुत होने तक अवधि बढ़ाने की मांग की। शीर्ष अदालत इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक आदेश के खिलाफ मस्जिद समिति की ओर से दायर अपील पर सुनवाई कर रही थी।

संक्षिप्त समाचार

परिषदीय स्कूलों के विलय मामले में अब सुनवाई 22 को

लखनऊ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने उत्तर प्रदेश के परिषदीय स्कूलों के विलय मामले में अगली सुनवाई की तारीख 22 सितंबर को नियत की है। न्यायमूर्ति राजन रॉय और न्यायमूर्ति मंजीव शुक्ल की खंडपीठ ने सोमवार को यह आदेश मामले में सुनवाई के लिए सूचीबद्ध विशेष अपीलों पर दिया हैं। बीती 24 जुलाई को उच्च न्यायालय ने विलय प्रक्रिया में उजागर हुई स्पष्ट अनियमित. ताओं के मद्देनजर सीतापुर के स्कूलों के विलय पर यथास्थिति बरकरार रखने का आदेश दिया था।

नन्ही मायरा बोली प्रवेश करा दीजिए डाक्टर बनना है

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जनता दर्शन कार्यक्रम में अपनी मां के साथ आई कानपुर की नन्हीं बच्ची ने कहा कि स्कूल में एडमिशन करा दीजिए, वह डाक्टर बनना चाहती है। योगी ने पास खड़े अधिकारियों से बच्ची के एडमिशन तुरंत कराने के निर्देश दिए। अपने सरकारी आवास में आयोजित जनता दर्शन कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने 50 से अधिक फरियादियों की समस्याएं जानी।

टीसीए कल्याणी ने महालेखा नियंत्रक का पदभार संभाला

नई दिल्ली। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी टीसीए कल्याणी ने सोमवार को वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग में महालेखा नियंत्रक (सीजीए) का पदभार संभाला। मंत्रालय ने एक विज्ञप्ति में यह जानकारी देते हुए कहा कि आईसीएएस की 1991 बैच की अधिकारी श्रीमती कल्याणी इस प्रतिष्ठित पद पर आसीन होने वाली 29वीं अधिकारी हैं।

उत्तर प्रदेश में आज भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में रुक रुककर बारिश हो रही है। मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिनों तक कई जिलों में भारी बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार उत्तर प्रदेश में सितंबर में सामान्य से अधिक बारिश होगी।

मौसम विभाग ने 15 जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। 2 सितंबर तक भारी बारिश की आशंका है। लखनऊ सहित कई जिलों में सामान्य से अधिक बारिश होने की संभावना है इसलिए सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। वरिष्ठ मौसम विज्ञानी अतुल कुमार सिंह ने बताया कि पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से मानसूनी रेखा उत्तर की ओर खिसकी है। इस कारण दो सितंबर तक कहीं भारी तो कहीं अत्यधिक भारी बारिश होगी।

मुजफ्फरनगर समेत 15 जिलों में ऑरेंज अलर्ट

लखीमपुर खीरी, सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, बागपत, मेरठ, बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, संभल, बदायूं व आसपास के इलाकों में भारी बारिश की संभावना है। चित्रकूट, कौशांबी, प्रयागराज, फतेहपुर, प्रतापगढ़, सोनभद्र, मीरजापुर, भदोही, बहराइच, सीतापुर, हरदोई, फर्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, उन्नाव, लखनऊ, बारा. बंकी, रायबरेली, अमेठी, गाजियाबाद, हापुड़, गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, अलीगढ़, हाथरस, कासगंज, एटा, मैनपुरी व आसपास के इलाकों में भी अधिक बारिश के आसार हैं।

जेलों में गंभीर बीमार बंदियों की समयपूर्व रिहाई के नियम सरल किए जाएं: सीएम योगी

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गंभीर बीमारियों से ग्रसित बंदियों की समयपूर्व रिहाई से संबंधित नियमों को और अधिक सरल, स्पष्ट तथा मानवीय दृष्टिकोण से परिभाषित किए जाने की आवश्यकता जताई।

सोमवार को कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवाओं की समीक्षा बैठक में उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय के निर्देशों का अनुपालन करते हुए प्रदेश की नीति को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि पात्र बंदियों की रिहाई स्वत: विचाराधीन होनी चाहिए और इसके लिए उन्हें अलग से आवेदन न करना पड़े। उन्होंने निर्देश दिए कि प्राणघातक रोग से पीड़ित होने की आशंका वाले सिद्धदोष बंदी, जिसे मुक्त करने पर उसके स्वस्थ होने की उपयुक्त संभावना है तथा वृद्धावस्था, अशक्तता या बीमारी के कारण भविष्य में ऐसा अपराध करने में स्थाई रूप से असमर्थ बंदी, जिसके लिए वह दोषी ठहराया गया हो

कारागार प्रशासन व सुधार सेवाओं की समीक्षा बैठक में बोले सीएम

के साथ-साथ घातक बीमारी या किसी प्रकार की अशक्तता से पीड़ित सिद्धदोष बंदी जिसकी मृत्यु निकट भविष्य में होने की संभावना हो, के संबंध में प्रदेश के सभी कारागारों में सर्वेक्षण कर वास्तविक संख्या का आकलन किया जाए।

इनमें महिलाओं, बुजुर्गों को प्राथमिकता के आधार पर रिहा करने की व्यवस्था हो। मुख्यमंत्री ने कैदियों को कृषि, गोसेवा आदि कार्यों से जोध्कर उनकी जेल अवधि के सदुपयोग करने के लिए व्यवस्था बनाने की भी आवश्यकता बताई।

पारदर्शिता बढ़ाने को शीघ्र लागू होगा नया सोसाइटी पंजीकरण एक्ट: योगी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के स्थान पर उत्तर प्रदेश में नया कानून लागू किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया है। उन्होंने कहा कि सोसाइटी के रूप में पंजीकृत संस्थाओं के पंजीकरण, नवीनीकरण तथा उनकी संपत्तियों के पारदर्शी प्रबंधन को सुदृढ़ करने के लिए युगानुकूल और व्यावहारिक प्रावधान किए जाने चाहिए। वर्तमान अधि. नियम में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने, निष्क्रिय अथवा संदिग्ध संस्थाओं के निरस्तीकरण/ विघटन और संपत्ति के सुरक्षित प्रबंधन, तथा सदस्यता, प्रबंधन और चुनाव संबंधी विवादों के समयबद्ध निस्तारण के स्पष्ट प्रावधानों का अभाव है। इसी प्रकार, वित्तीय अनुशासन के लिए ऑडिट, निधियों के दुरुपयोग पर नियंत्रण और संपत्ति प्रबंधन से संबंधित नियम भी पर्याप्त नहीं हैं।

चीन को भारत की तरह आतंकवाद से पीड़ित देश बताना गलत : कांग्रेस

पीएम का बयान चीन के सामने झुकने वाला

नई दिल्ली, वार्ता

कांग्रेस ने कहा है कि चीन ने हमेशा पाक के आतंकवादियों का समर्थन किया है और इसे देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का चीन को भारत की तरह आतंकवाद से पीड़ित देश बताने वाला बयान अनुचित है।

कांग्रेस ने कहा कि मोदी ने रविवार को तियानजिन में राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ मुलाकात में चीन को भारत की तरह आतंकवाद से पीड़ित देश बताया है, यह एक तरह से चीन के सामने झुकने वाला बयान है। पार्टी के संचार विभाग के प्रभारी जयराम रमेश ने सोमवार को यहां एक बयान में कहा कि भारत लंबे समय से चीन पर आतंकवाद के मुद्दे पर 'दोहरे मानदंड' और 'दो.

भारत लंबे समय से चीन पर आतंक के मुद्दे पर 'दोहरे मानदंड' और 'दोहरी भाषा' बोलने का आरोप लगाता रहा

हरी भाषा' बोलने का आरोप लगाता रहा है, लेकिन अब प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति शी जिनपिंग से कहा है कि भारत और चीन, दोनों आतंकवाद के शिकार हैं। उन्होंने इसे चीन के सामने झुकने वाला बयान बताया और कहा कि अगर यह तथाकथित हाथी का तथाकथित ड्रैगन के आगे झुकना नहीं है, तो फिर क्या है।

इससे भी ज्यादा राष्ट्र-विरा. `धी बात यह है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन और पाकिस्तान की जुगलबंदी के बारे में प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ बातचीत में एक शब्द तक नहीं कहा। कांग्रेस नेता ने प्रधानमंत्री पर हमला करते हुए कहा कि स्वघोषित 56 इंच सीने वाले नेता अब पूरी तरह से बेनकाब हो चुके हैं। उन्होंने 19 जून, 2020 को चीन को क्लीन चिट देकर राष्ट्रहित के साथ विश्वासघात किया। अब, 31 अगस्त, 2025 भी तियानजिन में उनके बयान को बदनामी के दिन के रूप में याद किया जाएगा।

जीडीपी के आंकड़े मजबूत होने के बावजूद अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि चालू वित्त वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद-जीडीपी की दर का आंकड़ा भले ही मजबूत हो, लेकिन विनिर्माण सहित कई क्षेत्रों में वृद्धि घट रही है जिससे साफ है कि मजबूत जीडीपी के बावजूद आर्थिक विकास की रफ्तार धीमी है। कांग्रेस संचार विभाग के प्रभारी जयराम रमेश ने सोमवार को जीडीपी के आंकड़ों पर कहा कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में जीडीपी आंकड़ों को लेकर उत्साह अतार्किक है। जीडीपी के अप्रैल-जून के आंकड़ों में कुछ स्पष्ट विरोधाभास भी हैं, जिन पर एक जाने माने बैंक की रिपोर्ट ने सवाल उठाए हैं । उन्होंने अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण शहरी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि शहरी खपत अब भी काफी कमजोर बनी हुई है, जबकि ग्रामीण खपत संरचनात्मक बाधाओं से जूझ रही है। जीडीपी की मामूली वृद्धि दर अब भी धीमी है और जनवरी-मार्च 2025 की तुलना में स्पष्ट रूप से कम है। लाभ वृद्धि के विपरीत, विनिर्माण क्षेत्र में बिक्री की वृद्धि लगातार धीमी हो रही है। सामान्यत: उपभोग, निवेश और व्यापार जीडीपी वृद्धि के मुख्य निर्धारक हैं लेकिन आश्चर्यजनक रूप से, तिमाही वृद्धि दर का पूरा 1.8 प्रतिशत अंक इन तीनों निर्धारकों से नहीं समझाया जा सकता।

अखिलेश ने ईसी को बताया जुगाड़ आयोग

लखनऊ, वार्ता

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने चुनाव आयोग को 'जुगाड़ आयोग' कहकर निशाना साधा और 17,986 हलफनामों पर कार्रवाई न होने पर सवाल उठाए। यादव ने आरोप लगाया कि एआई से बड़े घोटाले पकड़ने वाला आयोग, सपा के हल्कनामों को अनदेखा कर रहा है।

अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि पार्टी की तरफ से पेश किए गए 17,986 हलफनामे पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है। अखिलेश यादव ने यह भी कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के इस्तेमाल से 1.25 करोड़ रुपये से अधिक के घोटाले का पता लगाने में सक्षम चुनाव आयोग, सपा के हलफनामे पर ध्यान नहीं दे रहा है। यादव ने सोमवार को चुनाव

18 हजार हलफनामों में सिर्फ 14 का मिला जवाब

आयोग को जुगाड़ आयोग करार दिया और सवाल किया कि उसने उनकी पार्टी की तरफ से जमा किए गए 17,986 हलफनामों का जवाब क्यों नहीं दिया? उन्होंने एक वीडियो भी शेयर किया, जिसमें दावा किया गया था कि पंचायत चुनावों के सिलसिले में 1.25 करोड़ से ज्यादा मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए हैं और गांवों में नकली मतदाताओं की पहचान के लिए एआई का इस्तेमाल किया जा रहा है।

सेंसेक्स 8036449
निफ्टी 24625.05

सोना रु. 104493
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 122800
प्रति किलो

सेंसेक्स और निफ्टी बढ़त के साथ बंद

मुंबई, वार्ता

चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद में उम्मीद से ज्यादा वृद्धि के बाद सोमवार को घरेलू शेयर बाजारों में निवेशकों में उत्साह रहा और बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक करीब 555 अंक की बढ़त से साथ बंद हुआ।

बाजार में सुबह से ही तेजी रही। सेंसेक्स 19.34 अंक की मजबूती के साथ 79,828.99 अंक पर खुला और अंत में 554.84 अंक (0.70 प्रतिशत) ऊपर 80,364.49 अंक पर बंद हुआ। इसका दिन का निचला स्तर 79,818. 38 अंक और उच्चतम स्तर 80,406. 84 अंक रहा। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी.50 सूचकांक भी 5.85 अंक ऊपर 24,4342.70 अंक पर खुला और पूरे दिन हरे निशान में रहने के बाद 198.20 अंक यानी 0.81 प्रतिशत चढ़कर 24,625.05 अंक पर पहुंच गया। पहली

तिमाही के जीडीपी के आंकड़े में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान जारी किया गया है। इससे बाजार में निवेशकों का विश्वास बढ़ा है। फार्मा को छोड़कर अन्य सभी सेक्टरों की कंपनियों में लिवाली का जोर रहा।

बिक्री के मजबूत आंकड़े आने से ऑटो क्षेत्र की कंपनियों में जमकर लिवाली हुई। एनएसई में महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर 3.52 प्रतिशत, बजाज ऑटो से 4.01 प्रतिशत, हीरो मोटोकॉर्प के 3.18, टाटा मोटर्स से 3.09, हीरो मोटोकॉर्प के 3.18 प्रतिशत चढ़े। इसके अलावा, आईटी, रियलिटी, बैंकिंग, धातु, टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद और तेल एवं गैस क्षेत्र में निवेशकों ने खूब पैसा लगाया। एनएसई में 3,156 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें 2,133 के शेयरों में तेजी और 935 में गिरावट रही। वहीं 88 कंपनियों के शेयरों के भाव अपरिवर्तित रहे। सेंसेक्स की 30 से 23 कंपनियों से शेयर हरे निशान में रहे। महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर 3.65 प्रतिशत चढ़े। टाटा मोटर्स में 3.17 फीसदी, ट्रेंट में 2.71, इटरनल में 2.23, एशियन पेंट्स में 2.13 और इंफोसिस में 2.04 फीसदी की तेजी देखी गई। टेक महिंद्रा का शेयर 1.71 प्रतिशत, अडानी पोर्ट्स का 1.68, पावर ग्रिड का 1.63 और एक्सिस बैंक का 1.52 प्रतिशत की बढ़त में बंद हुआ। बजाज फिनसर्व, बजाज फाइनेंस, बीईएल, अल्ट्राटेक, टाटा स्टील और एनटीपीसी के शेयर भी एक प्रतिशत से अधिक चढ़े। सनफार्मा में सबसे अधिक 1.87 प्रतिशत की गिरावट रही। आईटीसी का शेयर भी 0.99 प्रतिशत टूटा। हिंदुस्तान यूनीलिवर, टाइटन, रिलायंस इंडस्ट्रीज और एचडीएफसी बैंक के शेयर भी लाल निशान में बंद हुए।

सोना 1.04 लाख के ऑलटाइम हाई पर

नई दिल्ली। सोने-चांदी के दाम सोमवार को अपने ऑलटाइम हाई पर पहुंच गए हैं। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार आज सोना 2,105 रुपए बढ़कर 1,04,493 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया है। इससे पहले सोना 1,02,388 रुपए पर था। चांदी की कीमत भी 5,228 रुपए बढ़कर 1,22,800 रुपए प्रति किलो हो गई है। देश के महानगरों दिल्ली में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,06,030 और 22 कैरेट सोने की कीमत 97,200 रही, जबकि मुंबई में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,05,8800 और 22 कैरेट सोने की कीमत 97,050 थी। कोलकाता में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,05,880 और 22 कैरेट सोने की कीमत 97,050 रही, वहीं चेन्नई में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,05,880 और 22 कैरेट सोने की कीमत 97,050 रही, जबकि भोपाल में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,05,910 और 22 कैरेट सोने की कीमत 97,100 रही। सोना केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया कहते हैं कि अमे. रिका के टैरिफ के चलते जियो पॉलिटिकल टेंशन बनी हुई है। इससे गोल्ड को सपोर्ट मिल रहा है और इसकी डिमांड भी बढ़ रही है।

चावल-चीनी महंगी, गेहूं नरम, खाद्य तेलों में घटबढ़

नई दिल्ली। घरेलू थोक जिंस बाजारों में सोमवार को चावल की कीमत में उछाल देखा गया, जबकि गेहूं में नरमी रही। दालों के दाम बढ़ गए। चीनी भी मजबूत हुई, जबकि खाद्य तेलों में घट.बढ़ रही।

घरेलू थोक जिंस बाजारों में चावल की औसत कीमत 118 रुपए बढ़कर 3,848.88 रुपए प्रति क्विंटल पर पहुंच गई। गेहूं तीन रुपए फिसलकर 2,849.43 रुपए प्रति क्विंटल के भाव बिका। आटा भी छह रुपए सस्ता हुआ और 3,300.30 रुपए प्रति क्विंटल बोला गया। सरसों तेल औसतन 101 रुपए प्रति क्विंटल टूट गया। पाम ऑयल में 40 रुपए और सोया तेल में 68 रुपए प्रति क्विंटल की गिरावट रही। सूरजमुखी तेल की कीमत करीब 41 रुपए और मूंगफली तेल की 20 रुपए बढ़ गई। वनस्पति 83 रुपए प्रति क्विंटल महंगा हुआ। दाल-दलहनों में तेजी का रुख रहा। तुअर दाल की औसत कीमत 208 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ गई। चना दाल 134 रुपए और मूंग दाल 100 रुपए प्रति क्विंटल महंगी हुई। मसूर दाल की कीमत में 146 रुपए और उड़द दाल में 40 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़त दर्ज की गई। गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में गुड़ की औसत कीमत करीब 75 रुपए प्रति क्विंटल चढ़ी। चीनी भी करीब 22 रुपए महंगी हुई। सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के दिन के औसत थोक भाव इस प्रकार रहे : दाल-दलहन : दाल चना 7980.86 रुपए, मसूर काली 8153.63 रुपए, मूंग दाल 10105.84 रुपए, उड़द दाल 10446.71 रुपए, अरहर दाल 10759.71 रुपए प्रति क्विंटल। अनाज : (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 2849.43 रुपए और चावल 3848.88 रुपए प्रति क्विंटल। चीनी-गुड़ : चीनी एस 4307.56 रुपए और गुड़ 4965.90 रुपए प्रति क्विंटल बोले गए। खाद्य तेल : सरसों तेल 17822.06 रुपए, मूंगफली तेल 17788.83 रुपए, सूरजमुखी तेल 15410.63 रुपए, सोया रिफाइंड 13815.05 रुपए, पाम ऑयल 12356.08 रुपए और वनस्पति 14506.34 रुपए प्रति क्विंटल के स्तर पर रहा।

अपने बयानों से विपक्ष के नेता पद की गरिमा गिरा रहे: भाजपा

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता रवि शंकर प्रसाद ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा को विफल बताते हुए कहा है कि वह अपने बयानों से लोकसभा में विपक्ष के नेता के पद की गरिमा गिरा रहे हैं।

प्रसाद ने सोमवार को पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में श्री गांधी के एटम बम और हाइड्रोजन बम वाले बयान पर कहा कि कर्नाटक में मतदाता सूची का उनका एटम बम फुस्स हो गया, तो वह अब जनता को भ्रमित करने के लिए हाइड्रोजन बम फोड़ने की बात कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी अपने बयान से अपने वजूद को क्यों हल्का बना रहे हैं, आप लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं। कम से कम इसकी गरिमा का ख्याल रखिए। प्रसाद ने कहा कि सभी लोगों को पता है कि पहले जब बिहार में चुनाव होते थे, तब कितनी बूथ कैप्चरिंग होती थी, बूथ तक लूट लिया जाता था। लेकिन अब ईवीएम के चलते बूथ कैप्चरिंग खत्म हो गई है।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

एससीओ ने की...

किया जाना चाहिए। एससीओ के देशों ने पहलगाम हमले में मारे गए और घायल लोगों के परिजनों के प्रति गहन संवेदना और शोक व्यक्त किया है। एससीओ की तियानजिन घोषणा में कहा गया है कि संगठन के सदस्य देश पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 के आतंकवादी हमले की कठोर भर्त्सना करते हैं। इसमें आगे कहा गया है कि ऐसे हमले करने वालों, इसकी साजिश रचने वालों और इसके प्रायोजकों को निश्चित रूप से कानून के हवाले किया जाना चाहिए। एससीओ के सदस्य देशों ने आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए अपनी ठोस प्रतिबद्धता को दोहराया है। घोषणा पत्र में स्वीकार किया गया है कि आतंकवादियों, पृथकतावादियों और अतिवादियों के गिरोहों को भाड़े के टट्टू की तरह इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। एससीओ ने कहा है कि आतंकवादी और अतिवादी तत्वों के खतरों के विरुद्ध कार्रवाई करने में देशों की सरकारों और उनकी एजेंसियों की अग्रणी भूमिका को मान्यता दी है। संयुक्त घोषणा पत्र में आतंकवाद पर सबका साथ आना और उसकी निंदा करना भारत के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसकी वजह यह है कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने दो महीने पहले एससीओ के संयुक्त बयान पर हस्ताक्षर नहीं किए थे। इस बयान में पहलगाम आतंकी हमले का जिक्र नहीं होने के कारण उन्होंने इस पर दस्तखत करने से इंकार कर दिया था, लेकिन अब इस संगठन ने भारत के रुख को स्वीकार कर लिया है। यह आतंकवाद के मुद्दे पर भारत की बड़ी जीत है। पाकिस्तान और चीन के रहते आतंकवाद को संयुक्त घोषणा पत्र में जिक्र होना और सभी देशों का साथ आना भारत की कूटनीतिक जीत को दिखाता है।

शाह टाइम्स क्लासीफाईड्स Sale

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना
खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काजीजादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

काम कोर्स
उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज पावर, शीघ्रपतन, नपुसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

Cipzer
HEALTH WITH CARE
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहजमी जॉन्डिस, फैटी लीवर, एल्कोहलिक लिवर डिजीज आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहें फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

वैधानिक सूचना
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर कार्यवाही करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल कर लें तथा उचित सलाह ले लें। कोई भी अभिदाता जो इस अखबार में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संदर्भ में कोई राशि भेजता है, किसी चिकित्सीय सलाह पर कोई कार्यवाही या खर्च करता है या कोई वचन देता है, तो ऐसा वह स्वविवेक, बुद्धि तथा जोखिम पर करेंगे। कम्पनी, प्रकाशक या उसका कोई कर्मचारी विज्ञापनदाता या उसके किसी उत्पाद या सेवा हेतु किये गये किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन नहीं देते तथा ऐसे विज्ञापनों विश्वास करके किसी व्यक्ति को हुई क्षति, हानि परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

बारिश के चलते मिमलाना रोड़ पर भरभराकर गिरी दीवार

बाल-बाल बचा परिवार, सामान दबने से लाखों का नुकसान

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। सोमवार की अल सवेरा से शुरू हुई वर्षा के चलते चारो ओर जहां जल मग्न है तो वहीं कुछ लोगों के कच्चे मकान की दीवार गिरने की भी जानकारी मिल रही है। एक ऐसा ही मामला नगर कोतवाली क्षेत्र के मिमलाना रोड का है। जहां लगातार हो रही वर्षा से एक मकान की दीवार अचानक ही गिर गई जोरदार आवाज के चलते क्षेत्रवासी अपने-अपने घर से निकल पडे। इस दौरान गनीमत यह है रही कि परिवार का कोई भी सदस्य दीवार के पास नहीं था। दीवार गिरने से यहां रखा सामान पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया।

नगर कोतवाली क्षेत्र के मिमलाना रोड निवासी शाहिना अपने तीन मासूम बच्चे व ससुर के साथ एक कच्चे मकान में रहती है बताया जाता है कि महिला का पति काफी समय से मजदूरी करने कही बाहर गया हुआ है। सोमवार की सवेरे जहां अचानक ही एक जोरदार धमाका हुआ इस समय वर्षा हो रही थी और चारो ओर पानी भरा हुआ था। बता दे कि सोमवार की सवेरे से ही चारो ओर वर्षा के चलते जलमग्न हुआ है और यहां भी चारो ओर पानी भरा हुआ है। घटना सोमवार की सवेरे करीब साढ़े नौ बजे की है दीवार गिरने से मची अफरा -तफरी और लोग अपने-अपने घरो से निकल पड़े। गनीमत यह है रही कि महिला व उसके बच्चें दीवार से अलग थे, लेकिन इस दीवार गिरने से घर में रखा सभी सामान पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। महिला का कहना है कि जिस समय हादसा हुआ वह अलग बेटी हुई थी। यहां पहुंचे मौहल्लेवासियों ने दीवार का मलबा हटाया और नीचे दबा सामान भी अलग किया। बता दे कि सोमवार की सवेरे से ही हो रही बारिश के चलते कई-कई फिट पानी भरा हुआ था। वर्षा के चलते हालात ऐसे हो गई थी कि लोग अपने-अपने घरो में कैद होने पर मजबूर हो गए थे। नगर के कई मौहल्ले की तो हालत बद से बदत्तर हो गई थी।

दिनभर हुई बारिश से जनजीवन रहा अस्त-व्यस्त

तापमान में आई गिरावट, बारिश से 25 डिग्री पर लुढ़का तापमान

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। सोमवार की सुबह शुरू हुई बारिश देर शाम तक रुक रुककर जारी रही, जिससे उमस भरी गर्मी से तो राहत मिली लेकिन जल भराव होने से लोगों को परेशानी का सामना भी करना पड़ा। जगह-जगह जलभराव होने से लोगों को मुश्किलें उठानी पड़ी। निचली बस्तियों में तो हालात बद से बदतर नजर आए। दरअसल भाद्रपद माह में गर्मी का हाल बेहाल रहता है। इन दिनों बारिश भी होती रहती है, परंतु उमस व गर्मी के कारण लोगों की परेशानी कम होने का नाम नहीं लेती। सोमवार को सुबह शुरू हुई बारिश से गर्मी की मार झेल रहे लोगों को निजात मिली। सुबह से ही आसमान में बादल बने हुए थे। दोपहर के समय तक मूसलाधार बारिश हुई, जिससे मौसम में ठंडक बन गयी और गर्मी की मार झेल रहे लोगों को काफी राहत मिली है। बारिश में अपने काम के लिए निकले लोग छाता लेकर जाते दिखे। वहीं वाहनों पर भी छाता व रेनकोट आदि द्वारा बारिश से अपने को बचाते हुए गुजरे।

आज भी बंद रहेंगे जिले के स्कूल

मुजफ्फरनगर। मौसम विभाग के बारिश के अलर्ट के मद्देनजर जिलाधिकारी उमेश मिश्रा ने जिले के स्कूलों में अवकाश की घोषणा की है। डीएम के निर्देश पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संदीप कुमार ने बताया कि सभी स्कूलों में कक्षा आठ तक की कक्षाएं निरस्त रहेगी। उन्होने कहा कि जिले में सभी विद्यालयों को सोमवार में भी बंद रखने के निर्देश दिए गए थे उन्होने बताया था कि मंगलवार को भी डीएम के निर्देश पर जिले में कक्षा एक से आठ तक के बच्चों के लिए अवकाश की घोषणा की गई है।

सुबह सवेरे अचानक मौसम के करवट लेने और मौसम विभाग की पूर्वानुमान घोषणा के बाद शुरू हुई बारिश ने जनजीवन अस्त व्यस्त कर दिया। शुरू हुई बारिश के बाद शहर में चारों ओर जल भराव की स्थिति बन गई।

जिलाधिकारी उमेश मिश्रा के निर्देश पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने कक्षा एक से आठवीं तक के लिए स्कूलों में अवकाश की घोषणा की गई है।

मुजफ्फरनगर: दिनभर हुई बारिश में कलेक्ट्रेट परिसर का निरीक्षण करने निकले डीएम।

निरीक्षण में डीएम को छत से टपकता मिला पानी

कलेक्ट्रेट की पुरानी बिल्डिंग को कराया खाली

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर में पिछले एक सप्ताह से जारी बारिश के बीच सोमवार को जिला. धिकारी उमेश मिश्रा ने कलेक्ट्रेट परिसर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्ट्रेट की 200 वर्ष पुरानी इमारतों की छत से पानी टपकता पाया गया।

सोमवार को सुबह सवेरे हुई बारिश के मद्देनजर जिलाधिकारी ने सुरक्षा को देखते हुए जर्जर भवनों को तत्काल खाली करवाने के निर्देश दिए। इन कार्यालयों को अन्य स्थानों पर अस्थाई रूप से स्थानांतरित किया गया है। लगातार हो रही बारिश से शहर की स्थिति प्रभावित हुई है। डीएम ने कलेक्ट्रेट परिसर की जर्जर बिल्डिंग को खाली कराने के भी निर्देश दिए। सड़कों पर जलभराव के कारण वाहनों को कई फीट पानी से होकर गुजरना पड़ रहा है। गली-मोहल्लों में पानी भर गया है। कुछ स्थानों पर पेड़ गिरने की घटनाएं भी सामने आई हैं। मौसम की स्थिति के कारण नागरिकों को या तो घरों में रहना पड़ रहा है या फिर बाहर निकलने पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

मुजफ्फरनगर: बारिश से टापू में तब्दील रहीं शहर व मौहल्लों की सड़कें।

वैष्णो देवी भूस्खलन में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि देने उमड़ा जन सैलाब

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। जम्मू कश्मीर में अर्द्धकुमारी के निकट भूस्खलन में कई लोगों की जाने चली गई थी इसमें जनपद मुजफ्फरनगर के दक्षिणी रामपुरी के भी करीब दो दर्जन लोग जिनमें महिलाए व बच्चे भी शामिल थे वैष्णो देवी माता देवी के दर्शन के लिए गए थे जिसमें घर के इकलौते चिराग, मां बेटी व दो मासूम बच्चे सहित करीब छह लोगों की मौत हो गई थी। अंतिम संस्कार के बाद सोमवार को रामपुरी में एक शोक सभा का आयोजन किया गया इस दौरान मृतक के परिजनों के साथ नगर वासियों की आंखे नम थी। शोक सभा का आयोजन किया गया लेकिन आज सुबह से मुसलाधार बारिश होती रही लेकिन नगरवासियों ने पीड़ित परिवार के साथ शोक सभा में शामिल होकर रामपुरी के मंदिर में शोकसभा का आयोजन किया।

इस समय मृतक के परिजन अपने-अपने को याद करके रोते बिलखते रहे जहां अपने-अपने को नाम पुकार कर रोते पुकारते लोगों को देखकर शोक सभा में शामिल हुए लोगों की आंखे भीनम हो गई। शोक सभा में पहुंचे नेतागणों ने भी दर्द को साझा किया और सभी के परिजनों को सांत्वना दी। बता दे कि 25 अगस्त को दक्षिणी रामपुरी के निकट से प्रजापति समाज के करीब दो दर्जन लोग जिनमें महिलाएं भी शामिल थी माता वैष्णा देवी के दर्शन करने के लिए जम्मू गए थे और 26 अगस्त को कटरा के अर्द्धकुमारी के क्षेत्र में भूस्खलन में दक्षिणी कृष्णापुरी के सगे दो भाई दिपेश व अनन्त पुत्रगण अजय कुमार, रामबीरी पत्नी इन्द्रपाल, अंजली पुत्री इन्द्रपाल, ममतेश उर्फ ममता पत्नी रविन्द्र और आकांक्षा पुत्र रविन्द्र की मौत हो गई थी। बता दे कि इससे पहले घर के इकलौते चिराग कार्तिक पुत्र मिन्टु की मौत की खबर नगर में शोक लेकर आई थी।

सोमवार को आयोजित मंदिर परिसर में शोक सभा में सामाजिक, राजनैतिक व गणमान्य लोगों ने शामिल होकर पीड़ित परिवार का दर्द साझा किया। इस दौरान नगर पालिका परिषद की अध्यक्ष मीनाक्षी स्वरूप, भाजपा नेता गौरव स्वरूप, लोकदल नेता योगराज सिंह, पूर्व विधायक संगीत सोम भी शामिल हुए इस शोक सभा में पूर्व सांसद सोहनवीर सिंह, पूर्व सांसद अशोक कंसल, बसपा नेता धारा सिंह प्रजापति ने भी शोकसभा में शामिल होकर पीड़ित परिवार को सांत्वना दी।

इस शोक सभा में सपा राष्ट्रीय सचिव राकेश शर्मा, भाजपा नेता विकल्प जैन, बिजेन्द्र पाल, नन्द किशोर पाल, श्रीमोहन तायल, सत्यवीर प्रजापति, रजत धीमान सहित सैकण्डो लोग शामिल हुए और सभी मृतकों के चित्र पर पुष्पाजंलि अर्पित करते हुए परिजनों के समक्ष गहरा शोक व्यक्त किया। यहां पहुंचे समाजसेवियों ने पीड़ित परिवार को सांत्वना देते हुए मदद का भी आश्वा. सन दिया। इस दौरान यहा इकट्ठा हुए लोगों ने ऐसी दुखद घटना न घटे, ऐसी घटना से निपटने के लिए उपाय करने की मांग की। शोक सभा में शामिल हुए बसपा नेता दारा सिंह प्रजापति ने पीड़ित परिवारों को पांच लाख रूपये, पूर्व विधायक संगीत सोम ने एक लाख रूपये, और भाजपा नेता गौरव स्वरूप ने 75 हजार तथा मंत्री कपिल देव और जिला पंचायत अध्यक्ष डॉक्टर वीरपाल निर्वाल ने 50-50 हजार रूपयें देने की घोषणा की।

भाजपा नेता गौरव स्वरूप ने कहा कि जिस परिवार का बच्चा पढ़ाई करना चाहता है तो वह उसका पूरा खर्च उठाएगे। उन्होने घायलों के इलाज के लिए भी कहा है।

मुजफ्फरनगर: अग्निवीर सैन्य भर्ती के लिए जांच प्रक्रिया से गुजरता अभ्यर्थी।

अग्निवीर बनने को दौड़े जनपद के युवा

मुजफ्फरनगर। नुमाईश ग्राउंड में चल रही अग्निवीर सैन्य भर्ती के दौरान सोमवार को जनपद मुजफ्फरनगर के युवाओं ने उत्साह दिखाते हुए दौड़ व अन्य भर्ती प्रक्रिया में हिस्सा लिया। इस दौरान 945 युवाओं ने अग्निवीर बनने के लिए अपना भाग्य आजमाते हुए भर्ती प्रक्रिया पूर्ण की। अग्निवीर जनरल ड्यूटी के लिए युवाओं ने भर्ती प्रक्रिया में हिस्सा लिया। भर्ती प्रक्रिया में मेरठ रैंज के सैन्य अधिकारियों ने यहां पहुंचकर चल रही भर्ती प्रक्रिया की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और भर्ती में किसी भी प्रकार की लापरवाही व कोताही न बरतने के भी निर्देश देते हुए अभ्यर्थियों को दलालों से भी सावधान रहने की नसीहत दी।

मुजफ्फरनगर: पुलिस लाइन क्वार्टरों का निरीक्षण करने पहुंचे एसएसपी।

पेड़ गिरने से ठप्प रही विद्युत आपूर्ति

मुजफ्फरनगर। दिनभर हुई बारिश से सरकुलर रोड पर पुराना पेड़ गिरने से विद्युत लाइने क्षतिग्रस्त हो गई जिसके चलते कई क्षेत्रों की विद्युत आपूर्ति देर शाम तक बाधित रही।

सोमवार को अचानक मौसम ने करवंट ली और सवेरे से शुरू हुई बारिश रूक-रूक कर देर शाम तक जारी रही जिसके चलते बारिश का असर विद्युत आपूर्ति पर भी पड़ा। बधाई कलां व नरा बिजलीघर से आपूर्ति होने वाली विद्युत सप्लाई देर शाम तक भी बहाल नहीं हो सकी जिसके चलते कई क्षेत्र अंधेरे में डूबे रहे, हालांकि विद्युत विभाग के अधिकारी व कर्मचारी देर रात तक लाईनों को दुरूस्त करने में लगे रहे।

नो हेलमेट नो फ्यूल:15 वाहनों के चालान

एआरटीओ प्रवर्तन सुशील मिश्रा ने किया पेट्रोल पंप का निरीक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। सड़क सुरक्षा को लेकर जिले में चलाए जा रहे नो हेलमेट नो फ्यूलअभियान के तहत सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी प्रवर्तन सुशील कुमार मिश्रा ने जिले के विभिन्न पेट्रोल पंपों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान बिना हेलमेट वाहन चलाने वालों पर कड़ी कार्रवाई की गई। इस दौरान 15 ऐसे वाहन चालक पाए गए, जो पेट्रोल भरवाने के लिए आए थे लेकिन हेलमेट नहीं पहने थे। इन सभी पर चालान किया गया।

इस अभियान का उद्देश्य वाहन चालकों को हेलमेट पहनने के लिए प्रेरित करना है, ताकि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके। जिला प्रशासन और परिवहन विभाग ने इसे लेकर सख्त रुख अपनाया है। अभियान पूरे सितंबर माह तक लगातार जारी रहेगा। सड़क दुर्घटनाएं भारत में बढ़ती जा रही हैं और हेलमेट न पहनने के कारण होने वाली मौतें भी चिंताजनक स्तर पर हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रशासन ने यह विशेष अभियान शुरू किया है, जिसमें पेट्रोल पंपों पर भी कड़ी निगरानी रखी जा रही है। ऐसा इसलिए क्योंकि कई वाहन चालक पेट्रोल भरवाने के दौरान हेलमेट उतार देते हैं, जिससे उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है।

सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी प्रवर्तन मिश्रा ने बताया कि सड़क सुरक्षा को लेकर जन जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ नियमों का सख्ती से पालन भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि हेलमेट पहनना सिर्फ एक नियम नहीं, बल्कि जीवन रक्षा का एक महत्वपूर्ण तरीका है। बिना हेलमेट वाहन चलाना न केवल कानून का उल्लंघन है बल्कि यह खुद की और दूसरों की जान को जोखिम में डालना है। जिला प्रशासन ने आम जनता से भी अनुरोध किया है कि वह इस अभियान में सहयोग करें और हेलमेट पहनकर सड़क सुरक्षा को सुनिश्चित करें। साथ ही, वाहन चलाते समय सावधानी बरतें और यातायात नियमों का पालन करें ताकि सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाओं और मौतों में कमी लाई जा सके। इस अभियान के तहत आगे भी पेट्रोल पंपों और सड़क किनारे निगरानी बढ़ाई जाएगी। ऐसे ही कई अन्य जगहों पर सख्ती से नियमों का पालन कराया जाएगा। प्रशासन की मंशा है कि इस पहल से मुजफ्फरनगर जिले में सड़क सुरक्षा के स्तर में सुधार हो और लोगों को सुरक्षित यातायात का अनुभव मिले।

एसएसपी ने पुलिस लाइन के आवासों का किया निरीक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार वर्मा ने जहां पुलिस टीम के साथ पैदल गस्त किया वहीं उनके दिशा-निर्देश पर जनपद के सभी थाना प्रभारी व सर्किल अफसरों ने अपने-अपने क्षेत्रो में फ्लैग मार्च किया है, हालांकि आज सवेरे से ही वर्षा हो रही थी, लेकिन पुलिस टीम ने पैदल गस्त कर अपने-अपने क्षेत्रों का जायजा लिया।

बता दे कि सोमवार की सवेरे से ही चारो ओर वर्षा हो रही है और अधिकतर इलाकों में जलमग्न हो रहा है। कई क्षेत्रों में तो कई-कई फिट पानी भरा हुआ है, लेकिन इसके बावजुद भी जनपद के पुलिस मुखिया संजय कुमार वर्मा ने टीम के साथ मिलकर कैम्प आवास और यातायात व्यवस्था का जायजा लिया, हालांकि उनके दिशा-निर्देश पर जनपद के सभी थाना प्रभारियों के साथ पैदल गस्त किया और एसएसपी ने रिजर्व पुलिस लाइन स्थित आवासीय क्वार्टरों का निरीक्षण भी किया। बता दे कि वर्षा में जनपद मेरठ की पुलिस लाइन की बिल्डिंग गिरने का समाचार मिला था इसी के चलते वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सहायक पुलिस अधीक्षक, क्षेत्राधिकारी लाइन प्रतिसार निरीक्षक व ब्लॉक इंचार्ज के साथ पुलिस लाइन पहुंचकर आवासीय क्वार्टरों का निरीक्षण करते हुए पुलिसकर्मियों से मिलकर उनकी समस्याएं पूछी और टपकता पानी, सेफ्टी टैंक ओवरफ्लो को तुरंत मरम्मत करने के लिए कहा। एसएसपी ने सभी आवास का निरीक्षण किया। उन्होने कहा कि स्पेशल फंड का इस मरम्मत में इस्तेमाल किया जाए।

संजीव हत्याकांड में तीन को उम्रकैद

कोर्ट ने पिता-पुत्र पर 35-35 हजार रूपये का जुर्माना भी लगाया

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। विषेश अनूसुचित जाति एवं जनजाति अधिनियम की अदालत ने जानसठ कस्बा क्षेत्र के गांव राजपुर कलां ने वाल्मीकि समाज के घर गोली चलाने और घर के मुखिया की हत्या तथा तीन बच्चों को घायल करने के मामले में सुनवाई की। कोर्ट ने सबूत व गवाहों के आधार पर पिता पुत्र सहित तीन लोगों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है कोर्ट ने तीनों पर 35-35 हजार रूपयें का जुर्माना भी लगाया है।

अभियोजन के अनुसार कस्बा जानसठ के राजपुर कलां में चौदह फरवरी 2023 को रंजिश के चलते वाल्मीकि समाज के घर पर कुछ लोगों ने ताबडतोड फायरिंग की थी इस गोलीबारी में संजीव वाल्मीकि की मौत हो गई थी, जबकि फायरिंग में उसके बेटे मोहित, शीर्ष और वन्दना गंभीर रूप से घायल हो गई थी। घटना के दिन आरोपी मोहित व उसके बेटे राजेन्द्र, विरेन्द्र पर फायरिंग का आरोप लगाया गया था इस घटना का मुकदमा तीनों के खिलाफ दर्ज कर दिया गया था पुलिसने इस मामले में लिखापढ़ी करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। इसके बाद विवेचक ने छानबीन कर कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल कर दिया था तभी से यह मुकदमा विशेष अदालत अनुसूचित जाति, जनजाति की पीठाशीन अधिकारी आशा राना सिंह की कोर्ट में विचाराधीन था। इस मुकदमें की पैरोकारी शासकीय अधिवक्ता प्रवीन्द्र कुमार सिंह विशेष अधिवक्ता नरेन्द्र शर्मा ने की। दोनो पक्षों के अधिवक्ताओं की कोर्ट मे बहस हुई सभी ने अपने-अपने पक्ष रखते हुए न्यायाधीश के समक्ष घटना से संबंधित दलीले पेश की। कोर्ट ने सबूत व गवाहों के आधार पर मोहित, राजेन्द्र व विरेन्द्र को दोषी माना और तीनों पिता-पुत्र को आजीवन कारावास की सजा सुनाते हुए उन पर जुर्माना भी लगाया।

कोर्ट ने शस्त्र अधिनियम के तहत मोहित व राजेन्द्र को दण्डित करते हुए चार व सात हजार रूपये का अलग से जुर्माना भी किया।

मकान की छत गिरने से हुआ हजारों रुपये का नुकसान

शाह टाइम्स संवाददाता

बुढ़ाना। सोमवार की रात एक मकान की छत गिर गयी। जिसमें हजारों रुपये की कीमत का घरेलू सामान दबकर नष्ट हो गया जबकि परिवार के सभी सदस्य इसलिए बाल बाल बच गये कि सभी लोग बाहर छप्पर के नीचे बेठकर खाना खा रहे थे नहीं तो कोई बड़ा हादसा हो सकता था। मिली जानकारी के अनुसार बुढ़ाना कोतवाली क्षेत्र के गांव परासौली निवासी अकबर मिरासी के मकान की छत सोमवार की देर सायं अचानक से उस समय भरभराकर गिर गयी जब छत के नीचे परिवार का कोई भी सदस्य मौजूद नहीं था। सभी बाहर बैठे खाना खा रहे थे। अकबर की पत्नि शहजादी खाना बना रही थी। छत के मलबे में टंकी, बर्तन, संदूक, अलमारी, कूलर, पंखा और अन्य घरेलू सामान दबकर नष्ट हो गया। छत का मलबा गिरने की आवाज सुनकर मौके पर पड़ोसी आए और मलबे से नष्ट घरेलू सामान को बड़ी मुश्किल से बाहर निकाला। लगातार अर्धरात्रि से पड़ रही बारिश से मकान की छत गिर गयी और वह भरभराकर गिर गयी। अकबर बहुत गरीब बताया गया है। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने प्रशासन से गृह स्वामी अकबर को मुआवजा दिए जाने की मांग की है। बताया जाता है कि देर रात समाचार लिखे जाने तक तहसील का कोई कर्मचारी मुआयना करने नहीं पहुंचा था।

बुढ़ाना में लगातार हो रही बारिश ने बढ़ाई मुश्किलें

बुढ़ाना। कस्बे और क्षेत्र में बीते पूरे अगस्त माह में 20 दिन बारिश रही और अब सितम्बर के पहले दिन ही हुई मूसलाधार बारिश ने नागरिकों की मुश्किलें बढ़ा दी। मिली जानकारी के अनुसार कस्बे में पिछले महीने से हर दूसरे तीसरे दिन हो रही बारिश ने अब जनजीवन को बुरी तरह से प्रभावित करके रख दिया है। आज दिन निकलने से पहले ही शुरु हुई बारिश सोमवार की शाम तक जारी रही और साथ ही पूरे दिन आसमान में काली घटाएं छाई रही। इस खराब मौसम के चलते लोगों को अनेकों प्रकार की मुसीबतों का सामना करंना पड़ रहा है। लगातार हो रही बारिश के कारण खासकर देहात क्षेत्रों में हालात बेहद खराब हैं। कई गांवों में जलभराव की समस्या विकराल रूप ले चुकी है। इससे गलियां और सड़कें दलदल में तब्दील हो गई हैं। खासकर ग्रामीण इलाकों में कच्चे और पुराने मकानों को लगातार हो रही रिमझिम बारिश से भारी नुकसान पहुंच रहा है। कई जगहों पर दीवारों में सीलन आ गयी हैं। इससे लोगों में है। बारिश का गहरा असर व्यापार पर भी साफ दिखाई दे रहा है। खराब मौसम के चलते कस्बे के मुख्य बाजारों छोटा बाजार, बड़ा बाजार, सदर बाजार और पैंठ बाजार सहित सभी बाजारों में सन्नाटा पसरा हुआ है। ग्राहक न पहुंचने के कारण दुकानदार परेशान हैं। रोजमर्रा के सामानों की खरीददारी और जरूरी कामों को पूरा करने के लिए भी लोगों को भारी दिक्कतें आ रही हैं। कई लोग तो घरों में ही कैद होकर रह गए हैं। मौसम विभाग ने जिले के लिए आने वाले दिनों में भी राहत की खबर नहीं दी है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार 9 सितंबर तक लगातार बारिश होने के आसार हैं। हिंडन नदी किनारे बसे मौहल्ले के लोग दहशत में हैं। यहां के लोगों को नदी का जल स्तर बढ़ने की चिंता सता रही है।

लक्ष्य सामाजिक संस्था के पदाधिकारियों ने वैष्णो देवी हादसे के मृतकों को दी श्रद्धांजलि

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। लक्ष्य सामाजिक संस्था के कार्यालय शमा रेडियोज़ वाली गली, निकट मीनाक्षी चौक, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर पर संस्था के पदाधिकारियों ने जम्मू कश्मीर के वैष्णो देवी मार्ग पर आई प्राकृतिक आपदा में मारे गए श्रद्धालुओं को मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।संस्था के अध्यक्ष तज़कीर मुशीर ने बताया कि जम्मू-कश्मीर के कटरा स्थित वैष्णो देवी यात्रा मार्ग पर भूस्खलन से हमारे शहर के मोहल्ला रामपुरी के तीन परिवारों के दो बच्चों समेत कुल पांच श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि एक व्यक्ति घायल हो गएद्य हम मृतकों की आत्मा की शांति और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करते हैं और मारे गए लोगों के परिवार के प्रति शोक संवेदना प्रकट करते हैं। शोक सभा में मुख्य रूप से वरिष्ठ समाजसेवी रागिब आलम, महबूब आलम अंसारी एड., अमीर अंसारी एड. ,इकराम कुरैशी तेवड़ा, अल्ताफ अंसारी, सिंगर उस्मान राणा, काशिफ़ मुशीर एड., अनीस खान, पप्पू स्कूटर वाले आदि लोग मौजूद रहे।

मूसलाधार बारिश से बिजली घर के कंट्रोल रूम तक पहुंचा पानी, कई घंटे गुल रही आपूर्ति

खतौली। सोमवार को हुई मूसलाधार बारिश ने नगर की व्यवस्थाओं की पोल खोल कर रख दी। नगर के गली-मौहल्लों से लेकर जीटी रोड तक हर जगह पानी ही पानी नजर आया। कई-कई फुट जलभराव ने लोगों की दिनचर्या अस्त-व्यस्त कर दी। घरों और दुकानों में पानी घुसने से आम नागरिक और व्यापारी बेहाल हो उठे।

सबसे गंभीर हालात खतौली बिजली घर में बने, जहां बारिश का पानी सीधे कंट्रोल रूम तक जा पहुंचा। विद्युत मशीनों के आसपास पानी भरने से करंट उतरने की आशंका के चलते आपूर्ति तत्काल बंद करनी पड़ी। इससे नगर की बिजली कई घंटे गुल रही और लोग दोहरी मुसीबत में फंसे रहे। बिजली विभाग के कर्मी घंटों तक पंपों और बाल्टियों के जरिए कंट्रोल रूम से पानी निकालने में जुटे रहे। बिजली आपूर्ति ठप रहने से महिलाओं और बच्चों को सबसे अधिक परेशानी उठानी पड़ी। वहीं दुकानों में पानी भरने से व्यापारियों को भी भारी नुकसान हुआ। नगरवासियों ने जलभराव का सबसे बड़ा कारण नालों की ठीक से सफाई न होना और नगर पालिका द्वारा जानसठ रोड से सैनी नगर गुज्जर कॉलोनी तक निकाले गए पुराने नाले को बंद करना बताया। नाले की निकासी बाधित होने से बारिश का पानी कहीं निकल नहीं सका और पूरा नगर तालाब में तब्दील हो गया। लोगों का आरोप है कि नगर पालिका लापरवाह बनी रही और बारिश ने उनकी नींदें तोड़ दीं। नगरवासी अब जिम्मेदारों से सवाल कर रहे हैं कि आखिर हर साल की इस मुसीबत का हल कब निकलेगा?

ठाकुरद्वारा मंदिर में सजी फूल बंगला झांकी

बुढ़ाना। श्री राधाष्टमी पर्व के शुभ अवसर पर दूसरे दिन आज सोमवार की देर शाम को बुढ़ाना कस्बे के ठाकुर द्वारा मंदिर परिसर में फूल बंगला झांकियां सजाई गई। जहां पर उपस्थित सभी भक्तों ने राधा रानी के जन्म उत्सव पर विशेष पूजा अर्चना की और राधा रानी को प्रसन्न करने के लिए अभिषेक किया। इसके बाद श्री राधा अष्टमी जन्म उत्सव के दौरान भक्तों द्वारा राधा रानी को प्रसन्न करने के लिए 56 तरह के भोग बनाए गये। इन 56 भोगों में विभिन्न प्रकार की मिठाइयां, पकवान, फल, अनाज, अरबी की सब्जी, दही, मालपुआ, खीर और माखन-मिश्री जो राधा रानी को प्रिय माने जाते हैं वे सब रहे। छप्पन भोग की परंपरा श्री कृष्ण के जन्म के समय से चली आ रही है जब माता यशोदा ने कृष्ण को दिन के आठ प्रहर में अलग-अलग व्यंजन खिलाए थे जिससे कुल छप्पन प्रकार के भोग बनते थे। राधाष्टमी के अवसर पर भक्तों का मानना है कि छप्पन भोग अर्पित करने से राधा रानी प्रसन्न होती हैं और उनका आशीर्वाद मिलता है। श्री राधाष्टमी जन्मोत्सव के मधुर प्रसंगों में राधा रानी के मंदिरों में भव्य उत्सव, पंचामृत से अभिषेक, नवरत्न से जड़े आभूषणों से श्रृंगार, मंत्रोच्चार, कीर्तन और भक्तजनों की बड़ी संख्या में भीड़ शामिल रहती हैं जहाँ भक्त प्रेम से राधा-कृष्ण की पूजा कर सुख-समृ) की कामना करते हैं और राधा जी की कथा सुनकर आनंदित होते हैं। यह आयोजन श्री हित राधा कृपा संकीर्तन मंडल व धर्म प्रेमी बुढ़ाना द्वारा कराया गया। यहां

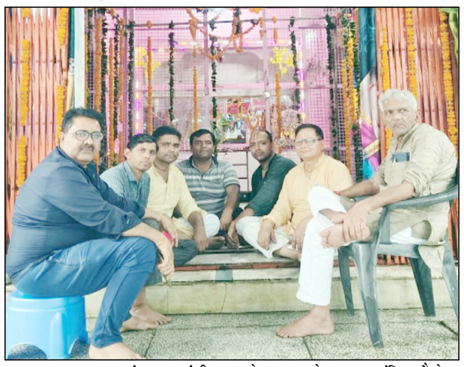

सभासद अजय संगल, संजीव लोमस, विपिन मित्तल, अमित भटनागर, गौरव गोयल, नितिन गोयल, अशोक पाल, पंडित शैलेन्द्र और नवीन कुमार आदि श्रदालुओं की उपस्थिति रही।

लोभ में आकर ही मनुष्य झूठ बोलता है: जैन

बुढ़ाना। ब्लाक क्षेत्र के गांव अटाली में स्थित श्री 1008 दिगंबर जैन पार्श्वनाथ मंदिर जी में सोमवार को पांचवें दिन उत्तम सत्य धर्म के रूप में बड़ी ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान यहां पर सर्वप्रथम उपस्थित सभी भक्तों ने महावीर भगवान की प्रतिमा को पांडुक शीला पर विराजमान करते हुए अभिषेक एवं शांति धारा की। आज की शांति धारा का अंजय जैन संजय दिल्ली परिवार को प्राप्त हुआ। तदपश्चात नित्य नियम पूजन, पार्श्वनाथ पूजन के साथ साथ दश लक्षण विधान भी किया गया एवं मंडल पर अर्घ समर्पित किये गये। पंडित मनोज जैन ने उत्तम सत्य धर्म के बारे में बतलाया कि मनुष्य अनेक कारणो से असत्य बोला करता है। उनमें से एक तो झूठ बोलने का प्रघान कारण लोभ है। लोभ में आकर मनुष्य अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए असत्य बोला करता है। असत्य भाषण करने का दूसरा कारण भय है। मनुष्य को सत्य बोलने से जब अपने ऊपर कोई आपत्ति आती दिखाई देती है अथवा अपनी कोई हानि होती दिखती है उसे समय वह डरकर झूठ बोल देता है। झूठ बोलकर वह उस विपत्ति या हानि से बचने का प्रयत्न करता है। यहां मंदिर प्रांगण में राकेश जैन, प्रमोद जैन, संजय जैन, राजेंद्र जैन, पुजारी मुकेश जैन आदि भक्तों ने भाग लिया।

मां शाकुंभरी विश्वविद्यालय का एमपीईड का फिटनेस टेस्ट एसडी कॉलेज में हुआ

मुजफ्फरनगर। सनातन धर्म महाविद्यालय में जिसमें ब्विविद्यालय द्वारा निर्धारित शारीरिक दक्षता परीक्षण कराया गया तथा उनके सर्टिफिकेट आदि की जांच की गई जिसमें 40 सीट के लिए

इसमें कुल 168 छात्र छात्राओं में से 120 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया इनमें से 40 छात्र-छात्राओं का मेरिट के हिसाब से चयन किया जाएगा।

इस चयन प्रक्रिया में के मा शाकुंभरी विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स काउंसलिंग के अध्यक्ष डॉक्टर सुधीर कुमार पुंडीर जी स्पोर्ट्स ऑफिसर डॉ संदीप गुप्ता, डॉ हरबीर चौधरी, फिजिकल फिटनेस टेस्ट के कोऑर्डिनेटर डॉक्टर अंशुल शर्मा सह समन्वयक प्रवेश तथा बाहरी विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रोफेसर शरद चौधरी , तथा एसडी कॉलेज के बीपीएड विभाग के डॉक्टर अंशुल शर्मा डॉक्टर संदीप कुमार डॉ नितिन सिंह डॉक्टर कर्मजीत कौर डॉक्टर चंद्रमणि आदि इंटरनल सिलेक्टर के रूप में उपस्थित रहे। सनातन धर्म महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर सुधीर कुमार पुंडीर ने सभी छात्रों को आशीर्वाद दिया तथा इस पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता बनाए रखने पर बल दिया। इस अवसर पर महाविद्यालय के अकाउंटेंट अनुपम जैन तथा राहुल मिश्रा आदि का सहयोग रहा

ठेकेदार के दो मोबाईल व 16 हजार रूपये नकदी ले उड़े बदमाश

पौड़ी राजमार्ग स्थित ढाबे पर हुई वारदात

मीरापुर। दिल्ली-पौड़ी राजमार्ग पर मीरापुर थाना क्षेत्र के ग्राम शिवपुरी के पास स्थित एक ढाबे पर रविवार तड़के ठेकेदार के साथ चोरी की वारदात हो गई। बाइक सवार तीन अज्ञात युवक ठेकेदार व उसके साथी का मोबाइल फोन और नकदी लेकर फरार हो गए।

मौ. अजीम पुत्र इकरूदीन निवासी ग्राम मौसमपुर, थाना मूसाझाग, जिला बदायूँ राजमार्ग पर डिवाइडर निर्माण का ठेका लिए हुए है। वह रविवार तड़के करीब 4 बजे शिवपुरी स्थित फेमिली रेस्टोरेंट ढाबे पर अपने कर्मचारियों के साथ विश्राम कर रहा था। उसी समय एक बाइक पर तीन युवक वहां पहुंचे। बदमाशों ने चारपाई पर सो रहे अजीम का मोबाइल फोन चोरी कर लिया।

इसके अलावा उसके पास ही सो रहे साथी रिजवान का मोबाइल भी उठा ले गए तथा चोरों ने अजीम की लोअर की जेब से 16,000 निकाल लिए और मौके से बाइक पर सवार होकर फरार हो गए। चोरी की यह पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। घटना का पता चलने पर पीड़ित ने तत्काल पुलिस को सूचना दी और थाना प्रभारी मीरापुर से लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

बदमाशों के साथ मुठभेड़ में पुलिस की गोली से एक गौकश घायल

जानसठ/सिखेड़ा। सिखेड़ा पुलिस की बदमाशों के साथ मुठभेड़ मे एक गौ कस बदमाश पुलिस की गोली से घायल समेत दो गौ कस गिरफ्तार किए गए।गौ कस बदमाशों के पास से अवैध शस्त्र गोकशी के उपकरण एक मोटरसाईकिल समेत एक रास गोवंश बरामद करने का दावा पोलिस ने किया है।

जानकारी के अनुसार मुखबिर द्वारा सिखेड़ा पुलिस को सूचना मिली की भांडुर मार्ग पर एक कच्चे रास्ते पर कुछ गोकश अभियुक्त आवारा गोवंशीय पशुओं की गोकशी करने वाले हैं तो वही ज़ब पुलिस टीम मूकबीर द्वारा बताए गए स्थान पर पहुंची तो देखा कि कुछ लोगों द्वारा गोकशी के लिए एक गोवंशीय पशु को बांध रखा है व गोकशी की तैयारी कर रहे है पुलिस टीम द्वारा अभियुक्त गण की घेराबंदी की गई तथा आत्मसमर्पण की चेतावनी दी गयी अभियुक्त गणों द्वारा खुद को पुलिस से घिरा देख पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग की गई वह अभियुक्त गण द्वारा की गई फायरिंग में पुलिस टीम बाल -बाल बची तो वहीं पुलिस टीम द्वारा फायरिंग रेंज में घुसकर आत्मरक्षार्थ सूक्ष्म जवाबी फायरिंग की गई जिसमें एक अभियुक्त घायल हो गया व उसके तीन साथी मौके से फरार हो गए पुलिस टीम द्वारा एक अभियुक्त को घायल अवस्था में गिरफ्तार किया गया तथा एक अन्य अभियुक्त को कॉंबंग के दौरान गिरफ्तार किया गया सिखेड़ा पुलिस द्वारा घायल गिरफ्तार अभियुक्त गण के कब्जे से अवैध शस्त्र गोकशी के उपकरण एक मोटरसाइकिल तथा एक रास गोवंश बरामद किया गया।

सिखेड़ा पुलिस द्वारा अभियुक्त गण की गिर“तारी व बरामदगी के सम्बन्ध मे अग्रिम कार्रवाई की जा रही है। पकड़े गए अभियुक्त गण का नाम नौशाद पुत्र गुलजार निवासी जामिया नगर दक्षिनी खालापार व पीरु पुत्र यामीन निवासी ग्राम सीखरेहड़ा थाना सिखेड़ा मुजफ्फरनगर बताया गया है।पकड़े गए आरोपितो के पास से एक अदत तमंचा 315 बोर एक जिंदा कारतूस वह दो खोखा कारतूस 315 बोर एक चाकू गोकशी के उपकरण रस्सी लकड़ी का गुटखा एक बूंदा दो छोरी एक टॉर्च एक मोटरसाइकिल बिना नंबर एक रास गोवंश बरामद हुआ है।पुलिस ने जब पकड़े गये बदमाशों से पूछताछ की तो इन्होने बताया की इनके द्वारा आवारा/छुटा गोवंशीय पशुओ की गोकशी का कार्य किया जाता है तथा गोमाश को बेचकर अवैध आर्थिक लाभ अर्जित किया जाता है। तो वही पकड़े गये बदमाशों ने बताया कि आज भी वह गोवंशीय पशु की जंगल मे गोकशी कर रहे थे तभी पुलिस ने पकड़ लिया है। गिरफ्तार करने वाली टीम प्रभारी निरीक्षक योगेंद्र शर्मा उपनिरीक्षक फरीद अहमद उप निरीक्षक अरुण कुमार उप निरीक्षक रामकुमार शर्मा कांस्टेबल विक्रांत कांस्टेबल अनुज कुमार कांस्टेबल अरुण कुमार कांस्टेबल नरेश कुमार आदि पोलिस टीम मौजूद रही।

जीटी रोड पर दिनदहाड़े खूनी संघर्ष

दर्जनों युवकों ने एक युवक पर बोला हमला, घायल अस्पताल में भर्ती

शाहटाइम्स सवांददाता

खतौली। सोमवार की शाम नगर का सबसे व्यस्त इलाका घंटाघर जीटी रोड अचानक जंग के अखाड़े में तब्दील हो गया। सैकड़ों की भीड़ के बीच उस समय अफरा-तफरी मच गई जब दर्जनों युवकों ने एक युवक को घेरकर लाठी-डंडों, लात-घूसों से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। अचानक हुई इस घटना से वहां मौजूद राहगीरों और दुकानदारों में भगदड़ मच गई। लोग जान बचाकर इधर-उधर भागने लगे।

कई दुकानदारों ने अपनी दुकानें तुरंत बंद कर लीं। सूचना पर कुछ लोगों ने पुलिस को फोन किया, लेकिन पुलिस के पहुंचने से पहले ही हमलावर युवक मौके से फरार हो गए।

मारपीट में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे पुलिस ने तुरंत नगर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसका इलाज जारी है। पुलिस ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी है और आरोपियों की तलाश में दबिश दी जा रही है। घटना के बाद काफी देर तक जीटी रोड पर अफरातफरी का माहौल बना रहा। समाचार लिखे जाने तक घायल युवक की ओर से पुलिस को तहरीर नहीं दी गई थी।

वैज्ञानिक वासुदेव मित्तल को मिला राष्ट्रपति स्काउट पुरस्कार

मुजफ्फरनगर। भारत स्काउट और गाइड उत्तर प्रदेश की ओर से वासुदेव मित्तल को राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजा गया है वासुदेव मित्तल ने वर्ष 2016 में आयोजित होने वाली राष्ट्रपति पुरस्कार की परीक्षा उत्तरीण की थी किंतु एक कानूनी व्यवधान आ जाने के कारण राष्ट्रपति भवन द्वारा राष्ट्रपति रैली 2016-17 में आयोजित नहीं हो सकी जो अब 29 अगस्त से 1 सितंबर 2025 तक आयोजित भारत मंडपम प्रगति मैदान नई दिल्ली में हुई कार्यक्रम में वासुदेव की अनुपस्थिति में यह पुरस्कार उत्तर प्रदेश की ओर से एक अन्य स्काउट बादल ब्विकर्मा (अम्बेडकर नगर) ने प्राप्त किया वासुदेव मित्तल को वर्ष 2016 में उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल राम नाईक जी के द्वारा भी राज्यपाल भवन लखनऊ में उनके हाथों से राज्य पुरस्कार मिल चुका है वासुदेव मित्तल बचपन से ही पढ़ाई के साथ-साथ अन्य विषयो में भी रुचि रखते थे इससे पूर्व भी वह इंटरनेशनल एस्ट्रोनामी एंड एस्ट्रोफिजिक्स प्रतियोगिता मे वर्ष 2020 मे सिल्वर मेडेल तथा वर्ष 2021 में गोल्ड मेडेल ले चुके है एवं स्काउट में ही मध्य प्रदेश के राज्यपाल तथा उस समय के भारत स्काउट एंड गाइड के राष्ट्रीय अध्यक्ष महामहिम रामेश्वर ठाकुर से गोल्डन एरो अवार्ड वर्ष 2011 में ले चुके हैं तथा भारत स्काउट एंड गाइड की ओर से वह अन्तराष्ट्रिय स्तर पर साउथ कोरिया तथा सिंगापुर एवं इंग्लैंड जैसे देशो में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके है वासुदेव मित्तल ने अपनी 12वीं कक्षा मुजफ्फरनगर की एक प्रतिष्ठित स्कूल एम जी पब्लिकद्व स्कूल सर्कुलर रोड से विज्ञान विषय में उत्तरीण की। उस समय भी उन्होने विज्ञान वर्ग में उन्होंने जिले में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था उसके बाद वासुदेव मित्तल का चयन भारत सरकार द्वारा संचालित इंडियन इंस्टीटद्द्यूट साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च मोहाली में हुआ वहां से उन्होंने वर्ष 2024 में बीएस, एमएस की उपाधि प्राप्त करने के बाद वह वर्तमान समय में ऑस्ट्रेलिया में सिडनी यूनिवर्सिटी में ऑस्ट्रेलिया की एक प्रसिद्ध स्कॉलरशिप पर खगोल शास्त्र में पीएचडी कर रहे हैं हाल में ही वह ऑस्ट्रिया एक सेमिनार में गए जहां पर उन्होंने ऑस्ट्रिया के साथ साथ जर्मनी में भी अपना शोध प्रकाशित किया कुछ समय पूर्व वासुदेव मित्तल भारत में आए थे यहां पर उन्होंने आईआईटी कानपुर के साथ-साथ आईआईटी बीएचयू एवं केन्द्रीय ब्विविधालय जामिया मिलिया इस्लामिया में भी भौतिकी विज्ञान विभाग में अपने शोध को प्रकाशित किया राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने का सारा श्रेय वह अपने स्कूल एमजी पब्लिक स्कूल सर्कुलर रोड के अध्यापको तथा प्रधानाचार्य मोनिका गर्ग तथा प्रबन्धक सतीश गोयल के साथ साथ अपने गुरु राजेंद्र सिंह हंसपाल पूर्व उत्तर प्रदेश भारत स्काउट एंड गाइड स्टेट संगठन कमिश्नर (स्काउट) के साथ-साथ वर्तमान में स्टेट कंटिजेंट लीडर एवं सहायक प्रादेशिक संगठन कमिश्नर (कानपुर मण्डल) मयंक शर्मा को देते हैं तथा विशेष रूप से धन्यवाद प्रदेश के मुखिया एवं मुख्य आयुक्त आदरणीय डॉ. प्रभात कुमार को देते हैं जिनके आशीर्वाद से यह सम्मान प्राप्त हो सका वासुदेव मित्तल मुजफ्फरनगर के पूर्व मुख्य आयुक्त शिवकुमार यादव, पूर्व काउंसिल अध्यक्ष प्रलाद कुमार तथा जिला संगठन कमिश्नर भारत भूषण जी एवं आदरणीय डा. कंचन प्रभा शुक्ला (वर्तमान मुख्य आयुक्त) तथा सहायक प्रादेशिक संगठन कमिश्नर अमित जी का भी हृदय की गहरियों से धन्यवाद करते है दैनिक जागरण से वार्ता मे वासुदेव मित्तल ने टेलीफोन पर बताया की इन दिनों वह सिडनी ऑस्ट्रेलिया में है वासुदेव मित्तल के पिता सुखदेव मित्तल एक वरिष्ठ दीवानी अधिवक्ता है उनकी माताजी डॉ. अलका मित्तल शिक्षा विभाग मेरठ कॉलेज मेरठ में प्रोफेसर थी वासुदेव मित्तल को राष्ट्रपति पुरस्कार मिलने पर उनके चाचा परीक्षित कुमार मित्तल एड. एवं उनका परिवार बहुत खुश है तथा उनके मिलने वाले भी टेलीफोन पर ही सिडनी में उन्हे बधाईया दे रहे है। नई दिल्ली में कार्यक्रम खेल एवं श्रम मंत्रालय तथा युवा मामले के खेल मंत्री डा. मंसूख मांडविया, सांसद एवं अध्यक्ष अनिल जैन तथा सांसद मनोज तिवारी के साथ साथ की गरिमामय उपस्थिती में सम्पन्न हुआ।

बंद पड़े नाले से परेशान लोग पहुंचे तहसील, एसडीएम से लगाई गुहार

शाहटाइम्स सवांददाता

खतौली। सोमवार की झमाझम बारिश ने नगर की लचर व्यवस्थाओं की पोल खोल दी। रेलवे रोड और श्यामपुरी मोहल्ले में दो से ढाई फीट तक पानी भरने से लोगों का सब्र टूट गया। नाराज क्षेत्रवासियों ने पानी में होकर ही तहसील पहुंचकर एसडीएम राजकुमार भारती से मुलाकात की और सैनी नगर में बंद कराए गए नाले को खुलवाने की मांग उठाई। मौके पर नाराजगी को देखते हुए एसडीएम ने नायब तहसीलदार राजीव त्यागी को तुरंत निरीक्षण के लिए भेजा।

नायब तहसीलदार ने हालात का जायजा लेने के बाद नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी को निर्देशित कर सफाई कर्मियों की टीम बुलवाई। लेकिन नालों की सफाई के बाद भी जलभराव जस का तस बना रहा। स्थानीय लोगों का कहना है कि सैनी नगर की गुर्जर कॉलोनी में सात फीट चौड़ा नाला करीब तीन महीने से टेंडर प्रक्रिया के चलते बंद पड़ा है। इसी कारण बरसात का पानी निकलने का रास्ता बंद है और ओवरफ्लो होकर सड़क व कॉलोनियों में भर रहा है। जलभराव से त्रस्त लोगों का कहना था कि पालिका की लापरवाही के चलते आए दिन परेशानी झेलनी पड़ रही है। यदि नाले को जल्द नहीं खोला गया तो हालात और भी भयावह हो सकते हैं।

तहसील पहुंचे प्रतिनिधिमंडल में रेलवे रोड व्यापार मंडल अध्यक्ष प्रदीप शर्मा, प्रशांत पंडित, राजू सैनी, एकांश गुप्ता, सचिन तनेजा, पिंची, गुलशन भाटिया, महिपाल वालिया और सभासद विकास कौशिक सहित कई लोग मौजूद रहे। सभी ने नाले को तत्काल खुलवाने और स्थायी समाधान की मांग की।

प्रति स्थानित किए 4 पाठों के औचित्य पर हुई परिचर्चा

बुढ़ाना। सोमवार को बीईओ किरण यादव की अध्यक्षता में बुनियादी भाषा एवं संख्या ज्ञान तथा एनसीईआरटी पाठ्ड पुस्तकों पर आधारित शिक्षण प्रशिक्षण का आयोजन हुआ। जिसमें एआरपी नरेश कुमार, संजीव कुमार, विजय शंकर, अमीर अहमद व एआरपी क्षमा जांगिड़ द्वारा प्रशिक्षण शुरु किया गया। फिर प्रार्थना सभा हुई। फिर दिवस 1 के सत्र प्रारंभ हुए।

जिनमें मुख्य रुप से सब प्रशिक्षणार्थियों का पंजीकरण कराया गया। फिर ज्ञान समीक्षा एप पर उपस्थिति प्री टेस्ट कराकर प्रथम सत्र आयोजन हुआ। जिसमें एनसीईआरटी द्वारा विकसित पाठ्ड पुस्तक वीणा 1 की विषय वस्तु के प्रति समग्र समझ तथा प्रति स्थानित किए गए 4 पाठों के औचित्य पर परिचर्चा हुई। पाठों से संबंधित अभ्यास, उनकी विशेषताएं तथा उनसे विकसित होने वाली दक्षताओं के प्रति समझ को विकसित करना विस्तार से समझाया गया। गणित मेला का परिचय तथा जिज्ञासा बिना एवं गणित मेला पर प्रतिभागियों की जिज्ञासा को जन एवं उसका समुचित समाधान प्रस्तुत किया गया। सभी एआरपी द्वारा प्रशिक्षण को बड़ी मेहनत के साथ दिया जा रहा है। किरण यादव खंड शिक्षा अधिकारी के द्वारा प्रशिक्षण कक्षाओं का निरीक्षण किया गया तथा प्रतिभागियों से प्रश्न उत्तर के माध्यम से प्रशिक्षण की गुणवत्ता का परीक्षण किया गया। प्रतिभागियों के द्वारा जवाब देने की स्थिति में उन्होने सभी की प्रशंसा की। इस प्रशिक्षण में सत्येंद्र कुमार, अनुज कुमार, उम्मेद अली, रश्मि, अंजू शर्मा, सुमेधा, वैशाली, शाम, नरेंद्र कुमार, अरविंद कुमार, मोहम्मद नाजिम, ग”यूर अली, जोगिंद्र शर्मा, मनोज कुमार शर्मा, सुबोध कुमार, कप्तान सिंह पंवार, आजाद सिंह राठी, अशोक कुमार, इमरान अली, दिनेश कुमार, संदीप कुमार और सतीश कुमार आदि प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

बारिश में गिरे पेड़ से आवागमन बाधित, बिजली गुल

पुरकाजी। पुरकाजी के पुराने हाइवे पर स्थित भूराहेडी पेट्रोल पंप के समीप बीच सड़क में तेज हवा के साथ बारिश के कारण दो पेड़ गिरने से आवागमन बाधित हो गया। जिससे दोनों तरफ से आवागमन रुक गया। पेड़ गिरने से बिजली के खंभे व तार टूट गए जिससे कस्बे व क्षेत्र की बिजली आपूर्ति ठप हो गई! हालांकि बिजली के तार के गिरने की खबर पर बिजली कर्मी तुरन्त बरसात में मौके पर पहुच कर तारो को खम्भे से खोलकर बिजली सप्लाई बंद कर दिया, जिससे कोई हादसा नही हुआ।

बारिश के कारण सड़क की साइड में बने गड्ढे में मौजूद पानी की वजह से भी वाहन फंस गए! सूचना पर वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर स्थानीय लोगों की मदद से सड़क से पेड़ को हटाया गया। कई घटे लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ा! पेड़ को कटवाने के बाद ही आवागमन शुरू हो सका।

दिल्ली में मुख्य यात्री परिवहन प्रबंधक से मिले कपिल नागर

खतौली में ट्रेनों के स्टॉपेज की मांग तेज, वर्षों से अनसुनी रही आवाज

शाहटाइम्स संवाददाता, खतौली। खतौली नगरवासी वर्षों से एक्सप्रेस ट्रेनों के स्टॉपेज की मांग कर रहे हैं, लेकिन रेलवे विभाग के कानों पर जूं तक नहीं रेंग रही। बार-बार ज्ञापन, धरना-प्रदर्शन और विरोध-प्रदर्शन के बावजूद आज तक कोई सुनवाई नहीं हुई। नतीजतन नगरवासियों को रोजाना भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

गौरतलब है कि कोरोना महामारी के दौरान कई महत्वपूर्ण ट्रेनों का ठहराव समाप्त कर दिया गया था। लेकिन महामारी खत्म होने के बाद भी दोबारा इनका स्टॉपेज खतौली में बहाल नहीं किया गया। यही वजह है कि हजारों यात्री जो रोजाना दिल्ली, मुंबई, हरिद्वार, लखनऊ जैसे बड़े शहरों के लिए निकलते हैं, उन्हें मजबूरी में बसों का सहारा लेना पड़

रहा है। इससे न केवल उनका समय बर्बाद होता है बल्कि जेब पर भी भारी बोझ पड़ रहा है। यात्रियों की इस समस्या को लेकर समाजसेवी खतौली निवासी कपिल कुमार नागर ने दिल्ली में मुख्य यात्री परिवहन प्रबंधक से भेंट की। उन्होंने विस्तार से नगरवासियों की दिक्कतें बताते हुए तत्काल ट्रेनों का स्टॉपेज शुरू कराने की मांग रखते हुए ज्ञापन सौंपा। प्रबंधक ने आश्वासन दिया कि मांग पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। कपिल नागर ने बताया कि खतौली में विशेष रूप से इन तीन प्रमुख ट्रेनों वंदे भारत एक्सप्रेस, उत्कल एक्सप्रेस, नई दिल्लीख्रजालंधर एक्सप्रेस स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि खतौली में इन ट्रेनों का स्टॉपेज होता है तो न केवल क्षेत्रीय यात्रियों को राहत मिलेगी बल्कि रेलवे विभाग की आय में भी इजाफा होगा।

पीसीपीएनडीटी एक्ट में अल्ट्रासाउण्ड सैंटर सीज

मुजफ्फरनगर। जिलाधिकारी एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी मुजफ्फरनगर के सख्त निर्देशों के अनुपालन में, पीसीपीएनडीटी एक्ट के नोडल अधिकारी डॉ. विपिन कुमार ने आज शाहपुर-बुढ़ाना रोड स्थित सत्यम डायग्नोस्टिक एंड इमेजिंग सेंटर पर बड़ी छापेमारी की।कार्रवाई के दौरान सेंटर पर कई गंभीर अनियमितताएँ पाई गईं। जाँच में यह पाया गया कि निरीक्षण के समय कोई पंजीकृत चिकित्सक मौजूद नहीं था, जबकि अल्ट्रासाउंड मशीन चालू हालत में मिली। इसके अतिरिक्त, अनधिकृत व्यक्तियों द्वारा अवैध रूप से अल्ट्रासाउंड किया जा रहा था। वहीं, अल्ट्रासाउंड संबंधी सभी फॉर्म और रिकॉर्ड अधूरे एवं त्रुटिपूर्ण पाए गए। गंभीर अनियमितताओं को देखते हुए सेंटर को तत्काल प्रभाव से सील कर दिया गया। इस मामले में सेंटर के संचालक धर्मेंद्र चौहान पुत्र रतन सिंह एवं पंजीकृत चिकित्सक डॉ. निर्मल सिंह (एमबीबीएस, डीएमआरडी) के विरुद्ध पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई है।जिला प्रशासन ने यह स्पष्ट किया है कि यह कार्रवाई लिंग-चयन जैसी अवैध गतिविधियों के विरुद्ध सरकार की ह्जीरो टॉलरेंसी नीति को दर्शाती है। भविष्य में भी यदि किसी संस्था अथवा व्यक्ति को इस प्रकार के अपराध में लिप्त पाया गया तो उनके विरुद्ध कठोरतम दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

बारिश होने से अधिवक्ता न्यायिक कार्यों से रहे विरत

बुढ़ाना। कस्बा बुढ़ाना और देहात क्षेत्र में सोमवार की प्रथम रात्रि से ही अचानक से खराब हुए मौसम के बाद लगातार दोपहर बाद तक हुई मूसलाधार बारिश के कारण वादी और कुछ अधिवक्ता बुढाना तहसील परिसर मे पहुंचने में असमर्थ रहे। तब बार एसोघसिएशन बुढ़ाना की एक आपात मीटिंग में सभी पदाघधिका. रियों की सहमति से नो वर्क का निर्णय लिया गया। तब सभी अधिवक्ता न्यायिक कार्यो से विरत रहे। बार एसोसिएशन बुढ़ाना के अध्यक्ष विनोद कुमार त्यागी और बार एसोसिएशन बुढ़ाना के महासि. चव ओमपाल सिंह मलिक डुंगर ने संयुक्त रूप से बतलाया कि नो वर्क की सूचना सभी न्यायालयों को भी भेज दी गई है।

कुरथल में बाबा जाहरवीर गोगा म्हाड़ी पर हुआ पूजन

बुढ़ाना। ब्लाक क्षेत्र के गांव कुरथल में सोमवार के दिन जाहरवीर गोगा जी म्हाडी पर सैकड़ो श्रद्धालुओ ने प्रसाद चढ़ाकर मनौतियां मांगी। यहां गांव में स्थित ऐतिहासिक जहारवीर गोगा जी की म्हाडी पर श्रद्धालुओं ने फल, प्रसाद व झंडा चढाकर मनौतियां मांगी।

दिन निकलते ही महाडी परिसर के बाहर श्रद्धालु महिला पुरूष व बच्चों की भारी भीड लग गयी। महाडी सेवा समिति द्वारा श्रद्धालुओं को पंक्तिबद्ध कराकर व्यवस्था के साथ प्रसाद चढवाया। इस दौरान महाडी परिसर में पुलिस प्रशासन व कमैटी सदस्यों की मौजूदगी रही। यहां पर हर वर्ष दूर दूर से श्रद्धालु आते है। मान्यता है कि जो भी यहां पर मनोतियां मांगते है उनकी मनौती पूर्ण होती है। वही जिन श्रद्धालुओं की मनौतियां पूरी हो जाती है वह श्रद्धालु श्रद्धा के साथ प्रसाद, फल व झंडा म्हाड़ी पर चढ़ाते है। म्हाडी परिसर में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद कश्यप समाज की खाप के चौधरी डाक्टर सोनू कश्यप ने बताया कि जहारवीर गोगा महाड़ी ऐतिहासिक महाड़ी है। यहा पर श्रद्धालुओ द्वारा मांगी गई मन्नते पूरी होती है। इस दौरान बाबा जाहरवीर गोगा जी म्हाडी पर पूजन के बाद प्रसाद ग्रहण किया। यहां पर ठाकुर चंद्रपाल, विशाल कुमार पाल, भाजपा पूर्व मंडल अध्यक्ष भारत ठाकुर, भाजपा बुढाना मंडल अध्यक्ष मोनू ठाकुर, मुकेश शर्मा, अंकुर सैनी और रविंद्र सैनी आदि श्रदालुओं की भी उपस्थिति रही।

शाहपुर सैनियान म्हाड़ी से निकाली गई भव्य शोभा यात्रा

शाहपुर। कस्बे में मोहल्ला सेनियान स्थित माढ़ी से श्री जाहर्वीर गोगा जी की भव्य शोभायात्रा का विधिवत शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन वरिष्ठ प्रमुख समाजसेवी उमेश मित्तल ने फीता काटकर किया। वहीं वरिष्ठ भाजपा नेता एवं समाजसेवी अरविंद पाल ने परंपरा के अनुसार ध्वज (निशान) स्थापित किया। इस शुभ अवसर पर समिति के पदाधिकारी, स्थानीय जनप्रतिनिधि और नगरवासी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। गोगा जी के जयकारों से पूरा नगर भक्तिमय हो उठा। यह शोभायात्रा गोगा नवमी पर्व की परंपरा का हिस्सा है, जो वर्षों से शाहपुर में आस्था और श्रद्धा के साथ मनाई जाती है। शोभायात्रा नगर की मुख्य गलियों और मार्गों से होकर निकली। जगह-जगह श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। घोड़ों की सवारियों, बैंड-बाजों और पारंपरिक झाँकियों ने माहौल को और भी भव्य बना दिया। भक्तों ने गोगा जी की लीलाओं का गुणगान करते हुए नगर में धार्मिक वातावरण बनाया। इस शोभायात्रा की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें सभी समाज वर्गों के लोग बड़ी संख्या में शामिल हुए। बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों तक ने श्रद्धा के साथ गोगा जी की महिमा का वंदन किया। गोगा जी की भक्ति में बंधनों की कोई सीमा नहीं है, यही कारण है कि यह शोभायात्रा सामाजिक एकता और भाईचारे का प्रतीक बन गई। श्रद्धालुओं ने भजन गाए, एक-दूसरे को प्रसाद बांटा और गोगा जी की लीलाओं का रसपान किया। रात्रि में शोभायात्रा का विधिवत समापन माढ़ी पर हुआ, जिसके उपरांत परंपरागत मेले का शुभारंभ पूर्व चेयरमैन प्रमेश सैनी व ग्राम पलडी प्रधान मोनू सैनी ने फीता काटकर किया। छड़ी पूजन एवं स्थापना भाजपा महिला मोर्चा की मंडल अध्यक्ष रूबी सैनी ने किया। मेले में झूले,

मिठाइयों और खिलौनों की दुकानों ने बच्चों और युवाओं को खूब आकर्षित किया। दूर-दराज़ के गाँवों और कस्बों से आए लोग मेले के आनंद में सराबोर दिखाई दिए। खास बात यह रही कि क्षेत्र में बने गुरु गोरखनाथ जी के मंदिर में भी श्रद्धालु बड़ी संख्या में पहुँचे। यहाँ भक्त नारियल, धूप-बत्ती और प्रसाद चढ़ाते हैं तथा अपनी मनोक. ामनाएँ पूरी होने की मन्नत माँगते हैं। गोगा जी और गुरु गोरखनाथ जी की संयुक्त आस्था से पूरा क्षेत्र धार्मिक उत्साह और लोक परंपरा की गहरी छाप से सराबोर हो गया।

यूपी रत्न डॉ संदीप वर्मा ने किया छड़ियों के मेले का उद्घाटन

पुरकाजी। जाहरवीर गोगा जी की स्मृति में तीन दिवसीय मेले का आयोजन किया गया जिसकी जिसकी तैयारी लगभग एक हफ्ता पहले से चल रहीथी जाहरवीर गोगा. जी के मेले का भाजपा नेता यूपी रत्न पूर्व जिला पंचायत सदस्य डॉक्टर संदीप वर्मा द्वारा ब्लॉक पर लगने वाले फीता काटकर उद्घाटन किया मंदिर के पुजारी द्वारा आशीर्वाद दिया गया इस मौके पर पूर्व जिला पंचायत डॉक्टर संदीप वर्मा ने कहा की सदियों से यहां पर छड़ियों का मेला लगता है जिससे क्षेत्र के सभी लोग यहां पर खरीदारी करते हैं मंदिर पर प्रसाद चढ़कर अपनी मन्नतें जाहरवीर गोगा पीर पर आकर मांगते है इस मौक भाजपा महामंत्री विपिन गोयल, पप्पू धीमान, शिव कुमार, विपुल गोयल, मुख्य लोग मौजूद रहे।

भव्य झाकियों सहित किया गया बाबा गणपति का गुणगान

गणपति उत्सव में हर रोज बढ़ रही श्रद्धालुओं की भीड़

.शाह टाइम्स संवाददाता

पुरकाजी। श्री गणेश चतुर्थी महोत्सव, के उपलक्ष पर श्री गणेश महोत्सव युवा कमेटी द्वारा भव्य झांकियो के साथ भारी उतसाह पूर्व धूमधाम से मनाया जा रहा है

श्री गणेश चतुर्थी महोत्सव जिला सहसंयोजक व्यापार प्रकोष्ठ भाजपा ब्रजकिशोर गुप्ता द्धबिटू ऋ के सानिध्य में चल रही युवा कमेटी द्वारा पुरकाजी खाई खेड़ी रोड निकट बालाजी धाम मंदिर के मलखान सिंह वेंकट हॉल में, श्री गणेश चतुथ्ह्ण महोत्सव मैं मंत्र उच्चारण द्वारा पूजा अर्चना आरती शास्त्री पंडित विकूल भारद्वाज द्वारा कराई गई इस शुभ अवसर पर बाहर से आए कलाकारों द्वारा, सुंदर-सुंदर झांकियां, व रोहित नादान पार्टी द्वारा, सुंदर सुंदर भजनों के द्वारा, सभी श्रद्धालुओं का मन मोह लिया।

इसी के साथ भक्तों ने भी झूम झूम कर नृत्य किया, और महिलाओं ने भी राधा अष्टमी के शुभ अवसर पर घर-घर से लड्डू गोपाल लाकर डांडिया खेला, और गणपति महोत्सव युवा कमेटी ने भी अपनी पूरी टीम के साथ 22 फीट ऊंची माखन की हंडी फोड़कर गुलाल के साथ व फूलों की होली खेली, और पुरकाजी के छोटे छोटे बच्चों के द्वारा भी बहुत ही सुंदर भूतों की झांकी निकाली गई जिसने सभी श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। इस दौरान पुरकाजी के समाजसेवी को द्वारा पंडाल में जलपान व हलवा, कढ़ी चावल, फल का स्टॉल लगाकर हजारों की संख्या में आए श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया, कमेटी अध्यक्ष अंकुर गुप्ता, ऋषभ गोयल, कोषाध्यक्ष, कृष्ण वर्मा, सोनू कश्यप, तुषार चंचल, राहुल सैनी, महामंत्री यश जोशी, रितिक शर्मा, निशांत चंचल, राघव गोयल, दिनेश थराणीय, सेवादार मीनाक्षी जोशी, संगीता गोयल रेखा कश्यप, मुकेश चंचल, मीनाक्षी कश्यप, अंजू देवी, अविका चंचल, रितु पाल, अनीता देवी, रेनू गुप्ता, राधा रानी, शालू गोयल, रीना शर्मा, वर्षा धवन, शकुंतला राठी, मनीषा सैनी, विमल पाल, ठाकुर पुष्पा देवी, कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु कार्य किया, इस दौरान ब्रजकिशोर गुप्ता (बिटू) सुनील कुमार गोयल, पंडित भानु शर्मा, नीरज मित्तल, धर्मेंद्र मित्तल, मोनू धीमान, आनंद धीमान, मनीष गुप्ता, अर्जुन गुप्ता, मनीष गोयल, धीरज गर्ग, गौरव गोयल, सतीश गोयल, वीरेंद्र सिंह, शिवा चौधरी, आर्यन राठी, मोहित गुप्ता, ऋषभ गुप्ता, रजनीश कुमार, राजन वर्मा, अनिल कुमार गर्ग, अशोक सैनी, प्रमोद सैनी, आकाश कुमार, बॉबी कुमार शेठपुरा, नगर अध्यक्ष अमित गोयल, संजय गुप्ता, ललित गुप्ता, धर्मेंद्र मित्तल, हिमांशु कौशिक एडवोकेट, सोनू मित्तल, विमल कुमार, हेमंत ठाकुर, पंडित अनुज शर्मा, पप्पू करनवाल, मलखान सिंह, गौरव गोयल, मैनपाल वाल्मीकि, पुलिस प्रशासन, बिजली विभाग, आदिक उपस्थित रहे।

अरबाईन की मजलिस के उपरांत हुआ सोग का समापन

मोरना। ककरौली गांव में पिछले 153 वर्षो से आयोजित होने वाली अरबाईन की मजलिस के उपरांत करबला के शहीदों की याद जारी सोग का समापन हो गया।सोमवार को बारिश के बीच अरबाईन की मजलिस में क्षेत्र सहित दूर से आए शिया अकीदतमदों ने कार्यक्रम मे शिरकत की सुरक्षा को लेकर पुलिस बल तैनात रहा।

ककरौली में स्थित इमाम बारगाह दीवाने खाना मोहल्ला गढ़ी मे आयोजित अरबाईन की मजलिस का आगाज स"यद हसन अली द्वारा सोज़खवानी कर किया गया। मुख्य अथिति बिहार के गोपालपुरा से आये मौलाना स"यद शमशाद अहमद रिज़वी ने अपने सम्बोधन मे करबला के वाकिये पर भाव पूर्ण अंदाज़ मे प्रकाश डालते हुए हजरत इमाम हुसैन व करबला के शहीदों से प्रेरणा लेने पर बल दिया। कार्यक्रम के आयोजक स"यद नियाज मेंहदी ने बताया की माह रबीउल अव्वल की आठवीं तिथि को हजरत इमाम हुसैन का करबला से लुटा हुआ काफिला मदीना पहुंचा था।प्रतिवर्ष इसी तिथि को अरबाईन की मजलिस का आयोजन किया जाता है।मजलिस मे स"यद अब्बास अली खान व काशिफ ककरोलवी ने नोहा प्रस्तुत किये।इस मौके पर खुर्शीद अब्बास,स"यद जरगम रजा,शाने रज़ा,एहतशाम जैदी, अली

अब्बास जैदी, स"यद अहमद रजा जैदी, नवाज मेंहदी आदि व्यवस्थापक के रूप मे रहे।

वहीं सुरक्षा को लेकर ककरौली थानाध्यक्ष जोगेन्द्र सिंह सहित भारी पुलिस बल तैनात रहा।

बिजनौर सांसद चंदन चौहान का भाजपा मंडल महामंत्री विपिन गोयल ने किया स्वागत

पुरकाजी। बिजनौर लोक सभा के राष्ट्रीय लोक दल के सांसद के महामंत्री विपिन गोयल के आवास सत्यविहार कॉलोनी में पहुंचने पर स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत किया गया। मिली जानकारी के अनुसार बिजनौर से राष्ट्रीय लोक दल के लोकप्रिय सांसद चंदन चौहान अपने क्षेत्र पुरकाजी कस्बे में भाजपा के मंडल महामंत्री विपिन गोयल के निवास पर पहुंचे स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा सांसद चंदन चौहान का स्वागत किया गया। स्वागत के दौरान सांसद चंदन चौहान को राधा-ख्रष्ण की तस्वीर भेंटकर सम्मानित किया गया, सांसद चंदन चौहान के द्वारा भाजपा के कार्यकर्ताओं के साथ क्षेत्र के विकास के लिए योजनाओं पर चर्चा की। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष अजय पंवार, मांडला प्रधान सुनील गुर्जर, प्रधान सचिन गुर्जर, पॉपीन प्रधान गुर्जर, अमित कश्यप, मोनू गुर्जर, अमित गोयल, एडवोकेट प्रवेज आलम सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

गंगा किनारे गांवों में बाढ़ का खतरा

मीरापुर। शिवालिक पहाड़ियों पर तथा क्षेत्र में हो रही रूक रूक कर हो रही तेज वर्षा के कारण तथा भीमगोडा बैराज से छोड़े गये जल के कारण गंगा नदी फिर उफान पर है तथा गंगा का जलस्तर खतरे के निशान के पास पहुँच गया है।शिवालिक पहाड़ियों पर हो रही लगातार तेज वर्षा के कारण गंगा में फिर उफान आ गया है। गंगा के किनारे बसे गांवों में फिर बाढ़ की आशंका लोगों सताने लगी है। गंगा बैराज भीमगोडा हरिद्वार से सोमवार को सांय 4 बजे 165715 क्यूसेक पानी का निस्तारण किया गया है जो देर रात तक गंगा बैराज पर पहुँच जायेगा जिस कारण आसपास के गांवों में बाढ़ जैसी स्थिति बनने की आशंका दोबारा उत्पन्न हो गई है। गंगा का जलस्तर खतरे के निशान पर पहुँच गया है।

पति और सास-ससुर पर दहेज उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज

मीरापुर। विवाहिता से दहेज में बाईक व एक लाख रूपये मांगने पर पीड़ित महिला ने अपने पति व सास ससुर के विरुद्ध दहेज की मांग का मुकदमा दर्ज करा दिया है। ग्राम भूम्मा थाना मीरापुर निवासी शिवानी पुत्री विमल का विवाह अमरीश पुत्र कमलसिंह निवासी ग्राम कमहेड़ा थाना ककरौली के साथ 15 जौलाई 2024 को हुआ था। शिवानी के पिता ने अपनी हैसियत के अनुसार बेटी को दान दहेज देकर घर से विदा किया था। कुछ दिन बाद शिवानी के पति ने एक लाख रूपये व एक बाईक की मांग शुरू कर दी। मांग पूरी न होने पर शिवानी के साथ कई बार मारपीट की गई बाद में समाज के लोगों ने दोनों पक्षों का समझौता करा दिया था लेकिन विवाहिता के पति, सास ससुर आदि बार बार दहेज की मांग करते रहे तथा उसका उत्पीड़न जारी रखा। पीड़िता ने थाना मीरापुर में अपने पति अमरीश व सास ससुर के विरूद्ध दहेज की मांग का मुकदमा दर्ज करा दिया है।

प्रशिक्षण में मोटे अनाज की पैदावार के लिए किसानों को किया प्रेरित

जानसठ। विकासखंड के उपसंभागीय कृषि सभागार में एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख चौधरी नरेंद्र सिंह रहे। उन्होंने कृषि विभाग द्वारा चलाई जा रही किसानों के लाभार्थ योजनाओं को प्रत्येक किसान तक पहुंचाने के लिए ब्लॉक के कृषि विभाग से जुड़े अधिकारियों की सराहना की। प्रशिक्षण में डॉ सत्यवीर सिंह सिरोही और कृषि विज्ञान केंद्र चितोड़ा की वैज्ञानिक डॉ पूजा ने किसानों को मोटे अनाज जैसे रागी, मक्का, सांवा, ज्वार, बाजरा इत्यादि की बुआई और उपयोगिता के विषय के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। प्रशिक्षण में पशुपालन विभाग से उपमुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ स्नेहा निर्वाल ने भी पशुपालन विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी। वरिष्ठ प्राविधिक सहायक संदीप कुमार ने भी किसानों को मोटे अनाज की पैदावार करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की अध्यक्षता किसान ध्यान सिंह ने की। कार्यक्रम में राकेश कुमार, अश्विनी, चन्द्रसेन, ब्लॉक तकनीक प्रबंधक राजीव कुमार, सहायक तकनीकी प्रबंधक शिवपाल कुमार उपस्थित रहे।

तेज बारिश में पेड़ गिरा, बिजली गायब

छपार। बरला - बसेड़ा मार्ग पर बारिश व तेज हवा चलने से एक पेड़ सड़क पर गिर गया जिससे विधुत लाइन के तार टूट गये और यातायात घंटों तक प्रभावित रहा। सोमवार को सुबह से ही बारिश हो रही है और तेज हवा चल रही है जिस कारण बरला बसेड़ा मार्ग पर किनारे खड़ा लिप्टिस का पेड़ टूट कर सड़क पर गिर गया जिससे यातायात घंटों तक प्रभावित रहा और 11 केवी विधुत लाइन के तार टूट गये। बरला बिजलीघर की बिजली भी गुल रही। वन विभाग की टीम ने पेड़ को हटाया और यातायात चालू कराया। विधुत लाइन ठीक करने में भी विभाग को घंटों मशक्कत करनी पड़ी।

राधाष्टमी पर भजनों की गूंज, श्रद्धालु हुए भावविभोर

मीरापुर। श्रीहरि संकीर्तन मंडल के तत्वाधान में गतवर्षो की भांति राधाष्टमी पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया तथा गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करने वाले बच्चो को प्रमाण पत्र व उपहार देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर बडी संख्या में श्रद्धालु व भक्तगण मौजूद रहे।श्रीहरि संकीर्तन मंडल के द्वारा सत्संग भवन में एक भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर संयुक्त रूप से डा. आर. के. पारासर, सिद्धार्थ राजवंशी एडवोकेट द्वारा किया गया। इसके उपरान्त भजन संध्या का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में राधेश्याम गंगपुरी, संजीव कुमार उर्फ शेरू, प्रवीण कुमार अग्रवाल, प्रशांत कौशिक, राघव रस्तौगी तथा हस्तिनापुर धाम के महंत स्वामी रघुराम जी ने भगवान कृष्ण व राधा जी के भजन गाकर लोगो को मंत्रमुग्ध कर दिया। भजनो को सुनकर सत्संग भवन में मौजूद श्रद्धालुगण मस्ती नाचने लगे। स्वामी रघुराम जी ने राधाष्टमी के व्रत महिमा का उल्लेख करते हुए बताया कि राधाष्टमी पर किये गये व्रत का फल 1000 एकादशियों के बराबर होता है। राधाष्टमी पर किये गये पूजा अर्चना व को दान भी अ्वमेघ यज्ञ के समकक्ष माना गया है। कार्यक्रम के चलते राधाकृष्ण के भजनो पर आयोजित गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मानवी शर्मा ज्ञानस्थली पब्लिक स्कूल की छात्रा ने प्राप्त किया उधर द्वितीय स्थान रबाब कासमी व आयत जेहरा एसएसएस स्कूल मीरापुर, शगुन गोयल, खुशी वर्मा, तृतीय स्थान पर अवनी धीमान, इंशा सैफी, रिया, वासु कंसल, आफिया, यशस्वी सैनी ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करने वाले बच्चो को प्रमाण पत्र व उपहार राजेन्द्र रस्तौगी, अमित मित्तल, राजेश शर्मा व दीपक धीमान ने प्रदान किये। इस मौके पर श्रीहरि संकीर्तन मंडल द्वारा सीबीएसई नक्ष्र्थ जक्न ताइकवांडो चेम्पियनशिप का सफल आयोजन करने पर शिखर शिक्षा सदन के डायरेक्टर राजेश शर्मा को पटका पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन संजीव गोयल के द्वारा सफल रूप से किया गया। कार्यक्रम के बाद विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें बडी संख्या में लोगो ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए मोहित लखोटिया, प्रशांत अग्रवाल, रोहित लखोटिया, राघव रस्तौगी, वासुदेव शर्मा, घनश्याम दास अग्रवाल, मनोज अग्रवाल, नीरज शारदा, प्रतीक देव, नरेश रस्तौगी, रोहित डागा, उमेश शर्मा, का विशेष सहयोग रहा।

लकड़ियों से भरा ट्रक पलटा

बुढाना। बीती 27 अगस्त के बाद एक बार फिर सोमवार के दिन खेतों में खड़े विद्युत खंभे और विद्युत लाइन अचानक से एक अवर लोडिंग ट्रक के पलट जाने से डेमेज हो गयी। जिसमें चालक परिचालक को मामूली चोटें आई हैं। इस ट्रक में लकड़ियां भरी हुई थी। यह घटना बुढ़ाना ब्लाक क्षेत्र के गांव नगवा वाया गांव इटावा के बीच में दोपहर बाद हुई है। बताया जाता है कि इससे पहले भी बीती 27 अगस्त को ही इसी स्थानघ पर एक वाहन इसी तरह से पलट गया था। जिसमें कई घंटे विद्युत आपूर्ति बंद रही थी। अब फिर से हुई इस दूसरी घटना के मद्देनजर मंगलवार के दिन 02 सितम्बर को अटाली सब स्टेशन की 33 केवी लाइन में एक्सीडेंट के कारण डैमेज हुए विद्युत पोल को लगाने और विद्युत लाइन खींचने के चलते सुबह दस बजे से लेकर दोपहर 12 बजे तक अटाली सब स्टेशन, मिंडकाली, वैल्ली, चंधेडी सब स्टेशन, बुढ़ाना टाऊन, बुढ़ाना देहात, कुरथल सब स्टेशन का शट-डाउन रहेगा यानि कि लगातार पूरे दो घंटे तक विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी। इसलिए आज सुबह 10 बजे से पहले पहले बिजली संबंधी अपने सभी कार्य आप निपटा लें ताकि आपको किसी भी असुविधा का सामना ना करना पड़े। यह जानकारी विद्युत विभाग के जेई विकास सिंह ने दी है।

दो युवकों की मारपीट के वीडियो हुए वायरल

बुढ़ाना। किसी बात को लेकर दो युवक आपस में ही भिड़ पड़े। इस दौरानघ कुछ ही देर में भारी भीड़ जमा हो गयी। कोई तमाशबीन इन दोनों युवको को क्या छुड़ाता लोग इनकी लडाई का ही वीडियो बनाने लग गये। कुछ ही देर बाद इन दोनों युवकों की हाथापाई के दो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गये। एक वीडियो 15 सैकेंड का तो दूसरा वीडियो 43 सैकेंड का है। जिसमें लोग मजे से दोनों युवकों की लड़ाई को बड़े चाव से देख रहे हैं। वीडियो सोमवार की देर सायं का बुढ़ाना कस्बे के बड़ौत रोड निकट चौधरी चरण सिंह तिराहे का है। चर्चा है कि किसी व्यक्ति ने इस घटना की सूचना बुढ़ाना पुलिस को दी तो मौके पर आई पुलिस ने भीड़ को तितर बितर कर दोनों युवकों को हिरासत में ले लिया।

भाकियू ने युवराज सिंह को बनाया मोरना ब्लॉक् उपाध्यक्ष

शाह टाइम्स संवाददाता

मोरना। गांव अथाई में भारतीय किसान यूनियन टिकैत द्वारा एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें संगठन को मज़बूत बनाने, किसानो की समस्याओं व किसानो के हितो के लिए कार्य करने बल दिया गया साथ ही युवराज सिंह को ब्लॉक् उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया।तथा हरा पटका पहनाकर संगठन मे स्वागत किया गया।

अथाई गांव मे नवनियुक्त ब्लॉक् उपाध्यक्ष युवराज सिंह के आवास पर आयोजित सभा मे भाकियू जिलाध्यक्ष नवीन राठी ने कहा की भाकियू की पहचान किसान के लिए संघर्ष से बनी है।साढ़े तीन दशक से भी अधिक समय से भाकियू किसानो के अधिकार और सम्मान की लड़ाई प्रभावी रूप से लड़ रही है। पूंजी पति समाज किसान और मजदूर को बांटने की साजिश कर उनके शोषण की योजना बनाता रहता

है।कठिन परिश्रम के बावजूद किसानो पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है। और पूंजीपति निरंतर धनाडय हो रहा है।समय रहते हमें पूजीपतियों की साजिशो से सतर्क और सावधान रहना है।भाकियू कार्यकर्ता किसानो को एकजुट कर सतर्क सावधान करने का काम करें। वहीं युवराज सिंह ने कहा कि बुजुर्गो के निर्देशन में किसान यूनियन टिकैत को मजबूत बनाने के लिए वह दिन-रात मेहनत करेंगे ज्यादा से ज्यादा युवाओं को किसान यूनियन टिकैत में जोड़ा जाएगा बाबा महेंद्र सिंह टिकैत की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का वह निरंतर कार्य करेंगे इस दौरान ब्लॉक अध्यक्ष अनुज राठी ,राजू पिनना मनीष अहलावत,दलबीर सिंह, प्रवीण कुमार ,इंद्रवीर सिंह ,अरविंद कुमार ,मिंटू ,राजेश ,ओमवीर सिंह ,विपुल ,नमन चौधरी, सत्येंद्र सिंह, कुलदीप आदि उपस्थित रहे।

एडीएम ने बुढ़ाना रहते हुए 56 बदमाशों के किए हाफ एनकाऊंटर

(नसीम कुरैशी)

बुढ़ाना। निरीक्षक आनंद देव मिश्र को पुलिस विभाग में एडीएम के नाम से भी जाना जाता है। एडीएम बुढ़ाना में साढ़े छह सौ दिन बुढ़ाना कोतवाली के प्रभारी रहे और उन्होंने बुढ़ाना रहते हुए अपने इन साढ़े छह सौ दिनों के कार्यकाल में 56 अभियुक्तों के हाफ एनकाऊंटर किए। तत्कालीन एसएसपी द्वारा आनंद देव मिश्र को बीते सन 2023 में 18 नवम्बर को बुढ़ाना कोतवाली का प्रभार संभालने के निर्देश दिए गये थे तो चार्ज संभालने के 3 हफ्ते बाद ही बदमाशों में अपना खौफ बरकरार रख क्राइम को कम करने के उद्देश्य से बीती 12 दिसम्बर सन् 2023 को पहला हाफ एन्काउन्टर पंजाब राज्य निवासी अजय पुत्र गंगाराम का किया। दूसरा हाफ एनकाऊंटर बीते साल 8 जनवरी को सिसौली निवासी हिमांशु उर्फ काला पुत्र मदन लाल का किया। तीसरा हाफ एनकाऊंटर बीती 12 जनवरी को बागपत निवासी दीपक का किया।

बीते 13 जनवरी को बागपत निवासी चांद उर्फ छोटू पुत्र बबलू का किया। बीती 17 जनवरी को बागपत निवासी तरुण पुत्र हर्षवर्धन, बीती 1 मार्च को गौकशी के 3 अभियुक्तों गांव बड़ौदा निवासी अर्जुन, हापुड़ जिला निवासी बिलाल व बागपत निवासी गुफरान, बीते 4 मार्च को गांव वैल्ली निवासी दुष्कर्मी आर्यन पंवार, बीते 7 मार्च को गौकशी में दिल्ली निवासी नफीस मलिक, बीते 3 मई को 2 बदमाशों गांव परासौली निवासी दिलावर व हरियाणा निवासी दिलशाद, बीते 9 जून को फिर 2 गौकशी करने वाले गौकश रिजवान निवासी बुढ़ाना व जिला शामली निवासी शहजाद, बीते 12 जुलाई को 3 बदमाशों मेरठ निवासी एजाज व भूरा व नंगला निवासी गुलजार, बीते 17 जुलाई को बैंक कर्मचारी को लूटने वाले लुटेरे को गोली मारी। बीते 18 जुलाई को गांव अलीपुर अटेरना के 2 युवकों अरशद व लोकेश को गोली मारी।

बीते 28 अगस्त को गौकशी में शामिल मीरापुर निवासी इकबाल, बीते 27 सितम्बर नंगला निवासी समरेज, बीते 11 अक्टूबर को जिला हापुड़ निवासी गड़ानी उर्फ बंटी व जिला गाजियाबाद निवासी काला, बीते 27 अक्टूबर को बुढ़ाना निवासी फुरकान, बीते 25 नवम्बर को मेरठ निवासी नौशाद, बीते 14 नवम्बर भोपा निवासी नजर और इस वर्ष बीते 13 जनवरी को हरियाणा निवासी रामनिवास, बीते 22 फरवरी को एक ग्रामीण के हत्यारे गांव शाहडब्बर निवासी छविंद्र वाल्मिकी, बीते 9 फरवरी को बागपत निवासी अमित, बीते 8 फरवरी को गांव काकड़ा निवासी अमन बंसल, बीते 4 फरवरी को युवती की हत्या में शामिल मेरठ निवासी दीपक, बीते 2 फरवरी को मेरठ निवासी शुभम, बीते 25 मार्च को शामली जिला निवासी मुकीम, बीते 20 मार्च को हैदरगढ़ निवासी प्रवीण व 2 गौकशों को गोली मारकर पकड़ा। बीते 11 मार्च को मुजफ्फरनगर निवासी सरफराज, बीते 29 मई को लुटेरे गांव मोरकुक्का निवासी अर्जुन, बीते 22 मई को 2 हत्यारे सगे भाईयों गांव टांडा माजरा निवासी निखिल व विक्रांत को गोली मारकर पकडा।

बीते 13 मई को बुढ़ाना निवासी मतलूब, बीते 8 मई को अलीपुर अटेरना गांव निवासी इरशाद, बीते 27 जून को रेपिस्ट राजू, बीते 21 जून को मेरठ निवासी लुटेरे फुरकान को गोली मारकर पकड़ा। बीते 25 जुलाई को नोएडा निवासीगण बदमाश अरुण व साहिल, बीते 3 अगस्त को सरधना निवासी असलम, बीते 19 अगस्त को बुढ़ाना निवासी साकिब, 21 अगस्त को जिला शामली निवासी सहाबुद्दीन, बीते 12 अगस्त को बुढ़ाना निवास. ीगण रहीस व नौशाद, बीते 21 अगस्त को बुढ़ाना निवासी इरफान, 6 दिन पूर्व गांव कुरथल निवासी रोबिन अब लास्ट मे 04 दिन पूर्व बुढ़ाना के दीनू को गोली मारकर पकड़ा।

शाह टाइम्स
स्वामी 'शाह पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड' के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक एस.एन. राना द्वारा शाह पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, सूजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक: एस.एन. राना
*कार्यकारी सम्पादक आनन्द बत्रा 'सुमन'
मुख्यालय: मोबाइल-9720007290
R.N.I. No. 71843/99
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

मूसलाधार बारिश से यमुना में उफान, लोगों में दहशत

रुक रुक हो रही बरसात फेर रही किसनो की उम्मीदो पर पानी

शाह टाइम्स टीम

बिडौली। शाठी धान की फसल काटने के बाद किसानों के खेत खाली हो गए हैं इसके बाद किसान अपने खेतों से दूसरी फसल लेने के लिए जमीन के बताऊ आने का इंतजार कर रहे हैं लेकिन रुक-रुक कर हो रही है बरसात किसानो की उम्मीद पर पानी फेर रही।

आपको बता दे गेहूं की फसल बोने में अभी 3 महीने का समय बाकी है। कुछ तो किसान अपनी शाठी धान फसल काटने के बाद दोबारा से धान लगा देते हैं तो उनके लिए तो यह बरसात वरदान साबित हो रही है। लेकिन कुछ किसान धान काटने के बाद सब्जी की फसल करते हैं व कुछ किसान उड़द की फसल बोते हैं क्योंकि उड़द की फसल मे किसानों के लागत तो कम आती ही साथ साथ कम समय मे भी तैयार हो जाती है जिससे किसान अच्छा खासा मुनाफा कमा लेता है जिसके बाद किसान समय से गेहूं के बिजाई कर लेता है।इस लिए किसान को जमीन के बताऊ आने का इंतजार करना पड़ता है लेकिन बार-बार हो रही बरसात के कारण जमीन बताऊ नहीं आ पा रही है। इसलिए सब्जी के फसले लेट होती नजर आ रही है। इस लिए यह बरसात किसानो की उम्मीद पर पानी फेरती नजर आ रही है। किसान लियाकत का कहना है बरसात अधिक होने के कारण जमीन बताऊ नहीं आ पा रही है जिससे उड़द व सब्जी जैसी फसले लेट हो रही है। किसान सोनू कुमार सैनी का कहना है कि यह बे मौसम बरसात अधिक होने से जो खेत खाली हो गय थे उसमे सब्जी की फसले लगानी थी जिस जमीन बताउ ना आने के कारण दिन प्रतिदिन लेट होता जा रहा है।

मूसलाधार बारिश से जलभराव, बाजार भी बंद

शामली। सोमवार को तड़के आई मूसलाधार बारिश के बाद पूरे शहर में जलभराव हो गया। बाजारों में व्यापारियों की दुकानों और गली मौहल्लों में लोगों के घरों तक में पानी भर गया। बारिश इतनी तेज थी कि शहर के कई स्थानों पर बारिश रूकने के दो घंटों के बाद भी जलभराव नही निकल सका। जलभराव के कारण वाहन चालकों को परेशानियां हुई और वह दूसरे रास्तो से निकलने को मजबूर दिखे।

गत रविवार से ही बूदांबांदी हो रही है, लेकिन देर शाम आसमान साफ हो गया था और बारिश रूक गई थी, लेकिन सोमवार तड़के अचानक मौसम करवट ली और आसमान में काले बादल छा गए और मूशलाधार बारिश शुरू हो गई। करीब एक घंटा चली मूशलाधार बारिश से पूरे शहर में जलभराव हो गया। बारिश इतनी तेज थी कि मात्र एक घंटे की मूशलाधार बारिश के बाद शहर के मौहल्ला पंसा. रियान, नई बस्ती, बरखंडी रोड, कलंदरशाह, कैराना रोड, वीवी इंटर कालेज रोड, कबाडी बाजार आदि स्थानों पर जल भराव होने से नागरिकों को जलभराव के कारण दिक्कते हुई। मूशलाधार बारिश ने नगर पालिका के विकास कार्यो की पोल खोलकर रख दी। शहर के सब्जी मंडी नाला पटरी, नगर पालिका रोड, धीमानपुरा, माजरा रोड़ यह कई स्थान ऐसे थे, जहां बारिश के दो घंटे के बाद भी पानी भरा रहा और लोगों को परेशानियां का सामना करना पडा। शहर के नेहरू मार्किट और कबाडी बाजार में दुकानदारों ने दुकानों तक में पानी भर गया, जिससे हजारों रूपये का नुकसान हुआ है। शहर के बरखंडी रोड पर तो सडक पर पानी दोपहर तक भरा रहा। दुकानदारों का कहना है कि इस वर्ष जितनी बारिश हो रही है पिछले कई सालों में इतनी बारिश नही हुई। कबाडी बाजार और माजरा रोड से बारिश के दो घंटे के बाद भी पानी नही निकला। जिससे दुकानों की दुकाने भी देरी से खुली।बारिश के बाद बाजार में ग्राहक भी नही पहुंचे और दुकानदार दिनभर दुकानों के बाहर साफ सफाई करते दिखाई दिए। नागरिकों का कहना है कि नगर पालिका द्वारा शहर में कोई विकास कार्य नही कराए जा रहे है। सिर्फ विकास कार्यो के नाम पर बोर्ड लगाने का काम किया जा रहा है। उन्होने सडकों का निर्माण कराने के साथ साथ नाले और नालियों का निर्माण कराने की मांग की है। नाले में गंदगी अटी पडी है। नगर पालिका का इस ओर कोई ध्यान नही है।

सीएचसी की छतों से भी रिस रहा पानी

शामली। लगातार हो रही बारिश से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र द्धसीएचसीत्र की छतें टपकने लगी हैं। हालत यह है कि महिला वार्ड व जनरल वार्ड को बंद करना पड़ा। छत से सीमेंट गिरने पर हादसे की आशंका देखते हुए चिकित्सा अधीक्षक ने एक रास्ता भी बंद करा दिया।

इस वर्ष लगातार बारिश को प्रकोप बना हुआ है। प्रतिदिन बारिश होने से कई स्थानों पर मकानों में दरारे आ आई गई और सडकों की हालत भी खस्ता होने लगी है। वही पिछले दो दिनों से लगातार बारिश होने से शामली सीएचसी की छतों से पानी टपकने लगा रहा है। सवेरे जहां दवा लेने के लिए मरीज सीएचसी पहुंचे तो इसी दौरान औषधि कक्ष के पास व दंत चिकित्सक के कक्ष के बाहर अचानक छत से एक हिस्सा टूटकर नीचे गिर गया, जिससे वहां से गुजर रहे मरीज बाल बाल बच गए। हादसे की आशंका को देखते हुए चिकित्सा अधीक्षक डा। दीपक कुमार द्वारा तुरंत उक्त रास्ते को बंद करा दिया गया और दंत चिकित्सक का कक्ष भी दूसरे कक्ष में स्थानांतरित कर दिया गया। इसके अलावा छतों से पानी टपकने के बाद महिला वार्ड, एसआईवी कक्ष दोनों को बंद कर दिया गया। पंजीकरण कक्ष में भी पानी का रिसाव पाया गया। बारिश के चलते जगह-जगह पानी का रिसाव हुआ। जिससे पूरा सीएचसी परिसर में पानी टपकता रहा। मरीजों के साथ-साथ चिकित्सक भी परेशान रहे। ओपीडी में डॉक्टरों को टपकती छतों के नीचे बैठकर ही मरीज देखना पड़ा।

चौसाना। लगातार हो रही बारिश ने यमुना का जलस्तर एक बार फिर बढ़ा दिया है। नदी के उफान पर आने से यमुना किनारे बसे गांवों के लोगों में भय और दहशत का माहौल है। खेतों में खड़ी फसलें कटान की चपेट में आ रही हैं और पशुओं के चारे का संकट गहराता जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि पिछले दिनों पानी का स्तर कुछ कम हुआ था जिससे लोगों ने राहत की सांस ली थी, लेकिन बारिश के कारण हालात फिर बिगड़ने लगे हैं।

रात के समय नदी का बहाव और तेज हो जाता है, जिससे गांवों में पानी घुसने का डर बना रहता है। ग्रामीण बताते हैं कि परिवार के सदस्य रात भर जागकर पहरा दे रहे हैं ताकि किसी भी अनहोनी की स्थिति में समय रहते बचाव किया जा सके। कई

हथिनीकुंड बैराज से यमुना नदी में प्रवाहित किया गया 3.29 लाख क्यूसेक पानी ,अलर्ट जारी

गांवों में पशुओं को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन चारे की किल्लत बड़ी चुनौती बन चुकी है। पशुपालकों का कहना है कि चारागाह जलमग्न हो चुके हैं और सूखे चारे का स्टॉक भी खत्म होने लगा है।

यमुना के किनारे बसे गांवों के खेतों में भारी कटान देखने को मिल रहा है। तेज बहाव के चलते उपजाऊ जमीन का बड़ा हिस्सा नदी में समा रहा है। किसानों की मेहनत और लागत बर्बाद हो रही है। ग्रामीण प्रशासन से जल्द से जल्द मुआवजे और प्रभावी समाधान की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि हर साल बाढ़ जैसी स्थिति से गांववासियों को जूझना पड़ता है, लेकिन स्थाई समाधान अब तक नहीं निकाला जा सका है।

इधर, प्रशासन ने हालात पर कड़ी निगरानी बनाए रखी है। राजस्व और आपदा प्रबंधन विभाग की टीमें प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचकर हालात का जायजा ले रही हैं। चौकी और थाना स्तर पर पुलिसकर्मी लगातार गश्त कर रहे हैं ताकि किसी भी आपात स्थिति में लोगों को सुरक्षित निकाला जा सके। स्थानीय प्रशासन का कहना है कि राहत व बचाव सामग्री तैयार रखी गई है। बाढ़ संभावित गांवों में अलर्ट जारी कर दिया गया है और नावों की व्यवस्था भी की जा रही है।

गांवों के लोग हालांकि प्रशासन की तैयारियों को पर्याप्त नहीं मान रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि केवल अलर्ट जारी करने से हालात काबू में नहीं आएंगे, जरूरत है कि कटान रो. कने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं और चारे की समस्या को तुरंत दूर किया जाए। यमुना का उफान जहां किसानों और पशुपालकों की परेशानी बढ़ा रहा है, वहीं आमजन का जीवन भी अस्त-व्यस्त हो रहा है। बरसात का मौसम अभी जारी है, ऐसे में लोग आने वाले दिनों में हालात और बिगड़ने की आशंका से डरे हुए हैं।

दो दिनों से लगातार हो रही बारिश के कारण यमुना नदी में हथिनी कुंड बैराज से सोमवार की सुबह करीब 3.29 लाख क्यूसेक पानी छोडा गया। धीरे धीरे पानी चौसाना क्षेत्र स्थित यमुना नदी के तटवर्ती गावों में पहुंचा और यमुना का जलस्तर धीरे धीरे बढने लगा। जिससे लोगो की मुश्किले बढने लगी। भडी में लगातार कटान हो रहा है,सुरक्षा की दृष्टि से गांव के लोग कटान वाले स्थानों पर पेडो को काटकर डाल रहे है। ताकि कटान को रोका जा सके। हालाकि ग्रामीणों का दावा है कि यमुना का जलस्तर रात्रि मे अधिक होगा। क्योकि अभी तक पूरे पानी का दबाव नही बढा है। अगर पानी रात्रि मे पहुँचा तो तबाही मचा सकता है जिससे लोगो की जान मुसीबत में है और दशहत मे लोग जी रहे है। रविवार की शाम को यमुनानगर के हथनीकुंड बैराज के डैम से करीब 80 हजार क्यूसेक पानी को छोडा गया था। जो सोमवार की सुबह पर चोसाना के तटवर्ती गावों मे पहुँचा तो कटान बढता चला गया। ग्रामीणों ने पटरी के किनारे बसे लोगो के घरो को बचाने के लिए व मिटटी कटान को रोकने के लिए पेडो को काटकर मिटटी कटान वाले स्थानों पर डाला,जिससे कटान पर कुछ असर पडा। वही दूसरी ओर सोमवार की सुबह हथनीकुंड बैराज से करीब 3।29 लाख क्यूसेक पानी छोडा गया जो सोमवार की रात्रि तक पहुँचनें की उम्मीद है। ग्रामीण रमनुद्दीन, अशरफ, इंतजार और हनी ने का कहना है कि हथनीकुंड बैराज से इतनी अधिक मात्रा मे पानी छोडा गया। जब वह हमारे गांवों तक पहुँचेगा तो तबाही मचाएगा। जिसके डर से ग्रामीणों की नींदे उडी हुई है। ग्रामीणों ने रात्रि मे जागने के प्रबंधक कर लिए है। ग्रामीणों ने पटरी के किनारे बांधे गए पशुओं को भी सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया है ताकि विकट हालात मे बचा जा सके।

यमुना नदी के बहाव में बही 200 बीघा भूमि

भडी निवासी अशरफ, इंतजार ,समसू और रगबीर ने बताया कि जलस्तर बढ़ रहा है और सैकड़ों बीघा जमीन यमुना में समा रही है। कई घर अब नदी से महज आठ फुट की दूरी पर हैं।गांव के प्रत्एक छोर पर यमुना का पानी पहुँच गया है।

पटरी बही तो सौ घरों को होगा नुकसान

भडी मे पटरी के करीब से यमुना बह रही है। रात्रि मे जब तक पानी पहुँचेगा तब पटरी के बहने की आशंका ग्रामीण जता रहे है। जिससे 100 ग्रामीण परिवारों को नुकसान हो सकता है।

कैराना। पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में निरन्तर हो रही वर्षा के चलते हथिनीकुंड बैराज से यमुना नदी में अधिकतम 3.29 लाख क्यूसेक पानी डिस्चार्ज किया गया है। इससे कैराना क्षेत्र में यमुना नदी उफान पर पहुंच जाएगी, जिसे लेकर खादर क्षेत्र के किसानों की धड़कने भी तेज हो गई है। वहीं, यमुना में पानी छोड़े जाने के चलते हाईअलर्ट जारी किया गया है। प्रशासन ने बाढ़ चौकियों को अलर्ट करते हुए खादर क्षेत्र में निगरानी बढ़ाने के निर्देश दिए है।

पिछले कई दिनों से पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में निरन्तर वर्षा हो रही है, जिस कारण हथिनीकुंड बैराज पर पानी का दबाव बढ़ गया। बैराज पर पानी के बढ़ते दबाव को कम करने के लिए सोमवार सुबह से ही यमुना नदी में भारी मात्रा में पानी छोड़ा जा रहा है। प्रात: आठ बजे 3,11,032 क्यूसेक पानी यमुना में डिस्चार्ज किया गया। इसके बाद, दस बजे 3,21635 क्यूसेक, 12 बजे 3,23,180 व दोपहर दो बजे 3,03,519 क्यूसेक पानी यमुना में प्रवाहित किया गया। प्रात: नौ बजे सबसे अधिक 3,29,313 क्यूसेक पानी यमुना नदी में छोड़ा गया। यमुना में छोड़े गए पानी की सूचना पर खादर क्षेत्र के किसानों की चिंता में वृद्धि हो गई है। यमुना नदी में हथिनीकुंड बैराज से छोड़ा गया यह पानी इस वर्ष का अभी तक सर्वाधिक है। बैराज से छोड़ा गया पानी करीब 22 से 24 घंटे में कैराना पहुंच जाएगा, जिससे क्षेत्र में यमुना नदी के जलस्तर में भारी वृद्धि होगी। यमुना के उफान पर आने से खादर क्षेत्र के किसानों की फसलों को नुकसान होने की संभावनाएं जताई जा रही है। यमुना में पानी छोड़े जाने के साथ ही हाईअलर्ट जारी किया गया है। बाढ़ चौकियों को अलर्ट रहकर खादर क्षेत्र में निगरानी बढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं। यमुना नदी में एक दिन पूर्व भी अधिकतम 44,416 क्यूसेक जल डिस्चार्ज किया गया था। जोकि सोमवार सुबह ही कैराना पहुंच गया। यमुना नदी कैराना में फिलहाल चेतावनी बिंदु से मात्र एक मीटर नीचे

बह रही है। सोमवार को छोड़े गए पानी से यमुना के खतरे के निशान को पार कर जाने की संभावना है। वहीं, ड्रेनेज विभाग के अधिशासी अभियंता सुधांशु सिंह ने बताया कि सोमवार प्रात: आठ बजे कैराना में यमुना का बहाव सूचकांक पर 230 मीटर दर्ज किया गया। उन्होंने बताया कि हथिनीकुंड बैराज से यमुना में पानी छोड़े जाने से क्षेत्र में जलस्तर में वृद्धि होगी। कैराना में यमुना का चेतावनी बिंदु 231.000 मीटर, जबकि खतरे का निशान 231.500 मीटर पर निर्धारित है। मातहतों को यमुना तटबंध पर निरन्तर गश्त करने को कहा गया है।

हर प्रकार की विषम परिस्थिति से निटपने को तैयार प्रशासन: तहसीलदार

यमुना नदी में हथिनीकुंड बैराज से छोड़े गए पानी से तहसील प्रशासन भी चौकन्ना हो गया है, जिसके चलते बाढ़ चौकियों को अलर्ट रहने के निर्देश दिए गए है। प्रशासन विगत वर्षों में यमुना के पानी से तटवर्ती क्षेत्र में हो चुके नुकसान से वाकिफ है। वर्ष-2023 में मानसून सत्र के दौरान सहपत में यमुना तटबन्द टूटने से सैंकड़ों किसानों की फसलें बर्बाद हो गई थी।

जिन्हें बाद में शासन की ओर से मुआवजा दिया गया था। इसी के मद्देनजर यमुना में पानी छोड़े जाने के साथ ही प्रशासन सतर्क हो गया है। वहीं, तहसीलदार कैराना अर्जुन चौहान का कहना है कि ड्रेनेज विभाग की ओर से यमुना में अधिक मात्रा में पानी छोड़े जाने के इनपुट मिले है, जिसके दृष्टिगत तहसील क्षेत्र में स्थित चारों बाढ़ चौकियों को अलर्ट कर दिया गया है। साथ ही, लोगो को यमुना तट की ओर न जाने की सलाह दी गई है। तहसील प्रशासन किसी भी प्रकार की विषम परिस्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है।

संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी पर लटका मिला यूपी पुलिस का सिपाही

शाह टाइम्स संवाददाता

झिंझाना। क्षेत्र के गांव रजा. कनगर में रविवार की देर रात उत्तर प्रदेश पुलिस के सिपाही का शव कमरे में फांसी के फंदे पर लटका मिला। घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पीएम के लिए भेज दिया है।

गांव रजाकनगर निवासी नरेन्द्र कुमार (32 वर्ष) पुत्र रामानंद उत्तर प्रदेश पुलिस में सिपाही के पद पर तैनात था। बताया जाता है कि कुछ दिन पूर्व उनके ताऊ की मृत्यु हो गई थी, जिसके चलते नरेन्द्र कुमार अपने बच्चों के साथ पैतृक गांव आया हुआ था। रविवार रात नरेन्द्र का शव संदिग्ध परिस्थितियों में उसके कमरे के भीतर फांसी पर लटका मिला।

घटना का पता सबसे पहले उसकी पत्नी कविता को चला, जो उसी कमरे में मौजूद थी। उसने परि. जनों को सूचना दी, जिसके बाद घर में चीख-पुकार मच गई। शोकाकुल परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। परिजनों का कहना है कि नरेन्द्र की मौत संदिग्ध है।

वहीं ग्रामीणों की भारी भीड़ घर पर जमा हो गई। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजते हुए मामले की जांच शुरू कर दी है। मृतक सिपाही दादरी में 112 पर तैनात था, जिसे सोमवार की सुबह ही वापस अपनी ड्यूटी पर लौटना था। मृतक अपने पीछे तीन भाई तथा तीन बहने वह एक पुत्र एक पुत्री को रोता बिखता छोड़ गया है।

रेत उतारते समय करंट लगने से ट्रैक्टर चालक की मौत, ट्रैक्टर में लगी आग

शाह टाइम्स संवाददाता

झिंझाना। क्षेत्र के गांव टपराना में सोमवार तड़के दर्दनाक हादसे में एक ट्रैक्टर चालक की मौत हो गई। गांव जमाल पुर निवासी सहदेव (40) ट्रैक्टर-ट्रॉली से रेत उतार रहा था। इसी दौरान 11 हजारी लाइन की चपेट में आने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में ट्रैक्टर के अगले हिस्से में आग भी लग गई। ग्रामीणों ने बताया कि सहदेव सुबह करीब तीन बजे अपने ट्रैक्टर-ट्रॉली से गांव टपराना में हाशिम के मकान पर रेत उतार रहा था। जैसे ही उसने ट्रॉली को जैक द्वारा ऊपर उठाया तो वह ऊपर से गुजर रही हाई टेंशन लाइन से टकरा गई। करंट दौड़ते ही ट्रैक्टर में तेज धमाका हुआ और चालक सहदेव उसकी चपेट में आ गया तथा मौके पर ही उसकी मौत हो गई, जबकि ट्रैक्टर के अगले हिस्से में आग लग गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। गांव टपराना के ग्रामीणों ने विद्युत विभाग के अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि लाइन की ऊंचाई कम होने की शिकायत कई बार की जा चुकी थी, लेकिन लापरवाही के कारण उसे ठीक नहीं किया गया। यदि समय रहते बिजली विभाग ने ध्यान दिया होता, तो यह हादसा टल सकता था। इधर अचानक हुई मौत के घर कोहराम मचा हुआ है। परिवार के लोगों का रो-रोकर बुरा हाल है। मृतक अपने पीछे अपाहिज पत्नी सहित चार पुत्रियों को रोता छोड़ गया है जिसमे सबसे बड़ी बेटी की उम्र पांच वर्ष है। भाई प्रेमपाल की ओर से पुलिस को तहरीर दी है।

खबर का असर: स्टाम्प ओवर रेटिंग प्रकरण की जांच शुरू, हड़कंप

सोशल मीडिया पर वायरल शाह टाइम्स की खबर पर सब-रजिस्ट्रार कार्यालय की ओर से स्वत: संज्ञान लेकर शुरू की गई जांच, लोगो की जेब पर डाका डाल रहे स्टाम्प विक्रेता, जिम्मेदार खामोश के शीर्षक के साथ में शाह टाइम्स अखबार के रविवार के अंक में प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी खबर, जांच शुरू होने से ओवर रेटिंग कर रहे स्टाम्प वेंडर्स में मची खलबली

शाह टाइम्स संवाददाता

कैराना। कैराना कचहरी में स्टाम्प वेंडर्स द्वारा की जा रही ओवर रेटिंग प्रकरण की जांच शुरू हो गई है। ओवर रेटिंग के मामले को शाह टाइम्स ने अपने रविवार के अंक में प्रमुखता से प्रकाशित किया था, जिसकी कटिंग सोशल मीडिया की विभिन्न साइट्स के माध्यम से वायरल हुई थी।

वायरल खबर पर संज्ञान लेकर उप-निबंधक कार्यालय कैराना की ओर से प्रकरण की जांच शुरू की गई है, जिससे ओवर रेटिंग करने वाले स्टाम्प वेंडर्स में हड़कंप मचा हुआ है।

विगत रविवार को शाह टाइम्स अखबार ने कैराना कचहरी में हो रही स्टाम्प की ओवर रेटिंग की खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया था, जिसमें स्टाम्प वेंडर्स द्वारा की जा रही मनमानी को उजागर किया गया था। खबर के माध्यम से सब-रजिस्ट्रार कार्यालय को भी सवालों के कठघरे में खड़ा किया गया था। शाह टाइम्स अखबार में प्रकाशित खबर की कटिंग सोशल मीडिया की विभिन्न साइट्स खूब वायरल हुई थी। वायरल खबर पर उप-निबंधक कार्यालय कैराना द्वारा सोमवार को स्वत: संज्ञान लेकर जांच शुरू की गई है। हालांकि जांच का परिणाम अभी भविष्य के गर्भ में है, लेकिन जांच कार्यवाही से स्टाम्प वेंडर्स में खलबली मच गई है।

इस्लामपुर घसौली निवासी युवक से वसूले गए थे ओवर रेट

शनिवार को कांधला ब्लॉक क्षेत्र के गांव इस्लामपुर घसौली निवासी कुलदीप नामक युवक कैराना कचहरी में स्टाम्प खरीदने के लिए पहुंचा था, जिससे कचहरी प्रांगण में बैठने वाले एक स्टाम्प वेंडर्स ने 1550 रूपए वसूले थे, जबकि स्टाम्प की वास्तविक कीमत 1290 रूपए थी। कुलदीप ने वेंडर्स से ऋण कार्य हेतु कांधला में स्थित यूनियन बैंक प्रबंधक के पक्ष में गोविंद इन्सां स्वामी के नाम से स्टाम्प खरीदे थे।

जिसमें 100 रूपए की कीमत के दस, 50 रूपए के पांच तथा बीस रूपए के दो स्टाम्प शामिल थे। युवक से 260 रूपए ओवर रेट वसूल किया गया था।

युवक द्वारा स्टाम्प वेंडर्स को की गई ट्रांजेक्शन की डिटेल भी जांच अधिकारी को उपलब्ध कराई गई है।

मीडियाकर्मियों का कॉल रिसीव करना मुनासिब नही समझते सब-रजिस्ट्रार

शासन की ओर से नौकरशाही को जनहित से जुड़े मसलों पर मीडिया से संवाद करने हेतु स्पष्ट संदेश दिया गया है ताकि शासन-प्रशासन की छवि अथवा प्रचार-प्रसार से जुड़ी तथ्यात्मक व सटीक सूचनाएं मीडिया के माध्यम से आमजन तक पहुंच सके, परन्तु उप-निबंधक कैराना को शासन की उक्त गाइडलाइंस अथवा सलाह से कोई सरोकार नही है। सब-रजिस्ट्रार कैराना स्वयं को इन सब से श्रेष्ठ समझते है।

वह स्थानीय मीडियाकर्मियों की कॉल रिसीव करना मुनासिब नही समझते है। सोमवार को ओवर रेटिंग प्रकरण की जांच के सम्बंध में कैराना सब-रजिस्ट्रार के मोबाइल नंबर पर तीन बार फोन किया गया, लेकिन उन्होंने कॉल रिसीव नही की। वहीं, उपनिबंधक कार्यालय में तैनात कनिष्ठ सहायक अरुण कुमार का कहना है कि स्टाम्प ओवर रेटिंग के मामले की जांच की जा रही है।

वेदखेडी में गोगा मेहड़ी पर आयोजित हुआ विशाल जागरण एवं भंडारा

शाह टाइम्स संवाददाता

झिंझाना। ग्राम वेदखेडी स्थित प्रसिद्ध गोगा मेहड़ी पर रविवार की देर शाम भव्य जागरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर बाबा गोगा जी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। कार्यक्रम का शुभारंभ कोतवाली प्रभारी जितेंद्र कुमार शर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इसके पश्चात, विभिन्न कलाकारों ने सुंदर भजनों के माध्यम से बाबा का गुणगान किया, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। सोमवार को विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। मौसम में बारिश होने के बावजूद ग्रामीणों की आस्था डगमगाई नहीं और उन्होंने बड़ी संख्या में भंडारे में शिरकत की। गांव की महिलाओं ने मेहड़ी पर पूजा-अर्चना की। भंडारे में सभी श्रद्धालुओं ने कढ़ी-चावल, खीर और हलवे का प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर गुरु रोशन लाल मंहगी, बिरम सिंह, बाबू, नीटू सैनी, अमित सैनी, प्रदीप सैनी, अजय, सुनील, अशोक प्रधान, स्लेटी सिंह, हुकुम सिंह, मोहित आदि गणमान्य लोगों का विशेष सहयोग रहा।

हादसे में ई रिक्शा चालक घायल

शाह टाइम्स संवाददाता

शामली। शहर के बुढाना रोड पर बस चालक द्वारा ई-रिक्शा में टक्कर मार दिए जाने से ई-रिक्शा चालक घायल हो गया। घायल को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

कांधला क्षेत्र के गांव सल्फा निवासी सूरज पुत्र ओमबीर ई-रिक्शा चलाकर अपने परिवार का गुजर बसर करता है। बताया जाता है कि गर्त दिवस वह अपनी ई-रिक्शा लेकर शामली के बुढाना रोड से जा रहा था। इसी दौरान एक बस चालक ने ई-रिक्शा में टक्कर मार दी। जिसके बाद बस चालक मौके से फरार हो गया, जबकि सूरज गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल सूरज को शामली जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसके सिर में और नांक में गंभीर चोट आई है। पीडित ने पुलिस को तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की है।

यमुना में बाढ़, दिल्ली को खतरा

शाह टाइम्स संवाददाता

मिर्जापुर। उत्तर भारत में आसमान से आफत बरस रही है और अब यमुना भी रौद्र रूप धारण कर चुकी है। हरियाणा से लेकर दिल्ली तक खतरे की घंटियां बज चुकी हैं। हथिनी कुंड बैराज से लाखों क्यूसेक पानी छोड़े जाने के बाद अब बाढ़ का खतरा बेहद करीब आ गया है। दिल्ली समेत कई इलाकों में अगले 48 घंटे बेहद भारी साबित हो सकते हैं।

सोमवार को हरियाणा के हथिनी कुंड बैराज में सुबह 4 बजे से जलस्तर बढ़ने लगा था। जो तेजी से 9 बजे तक 3 लाख 29 हजार क्यूसेक के आंकड़े को छूने लगा। जो की इस सीजन का सबसे ज्यादा पानी बताया गया है। बता दें कि 2 लाख 50 हजार क्यूसेक पर यमुना के खतरे का निशान निर्धारित किया गया है और इस वक्त यमुना 2 लाख 40 हजार क्यूसेक को पार कर रही है। सिंचाई विभाग ने बताया कि जिस तरीके से यमुना की कैचमेंट बेल्ट में लगातार बारिश हो रही है और पांवटा साहिब से जो रिपोर्ट मिल रही है उसके हिसाब से आने वाले कई घंटे तक यही स्थिति बनी रहने की आशंका है।

यमुना का जलस्तर

सुबह7 बजे -272645 क्यूसेक
सुबह 8बजे -311032क्यूसेक
सुबह9 बजे -329313 क्यूसेक
सुबह10 बजे -321653 क्यूसेक
दोपहर11 बजे -319367 क्यूसेक
दोपहर 12 बजे -323180 क्यूसेक
दोपहर1 बजे -322416 क्यूसेक
2 दोपहर बजे -303529 क्यूसेक
सभी आंकड़े हथिनी कुंड बैराज के कंट्रोल रूम के अनुसार।

सिंचाई विभाग का कहना है कि अढ़ाई लाख क्यूसेक के बाद यमुना को हाई फ्लड कैटेगरी में रखा जाता है। यानी कि अब खतरा सिर चढ़कर बोल रहा है। नहरों की सप्लाई बंद कर दी गई है और पूरा का पूरा पानी यमुना में छोड़ा जा रहा है। सीधे असर बाढ़ की चपेट में हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कई जिले आएंग। 48 घंटे बाद दिल्ली प्रशासन की तैयारियों की परीक्षा होगी।

नशे पर लगाम पहली प्राथमिकता: संतोष

शाह टाइम्स संवाददाता

अंबेहटा। नकुड़ कोतवाली का कार्यभार संभालते ही संतोष कुमार त्यागी ने कहा कानून व्यवस्था और नशे पर लगाम लगाना पहली प्राथमिकता।

निरीक्षक संतोष कुमार त्यागी ने आज नकुड़ कोतवाली का कार्यभार संभाल लिया है। नवनियुक्त निरीक्षक संतोष कुमार त्यागी ने पदभार ग्रहण करते ही क्षेत्र में कानून-व्यवस्था को मजबूत करने और अपराध पर अंकुश लगाने के लिए ठोस कदम उठाने के साथ-साथ उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि उनकी पहली प्राथमिकता फरियादियों की समस्याओं का त्वरित निपटारा करना, थाना क्षेत्र में शांति बनाए रखना और अपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगाने और विशेष रूप से,नशे की समस्या पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि नकुड़ क्षेत्र में नशे का कारोबार अपराधों की जड़ है। हम इसे जड़ से उखाड़ फेंकेंगे फरियादियों की हर शिकायत को गंभीरता से लेंगे।

सड़क पर गिरा पेड़, आवागमन बाधित

शाह टाइम्स ब्यूरो

अंबेहटा। देदपुरा गांव के पास शीशम का पेड़ गिरा, सड़क अवरुद्ध पुलिस और वन विभाग की टीम मौके पर।

रामपुर मनिहारान रोड पर देदपुरा गांव के निकट बिजली घर के सामने एक पुराना शीशम का पेड़ अचानक गिर गया। इस घटना से सड़क के दोनों ओर आवागमन पूरी तरह अवरुद्ध हो गया, जिससे आने-जाने वाले लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि पेड़ के गिरने से वाहनों का आवागमन ठप हो गया है और राहगीरों को वैकल्पिक रास्तों का सहारा लेना पड़ रहा है।

घटना की जानकारी मिलते ही अबेहटा पुलिस और नकुड़ वन विभाग के अधिकारी देशराज सिंह ने तुरंत मौके पर एक टीम भेजी। उन्होंने बताया कि टीम ने पेड़ को हटाने का कार्य शुरू कर दिया है और जल्द ही यातायात को सुचारू कर दिया जाएगा। अधिकारियों के अनुसार, बारिश या तेज हवा के कारण ऐसा होना संभव है, लेकिन कोई हादसा होने से बच गया। वन विभाग ने लोगों से अपील की है कि ऐसी घटनाओं की सूचना तुरंत दें ताकि समय पर कार्रवाई की जा सके

कस्बे के झाबरी मोहल्ले में एक सदियों पुराना मकान कमजोर पड़ गया है और इसका कुछ हिस्सा भरभरा कर गिरने लगा है।आस -पास रहने लोगों के अनुसार, यदि पूरी बिल्डिंग ढह गई तो आसपास रहने वाले परिवारों के लिए बड़ा हादसा हो सकता है, जिससे इलाके में डर का माहौल व्याप्त हो गया है।मकान की जर्जर स्थिति पहले से ही चिंता का विषय बनी हुई थी, लेकिन पिछले कुछ दिनों से हो रही मूसलाधार बारिश ने इसे और गंभीर बना दिया। सूचना मिलते ही चौकी प्रभारी विकास चारण और लेखपाल और अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचकर जांच में जुटे हैं।

कई गांवों में बना बाढ़ का खतरा

शाह टाइम्स संवाददाता

चिलकाना। पहाड़ों व मैदानी इलाकों में हो रही भारी बारिश के चलते हथिनी कुंड बैराज से लगभग 3 लाख 29 हजार क्यूसेक पानी छोड़े जाने से कई गांवों में बाढ़ का खतरा बन गया है।

भारी जल प्रवाह से यमुना नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है, मैदानी इलाकों में बसे यमुना नदी से सटे ग्रामीण इलाकों में बाढ का खतरा मंडराने लगा है। रविवार को हथिनीकुंड बैराज से यमुना नदी में छोडे गये पानी से मैदानी इलाकों में बाढ जैसे हालात बन गए हैं। यमुना नदी में बढ़ते जलस्तर के कारण खादर क्षेत्र के गांव सोंधेबांस व ग्याजदीनपुर का सम्पर्क जिला मुख्यालय से कट गया है। वहीं ग्राम दुमझेडा, गोविन्दपुर, चोरीमंडी व हैदरपुर आदि में भी पानी मुख्य मार्ग के ऊपर से होकर गांवों में घुस गया है।

यमुना नदी के निकटवर्ती सभी गांवों के खेत पूरी तरह पानी से लबालब नजर आ रहे हैं जिससे किसानों की फसलें बर्बादी के कगार पर हैं तथा किसानों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। यमुना नदी में बढ़ रहे जलस्तर से चिलकाना थाना क्षेत्र के दर्जनों गांव प्रभावित हैं। जिससे ग्रामीणों व किसानों के चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई दे रही हैं।

सती कथा का वर्णन

चिलकाना। सुल्तानपुर नगर के कंकरो वाला शिव मंदिर में चल रही श्री शिव महापुराण के तृतीय दिवस आचार्य विजयकांत भारद्वाज ने भगवान शिव व सती की कथा का सुंदर वर्णन किया।

सोमवार को कथा में आचार्य ने बताया सती दक्ष की कन्या है जिसका विवाह भगवान शिव के साथ हुआ। दक्ष नहीं चाहता था कि सती का विवाह भगवान शिव के साथ हो लेकिन सती की हट के सामने दक्ष की न चली और जगदंबा सती ने भगवान शिव को प्राप्त कर लिया। परंतु जब गृहस्थ जीवन में अहंकार आ जाए तब वह गृहस्थ शांतिपूर्वक नहीं चल पाता। सती ने शिव पर शंका की जिसके कारण सती और शिव का वियोग हो गया अपने अपराध का प्रायश्चित करने के लिए तथा भगवान शिव के अपमान का बदला लेने के लिए सती ने दक्ष के यज्ञ में शरीर का बलिदान कर दिया।

उफान पर यमुना, अलर्ट पुलिस प्रशासन

शाह टाइम्स संवाददाता

सरसावा। पहाड़ी एवं मैदानी इलाकों में हो रही बरसात के चलते नदिया उफान पर है। हथिनीकुंड बैराज से यमुना में छोड़ा गया 3लाख 29 हजार क्यूसेक पानी से यमुना ने रौद्र रूप धारण कर लिया है। कई कई फिट तक पानी की छाल यमुना में उठ रही है।

सोमवार सुबह को हथिनीकुंड बैराज से यमुना में करीब 3 लाख 29 हजार क्यूसेक पानी छोड़ा गया पानी छोड़े जाने की खबर मिलते ही यमुना नदी से सटे गांव झरौली, शाहजहांपुर भिक्कनपुर, हैदरपुर, हुसैनपुर, घघोंड,कुतुबपुर धिक्का कला ,आदि के ग्रामीण सरसावा शाहजहांपुर यमुना पुल स्थित नदी किनारे पहुंचने शुरू हो गए। हालांकि प्रशासन द्वारा लोगों की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस लोगो नदी किनारे से दूर रहने के लिए अनाउंसमेंट करती नजर आई।यमुना नदी खतरे के निशान से 20 सेंटीमीटर नीचे बह रही थी।

बावजूद इसके इलाके के जंगल में कुछ जगह पर यमुना का पानी बाहर निकलना शुरू हो गया था।

नदी के तेज बहाव में बहा युवक

सरसावा। यमुना में हथिनीकुंड बैराज से 3 लाख 29 हजार क्यूसेक पानी छोड़े जाने के बाद यमुना उफान पर आ गई। किनारे पर खड़ा होकर नदी को उफनती देख रहा गांव ढिक्का टपरी का युवक यमुना के तेज बहाव में बह गया।

यमुना का पानी देखने नदी किनारे पहुंचा सोनू 35 वर्ष पुत्र इश्क लाल नदी के तेज बहाव में अचानक पैर फिसलने से बह गया। युवक के नदी में बहने की खबर मिलते ही शाहजहांपुर चौकी प्रभारी रवि कुमार अपनी पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। यमुना के तेज बहाव के चलते गोताखोर भी नदी में उतरने की हिम्मत नहीं जुटा पाए।

काला ताजिया निकाल मनाए जा रहे सोग को किया अलविदा

शाह टाइम्स संवाददाता

नानौता। अलविदाई जलूस काला ताजिया के बाद कर्बला के शहीद इमाम हुसैन का सौग समाप्त हो गया।

नगर में 8 रबि उल अव्वल शहादत हजरत इमाम हसन अस्करी ओर अय्यामे अजा के आखरी दिन नगर कि बारगाहे कसरे फातमी मैँ मजलिस का आयोजन हुआ मजलिस मैँ मरसिया ख्वानी के फराएज जनाब वसी हैदर शब्बू ने अंजाम दिए मजलिस को खिताब करते जहाँ मौलाना तन्वीर आलम साहब ने इमाम हसन असकरी कि शहादत बयां कि वहीँ मजलिस के बाद अलम ए मुबा. रक हजरत अब्बास अलैहिस सलाम ओर शबिहे ताबूत हजरत इमाम हसन असकरी के साथ जलूस बरामद हुआ जब मातमी जलूस इमाम बारगाह दरबारे हुसैन पर पहुंचा तो वहाँ से सियाह ताजिया ओर जुल्जनाह बरामद हुई ये जलूस नाइयो वाली मस्जिद से होते हुए दादा मिराजी दरगाह हजरत इमाम हुसैन अलैहिस सलाम पर जाकर समाप्त हुआ जलूस के बाद मौलाना सैय्यद अली हैदर आब्दी के मकान पर नजर ए मौला का अहत्माम किया गय। जलूस कि समाप्ति पर मौलाना तनवीर आलम ने बताया कि हजरत इमाम हुसैन अलैहिस सलाम ओर कर्बला के मैदान मैँ इस्लाम बचाने के लिए यजीद कि फौज के हाथो शहिद हुए इमाम हुसैन अलैहिससलाम ओर उनके 72 साथियों कि याद मैँ मनाय जाने वाले सौग का आज समापन हो गया ।9 रबि उल अव्वल को पूरी दुनिया के शिया ईद जेहरा मनाएंगे ओर अपनी खुशी के इजहार करेंगे।

चिलकाना। नगर में शिया समुदाय के लोगों ने काला ताजिया व जुल्जना बरामद कर सीनाजनी करते हुए जुलूस निकालकर निकालकर 72 शहीदों की याद में दो महीने आठ दिन से मनाए जा रहे शोक को आज अलविदा किया।

सोमवार को मोहल्ला जाकिर हुसैन स्थित भूतपूर्व चेयरमैन सिराजुल हसन मरहूम की इमामबारगाह में फिरोज हैदर की देखरेख में आयोजित मजलिस को खिताब करते हुए मौलाना गमखार हैदर ने कहा कि यजीद इब्ने माविया द्वारा कर्बला के 72 शहीदों की बीवीयों को भी कैद कर लिया गया था। जो कि 20 चेहल्लुम के रोज रिहा होने के बाद अपने वतन मदीना आ गई थी। मुख्तार जो कि हुसैन अलैहिस्सलाम के चाहने वाले थे जब उनकी हुकूमत आई तो उन्होंने खघ्न ए हुसैन का बदला जालिमों को चुन चुनकर कत्ल करके लिया।

जनाबे मुख्तार ने आठ रबीउल अव्वल को आज ही के दिन जालिमों के कुछ सर तोहफे के तौर पर मदीना में हुसैन अलैहिस्सलाम के घर पहुंचवाए जिसकी खुशी में पूरी दुनिया के शियाओ ने शौक को अलविदा कर खुशी से झूमते हुए नारा ए हैदरी, या अली हुसैनियत जिंदाबाद के नारे लगाए।

मर्सिया खानी तासीर हुसैन, जाबिर गाजी व नोहा खानी आजम, समर अब्बास, कमर अब्बास, फैज, शिबू, बिलाल, अयान ने की। जुलूस में सोगवार सदर अली इमाम, तहरीर अब्बास नकवी, मूसा इमाम, जायर हुसैन चांद तारीफ, काजिम, मुसर्रत रमीज, चंदू, साकिब, अरमान, शाने हैदर, आलमदार, शानू, खतीब, बासी आजादार, रईस हैदर, रेहान हैदर, अली अब्बास सहित सैकड़ों लोग शामिल रहे।

वॉलीबॉल प्रतियोगिता में नकुड़ टीम ने बाजी मारी

अंबेहटा। नकुड थाना आयोजित सर्किल स्तरीय वालीबॉल प्रतियोगिता में स्थानीय पुलिस थानों की टीमें ने उत्साहपूर्ण भागीदारी की। इस प्रतियोगिता का आयोजन पुलिस विभाग द्वारा फिट इंडिया मूवमेंट के तहत किया गया, जिसमें थाना रामपुर मनिहारान, थाना सरसावा और थाना नकुड़ की पुलिस टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में कड़ी मेहनत और बेहतरीन टीम वर्क के दम पर थाना नकुड़ की पुलिस टीम ने प्रथम स्थान हासिल किया। अन्य टीमों ने भी सराहनीय प्रदर्शन किया, लेकिन नकुड़ थाना की टीम ने अंतिम मैच में शानदार जीत दर्ज की। यह आयोजन पुलिसकर्मियों के बीच शारीरिक फिटनेस और खेल भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया था।

ग्रामीणों के साथ रोपित किए पौधे

शाह टाइम्स संवाददाता

बेहट। प्रदेश सरकार द्वारा चलाए जा रहे वृहद वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत एक पेड़ मां के नाम के तहत गांव अस्लमपुर बरथा के ग्राम प्रधान चौधरी रामकुमार ने ग्रामीणों के साथ पौधारोपण किया गया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों को अपने आस पास तथा सार्वजनिक स्थानों पर पेड़ पौधे लगाने की अपील की गई।

ब्लाक सड़ोली कदीम की ग्राम पंचायत बरथा अस्लमपुर के ग्राम प्रधान चौधरी रामकुमार ने बरथा कोरसी में वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत एक पेड़ मां के नाम के तहत ग्रामीणों के साथ आस पास एवं सार्वजनिक स्थानों पर कटहल ,अमरूद पीपल जामुन आदि के वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण करने के उपरांत ग्राम प्रधान चौधरी रामकुमार ने कहा कि हमें अपने स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ वातावरण एवं जलवायु के लिए अपने घरों एवं सार्वजनिक स्थानों पर पेड़ पौधे लगाने चाहिए जिस से हमारे आस पास शुद्ध पर्यावरण के वातावरण संतुलित बना रहता है अत: हमे ज्यादा से ज्यादा संख्या में पेड़ लगाने चाहिए और जो वृक्षारोपण हमने किया है उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी हम सब की बनती है। इस मौके पर सुरेन्द्र चौधरी जनक चौधरी बिट्टू नंदू,राकेश कुमार अमित सुनील आदि ग्रामीण मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाया स्वाभिमान संकल्प कार्यक्रम

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के आह्वान पर आज देशभर के लगभग 5 लाख विद्यालयों में हमारा विद्यालय: हमारा स्वाभिमान संकल्प कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया।

इस अवसर पर लाखों शिक्षक एवं करोड़ों विद्यार्थी एक साथ विद्यालयों की प्रार्थना सभा में शामिल हुए और पांच संकल्प लेकर उद्घोष किया कि हमारा विद्यालय-हमारा स्वाभिमान। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ उत्तर प्रदेश के प्रदेश संयुक्त महामंत्री चौधरी रविन्द्र पंवर ने बताया कि यह कार्यक्रम शिक्षा जगत का ऐतिहा. सिक क्षण है। उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में एक लाख विद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित हुआ। उन्होंने कहा कि विद्यालय केवल भवन नहीं बल्कि संस्कारों का तीर्थ है, जिसे विद्या का मंदिर माना जाता है।

वंशिका प्रथम व दीपक को दूसरा स्थान

शाह टाइम्स संवाददाता

गागलहेडी। एए2 माइक्रो फाइनेंस द्वारा आयोजित परीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन लॉर्ड कृष्णा इंटरनेशल एकेडमी में किया गया। जिसमें वंशिका ने प्रथम व दीपक ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन नितिन यादव व सुचित यादव द्वारा किया गया।

सोमवार दोपहर माइक्रो फाइनेंस के एमडी हिमांशु यादव ने लार्ड कृष्णा इण्टर नेशनल एकेडमी के चैयरमेन डॉ आदित्य यादव को बुक व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।प्रतियोगिता में लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया जिसमें सौ प्रश्न दो घंटे में हल करने थे

प्रतियोगिता में कुल 213 विद्यार्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान वंशिका शर्मा 5100 रुपये शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र , द्वितीय दीपक कुमार 3100 रुपये शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र, तृतीय विकास यादव, 2100 रुपये शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र चतुर्थ से हर्ष यादव, पांचवां सागर कुमार, छठा रक्षित यादव, सातवां राजन कश्यप आठवां आर्यन यादव,नौवां पारस यादव व दसवां स्थान अमित कुमार ने हासिल किया। माइक्रो फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के एमडी हिमांशु यादव द्वारा सभी छात्रों को मेडल, प्रशस्ति पत्र व नगद इनाम देकर सम्मानित किया।

चेयरमैन डॉ आदित्य यादव ने सफलता प्राप्त करने वाले बच्चो को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि एकेडमी प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से बच्चो की प्रतियोगी परीक्षा फोबिया को दूर करने का प्रयास कर रही है। जिससे आगे आने वाले कम्पीटिशन में आप बगैर डरे सफलता हासिल करे।

इस दौरान मैनेजर शिवकुमार, सन्दीप लाकेश, धर्मवीर, विधि, शालू त्यागी, मुस्कान, शिवांगी आदि मौजूद रहे।

दशलक्षण का पांचवां दिन उत्तम सत्य धर्म के रूप में मनाया

शाह टाइम्स संवाददाता

चिलकाना। सुल्तानपुर नगर के जैन समाज के लोगों द्वारा आज दसलक्षण पर्व का पांचवा दिन उत्तम सत्य धर्म के रूप में मनाया गया।

सोमवार को प्रात: काल श्री दिगंबर जैन मंदिर चिलकाना में सांगानेर जयपुर राजस्थान से आये पंडित अरिहंत जैन शास्त्री के नेतृत्व में जैन समाज के लोगों द्वारा मंदिर की में शान्तिधारा व विशेष पूजा अर्चना की गई। इसके पश्चात पंडित अरिहंत जैन शास्त्री ने बताया कि उत्तम सत्य धर्म का तात्पर्य सिर्फ सत्य वचन बोलना ही नहीं है, सत्य धर्म और सत्य वचन दोनों भिन्न-भिन्न है।

उन्होंने बताया कि आत्मा भी एक द्रव है, अत: वह सत्स्वभावी है, सत्स्वभावी आत्मा के अनुभव से आत्मा में जो शांति स्वरूप वीतराग परिणति उत्पन्न होती है उसे सत्य धर्म कहते है। इस अवसर पर जैन समाज के अध्यक्ष राकेश जैन, तरसैन जैन, जिनेंद्र जैन, नगर सभासद अनुपम जैन, अनुज जैन, विनय जैन, श्रेयांश जैन, नितिन जैन, सचिन जैन, सौरभ जैन, मन्नू जैन, नीरज जैन, अनमोल जैन, आशीत जैन, अंकुर जैन, रक्षित जैन आदि द्वारा भावपूर्वक भगवान श्री जी की विशेष पूजा अर्चना की गई।

रामपुर मनिहारान। जैन समाज के दस दिवसीय दशलक्षण महापर्व का पांचवां दिन उत्तम सत्य धर्म के रूप में मनाया गया।

प्रात: मंदिर में श्री चंद्रप्रभु भगवान की प्रतिमा को पाण्डुकशिला पर विराजमान कर अभिषेक और शांतिधारा की गई। श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए पं अंकित शास्त्री ने कहा कि दशलक्षण पर्व का पांचवां दिन उत्तम सत्य धर्म का दिन है। सत्य धर्म का अर्थ है परम सत्य को अनुभव करके और उसका पालन करके ही सच्चा और कुशल जीवन जीना। मनुष्य को जीवन में हमेशा सच बोलना चाहिए। सत्य कभी पराजित नहीं होता सत्य की हमेशा जीत होती हैं। शाम को श्री जी की भव्य आरती की गई। इसके बाद म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता कराई गई।

इस दौरान जैन समाज के प्रधान मनोज जैन, महामंत्री निपुण जैन, अमित जैन, सुधीर जैन, विद्यासागर जैन,शशांक जैन, अतुल जैन, प्रशांत जैन, ललित जैन, अभिषेक शास्त्री, राकेश जैन, आकाश जैन, अर्पित जैन, नमन जैन, आर्जव जैन, नवीन जैन, ललित जैन, शुभम जैन, अंकित जैन , वर्षा जैन, प्रीति जैन, सुनीता जैन, रेणु जैन, माधवी जैन, पूजा जैन, संगीता जैन सृष्टि जैन, गरिमा जैन, करुणा जैन, परख जैन, विनीता जैन, पायल जैन, दीपा जैन सहित समाज के सैकड़ों महिला पुरुष मौजूद रहे।

आदित्य को मिला विशिष्ट सम्मान

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। भारतीय जीवन बीमा निगम के प्रबंध निदेशक दिनेश पंत ने वाराणसी में आयोजित विशेष सम्मान समारोह में वरिष्ठ अभिकर्ता डॉ. आदित्य राठी को उनकी विशिष्ट उपलब्धि के लिए सम्मानित किया।

डॉ. राठी ने अपने कार्यक्षेत्र में निर्धारित लक्ष्यों को समय से पहले पूरा कर ग्राहकों का विश्वास अर्जित किया और संस्था की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। इस अवसर पर पूरे भारत से चुनिंदा व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था, जिनमें डॉ. राठी का नाम प्रमुख रहा। लगभग 29 वर्षों से एलआईसी में सेवा दे रहे डॉ. आदित्य राठी ने अब तक हजारों परिवारों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान की है। वे म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं और दीर्घकालिक निवेश एवं वित्तीय नियोजन पर ग्राहकों को मार्गदर्शन देते रहे हैं। सम्मान प्राप्त करने के बाद डॉ. राठी ने कहा कि यह सम्मान मेरे लिए गर्व का विषय है और मेरे तीन दशकों के समर्पण का प्रतीक है। मैं इस उपलब्धि को अपने ग्राहकों, टीम और परिवार को समर्पित करता हूँ। समारोह में एलआईसी के वरिष्ठ अधिकारी एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

तंत्र क्रिया के बहाने युवती के साथ दुष्कर्म का आरोप

पीडिता के परिजनो ने बसपा कार्यकर्ताओं के साथ कोतवाली पहुंच आरोपी के खिलाफ कार्रवाई करने की लगाई गुहार

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। तंत्र क्रिया के बहाने युवती के साथ दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश में आया है। आरोपी ने युवती के हाथ पैर बांध माता पिता को बेहोश कर वारदात को अंजाम दिया। पीडित परिजनों ने बसपा नेताओं के साथ कोतवाली पहुंच आरोपी के खिलाफ कार्रवाई किये जाने की गुहार लगाई है।

कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी अनुसूचित जाति के परिवार के लोग बसपा के जिला संयोजक सुशील जायसवाल व अन्य कार्यकर्ताओं के साथ कोतवाली पहुंचे। परिवार की युवती की ओर से पुलिस को दी गई तहरीर में बताया गया कि रविवार की शाम मानकी गांव निवासी एक व्यक्ति तंत्र क्रिया के लिए घर आया था। आरोप है कि उसने अपनी विद्या से माता पिता को बेहोश कर दिया, उसके द्वारा विरोध किया गया तो रस्सी से उसके हाथ पैर बांध दिए गए। बाद में आरोपी ने उसकी 20 वर्षीय बहन के साथ दुष्कर्म किया। जाते समय आरोपी किसी भी तरह की कार्रवाई करने पर जान से मारने की धमकी देकर गया। पुलिस का कहना है तहरीर मिल गई है मामले की जांच कर कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

अधीक्षण अभियंता ने फीडर का किया निरीक्षण

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। विद्युत निगम के अधीक्षण अभियंता ने रेलवे रोड के निरीक्षण के दौरान बड़े कनेक्शनों को चैक किया। इस दौरान उन्होंने अधिनस्थों को बिजली चोरी रोकने व लक्ष्य के मुता. बिक राजस्व वसूली किये जाने के लिए दिशा निर्देश दिए।

अधीक्षण अभियंता रविंद्र बाबू ने रेलवे रोड फीडर पर संचालित कई बड़े कनेक्शनों को चैक किया, इसमें सब ठीक पाया गया। इस दौरान उन्होंने स्थानीय अधिकारियों को राजस्व वसूली करने, बिजली चोरी रोकने और अधिक से अधिक नए कनेक्शन किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि लक्ष्य के मुताबिक राजस्व वसूली नहीं हो रही है। इसलिए अभियान चलाकर बकाया वसूली की जाए और बिल जमा न करने वाले उपभोक्ता के कनेक्शन काटे जाएं। उन्होंने कहा कि बिजली चोरी रोकने के लिए लगाता चेकिंग

की गई और बिजली चोरी करने वाले के खिलाफ सीधे एफआईआर दर्ज कराई जाए। इस मौके पर अधिशासी अभियंता विद्युत मृत्यूंजय शाही, उपखंड अधिकारी पुलकित टंडन, अवर अभियंता गुलशन झा, मोहम्मद जीशान, मौहम्मद मुस्तकीम आदि विद्युत अधिकारी व कर्मी मुख्य रूप से शामिल रहे।

फ्लाईओवर के नीचे बने अंडरपास के बाहर डिवाइडर बनाने का कार्य प्रारंभ

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। सड़क हादसों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से प्रशासन ने कदम उठाते हुए फ्लाईओवर के नीचे बने अंडरपास के बाहर स्टेट हाइवे पर डिवाइडर बनाने का कार्य निर्माण कंपनी उपसा ने एसडीएम कोर्ट के बाहर पिलर नंबर-तीन से किया प्रारंभ।

स्टेट हाइवे पर हादसों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। बीते गुरुवार को एसडीएम कोर्ट के बाहर सड़क पार करते समय सीओ आवास में कार्यरत सरकारी रसोईया, उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग निवासी जगदीश की अज्ञात वाहन की टक्कर लगने से मौत हो गई थी। इस दर्दनाक घटना के बाद प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया और सड़क सुरक्षा के दृष्टिगत निर्माण कंपनी को आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए। निर्माण कंपनी अधिकारियों ने बताया कि डिवाइडर के किनारों पर प्लास्टिक शीशे की पट्टियां भी लगाई जाएंगी, ताकि रात के समय वाहन चालकों को दूर से ही डिवाइडर दिखाई दे और दुर्घटनाओं से बचा जा सके। उपजिलाधिकारी युवराज सिंह ने बताया कि डिवाइडर निर्माण कार्य को प्राथमिकता के आधार पर कराया जा रहा है और इसे जल्द ही पूरा करा दिया जाएगा। ताकि सड़क हादसों पर अंकुश लगाया जा सके।

जैन मंदिरों में की गई उत्तम सत्य धर्म की विशेष पूजा अर्चना

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। दशलक्षण महापर्व में पांचवें दिन जैन ंदिरों में उत्तम सत्य धर्म की विशेष पूजा अर्चना की गई। तत्वार्थ सूत्र विधान के पांचवें अध्याय के 42 अर्ध्य चढ़ाए गए।

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर सरागवाड़ा में शांतिधारा व नित्य नियम पूजन हुआ। श्रीजी की शांतिधारा का सौभाग्य स्वाधाय मंडल को प्राप्त हुआ। इस मौके पर आचार्य अरुण सागर महाराज ने कहा कि पांचवां अध्याय हमें यह बताता है कि ये निर्जीव (अजीव) पदार्थ किस प्रकार काम करते हैं और ब्राह्मांड में उनकी क्या भूमिका है। कहा कि जिस प्रकार नहाने से शरीर साफ होता है, वैसे ही सत्य बोलने से मन साफ होता

है। अर्थात् परम सत्य को अपनाना और जीवन में उसके अनुसार आचरण करना ही उत्तम सत्य धर्म है। इस मौके पर अजय जैन, पारुल जैन, उर्मिला जैन, बबीता जैन, सुदेश जैन, अंकित जैन, निलिमा जैन, अन्नू जैन, सुनील जैन व संजीव जैन आदि मौजूद रहे।

लाठी-डंडों से हमला कर युवक को किया घायल

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। युवक पर लाठी-डंडों से हमला कर घायल किये जाने के मामले में मुकदमा दर्ज होने के एक सप्ताह बीत जाने के बाद भी कार्रवाई नहीं किये जाने का लगाया आरोप।

मोहल्ला बड़जियाउलहक निवासी शाहीन ने चार लोगों पर अपने पती पर लाठी-डंडो से हमला कर घायल किये जाने का आरोप लगाया। पीडिता का आरोप हैं कि मुकदमा दर्ज होने के एक सप्ताह बीत जाने के बाद भी पुलिस ने आरो. पियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जिससे उनके हौसले बुलंद हैं और वह उसे तरह-तरह की धमकियां देकर डरा धमका रहे हैं।

बारिश से अस्त व्यस्त रहा जनजीवन

देवबन्द। रुक-रुक कर दिनभर बारिश के चलते जनजीवन अस्त-व्यस्त रहा। हो रही बारिश से जहां बाजारों में ग्राहको की संख्या कम हाने के कारण दुकानदार हाथ पर हाथ रखे बैठे रहे वहीं खेतों में जल भराव से पशुओं के चारे तक की दिक्कत हुई। इतना ही नहीं नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बारिश से जल भराव के कारण लोगो को भारी असुविधा का सामना करना पड़ा।

अल-सुबह हुई बारिश शाम चार बजे तक 80 एमएम को पार कर चुकी थी। जिससे नगर के तालिमाबाद और कहूनी मस्जिद एवं मोहल्ला बड़जियाउल्हक सहित कई निचले क्षेत्रों में पानी भरा हुआ था। इतना ही नहीं भायला फाटक पर निर्माणाधीन ओवरब्रिज के चलते क्षेत्र में पैदल चलना भी दुर्भर हो रहा था। वहीं स्टेट हाइवे स्थित मदनी कॉलोनी, मोहल्ला बेरियान, खानकाह और कासिमपुरा सहित अन्य क्षेत्रों में बारिश के चलते सड़क में मिट्टी का कीचड़ बनने से बुराहाल बना हुआ है। खेतों में अभी अगस्त माह में हुई

695 एमएम बारिश का पानी हो या फिर उत्तराखंड से नदियो और नालो से बहकर आ रहे पानी की निकासी न होने के कई क्षेत्रों में एक पखवाड़े से बाड़ की स्थिति बनाई हुई है। त्रिवेणी शुगर मिल के प्रयोगशाला प्रभारी सुभाष वर्मा ने बताया कि सुबह पांच बजे से आठ बजे तक 40एमएम और आठ बजे के बाद से शाम चार बजे तक 40 एमएम बारिश दिन भर में हो चुकी है। बताया कि जून माह में 305एमए, जुलाई माह में 570 और अगस्त माह में 695 एमएम बारिश हुई है। बताया कि सितंबर माह में अभी बारिश के ओर होने की संभावना बनी हुई है।

बाढ़ पीड़ितों के लिए अरदास

धामपुर। नगर के गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा के दीवान हाल में विशेष कीर्तन दरबार का आयोजन किया गया। यह दरबार धन-धन श्री गुरु तेग बहादुर, भाई मती दास, भाई सती दास एवं भाई दयाला जी की 350वीं शहीदी शताब्दी को समर्पित रहा। कार्यक्रम का आयोजन गुरमुख परिवार (स्व. माता पुष्पा देवी की स्मृति में) द्वारा किया गया, जिसमें दिनेश दुआ, जगदीश दुआ, योगेश दुआ एवं सतीश दुआ ने विशेष भूमिका निभाई। समागम में बड़ी संख्या में संगत ने भाग लिया। इस अवसर पर दुआ परिवार की ओर से श्रद्धालुओं के लिए गुरु का अटूट लंगर एवं ठंडे दूध का वितरण किया गया। गुरुद्वारा प्रबंधक समिति अध्यक्ष स. अमरजीत सिंह, सचिव स. गुरचरन सिंह चावला आदि रहे।

महिला की अवैध हथियार संग फोटो वायरल, पुलिस जांच में जुटी

कांधला। थाना क्षेत्र के गांव डुढार से एक ऐसा मामला सामने आया है जिसने पूरे इलाके में सनसनी फैला दी है।गांव की ही एक महिला की अवैध हथियार संग तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। तस्वीर में महिला ममता पत्नी सुंदर हाथ में अवैध हथियार लिए हुए कैमरे के सामने पूरे आत्मविश्वास के साथ पोज देती दिखाई दे रही हैं। तस्वीर जैसे ही इंटरनेट मीडिया पर वायरल हुई, गांव से लेकर कस्बे और आसपास के इलाकों तक हलचल मच गई। पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटीहुई है।गौर करने वाली बात यह है कि अब तक वायरल होने वाली हथियारबाजी की तस्वीरों में पुरुष और युवा ही नजर आते थे, लेकिन

पहली बार किसी महिला की अवैध हथियार के साथ तस्वीर वायरल हुई है। इससे ग्रामीणों में तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। कोई इसे महज दिखावा और शौक बता रहा है, तो कोई इसे गांव और समाज की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे के रूप में देख रहा है। कई लोग खुलेआम कह रहे हैं कि अगर महिलाएं भी हथियार लेकर फोटो खिंचवाने लगीं तो समाज के लिए यह और भी खतरनाक स्थिति हो सकती है। उक्त महिला का हथियार के साथ फोटो वायरल होने से फोटो को मोबाइल पर एक-दूसरे को दिखाते हुए पूछते नजर आते हैं कि आखिर हथियार आया कहां से और किसने यह तस्वीर वायरल कर दी। नगर एवं क्षेत्र में पुरुष एवं युवा तो पहले ही हथियारों के साथ फोटो खिंचवाकर वायरल करते रहते हैं, लेकिन अब महिलाएं भी इस राह पर चल पड़ीं तो यह समाज में गलत संदेश देगा। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लिया है और जांच में जुट गई है।

महिला और उसके परिवार के बारे में जानकारी एकत्रित की जा रही है। पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि तस्वीर सबसे पहले किस मोबाइल से सोशल मीडिया पर अपलोड हुई और यह हथियार आखिर कहां से आया।थाना प्रभारी निरीक्षक सतीश कुमार ने लोगों से अपील की है कि बिना पुष्टि और जांच किए किसी भी तस्वीर को सोशल मीडिया पर साझा न करें। इस तरह की वायरल तस्वीरें न केवल कानून व्यवस्था पर सवाल खड़ा करती हैं बल्कि लोगों की निजता और सुरक्षा पर भी खतरा पैदा करती हैं। पुलिस ने साफ कहा है कि अवैध हथियार रखने और उसके साथ फोटो खिंचवाने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी, चाहे वह पुरुष हो या महिला।वायरल हुई इस तस्वीर ने यह साबित कर दिया है कि सोशल मीडिया की एक तस्वीर भी पूरे इलाके में हड़कंप मचाने के लिए काफी होती है। अब सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि पुलिस किस तरह से इस हथियार वाली महिला पर कब कार्रवाई करती है।

ब्रजपाल सिंह प्रजापति का स्वागत

नहटौर। ग्राम शादीपुर में राष्ट्रीय प्रजापति महासंघ के प्रदेश प्रभारी पंकज कुमार दक्ष के आवास पर पहली बार पहुंचे नव मनोनीत जिला संगठन मंत्री ब्रजपाल सिंह प्रजापति का समाज के लोगों ने भव्य स्वागत किया। इस दौरान स्वागत से गदगद ब्रजपाल सिंह ने कहा कि बेटियों को भी बेटों के समान शिक्षित बनाना चाहिए। क्योंकि बेटियां परिवार और समाज की असली लाज होती हैं। उन्होंने शिक्षा को समाज की उन्नति का मूल आधार बताया। बता दें कि ब्रजपाल सिंह विश्व हिंदू राष्ट्र सेना बिजनौर के जिला प्रभारी भी हैं और समाज सेवा में निरंतर अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

संविदा कर्मचारी का बिजली चोरी के नाम पर रुपये मांगने का ऑडियो वायरल

कांधला। क्षेत्र के कस्बा एलम बिजली घर पर तैनात एक संविदा कर्मचारी की एक व्यक्ति से बिजली चोरी के नाम पर हजारों रूपए की रकम मांगने का ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। उक्त मामला क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। कस्बा एलम के पूर्वी आजाद नगर निवासी सुभाष पुत्र चंद मकान निर्माण कर रहा है। आरोप है कि सुभाष ने अपने भाई के मकान से कटिया डालकर अपने मकान में लाइट ले रखी है। कई दिन पूर्व एलम बिजली घर पर तैनात संविदा कर्मचारी योगेंद्र पुत्र भवन सिंह अपने साथियों के साथ सुभाष के मकान पर पहुंचा और बिजली चोरी करने का आरोप लगाते हुए वीडियो बनाने शुरू कर दी। उस समय तो सुभाष ने किसी तरह संविदा कर्मचारी और उसके साथियों को समझा बूझाकर कर भेज दिया था। आरोप है कि बाद में संविदा कर्मचारी ने जेई के नाम पर सुभाष को फोन कर बिजली चोरी के नाम पर पच्चीस हजार रूपए की रकम की मांग की। सुभाष के द्वारा संविदा कर्मचारी के द्वारा रूपये की मांग करने की ऑडियो रिकॉर्डिंग कर ली। सुभाष के द्वारा उक्त ऑडियो रिकॉर्डिंग को सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया वायरल ऑडियो क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है। मामले में एलम बिजली घर पर तैनात विद्युत विभाग के जेई सुरेंद्र कुमार का कहना है कि उन्हें मामले की जानकारी नहीं है। अगर संविदा कर्मचारी के द्वारा किसी व्यक्ति से रूपयों की मांग की गई है तो संविदा कर्मचारी के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

कनियान में गूंजी भाजपा की आवाज, हाथ उठाकर दिया समर्थन

कांधला। केंद्र सरकार द्वारा संसद में लाए गए संविधान संशोधन विधायक को लेकर भाजपा ने गांव-गांव तक अभियान छेड़ दिया है। इसी सिलसिले में क्षेत्र के गांव कनियान में भाजपा की ओर से विशाल जनसभा का आयोजन किया गया। सभा में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष और एमएलसी मोहित बेनीवाल का ग्रामीणों ने फूलमालाओं से जोरदार स्वागत किया। भाजपा की बैठक में आसपास के गांवों से लोगों का जमावड़ा शुरू हो गया था। महिलाएं, बुजुर्ग, युवा और किसान सब हाथों में भाजपा के झंडे लिए सभा स्थल पर पहुंचे। पूरा मैदान भारत माता की जय और जय राम के नारों से गूंज उठा। भीड़ का जोश देखकर मंचासीन नेताओं का उत्साह भी दोगुना हो गया।सभा को संबोधित करते हुए मोहि. हत बेनीवाल ने कहा कि केंद्र सरकार का यह कदम ऐतिहासिक है। अब वह दौर समाप्त होगा जब जेल में बैठे नेता सरकार चलाते थे। उन्होंने कहा कि विधेयक को जेपीसी में भेजा गया है और बहुत जल्द इसे कानून का रूप दिया जाएगा।भाजपा नेता ने कांग्रेस, सपा और बसपा को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि विपक्ष की राजनीति केवल भ्रम फैलाने पर टिकी है। चुनाव में हार जाते हैं तो ईवीएम को दोषी ठहराते हैं और जब जीतते हैं तो मशीन सही हो जाती है। उन्होंने विपक्ष पर जाति और धर्म की राजनी. ति करने का भी आरोप लगाया और कहा कि भाजपा का लक्ष्य केवल जनता का विकास है।

सभा के अंत में सैकडों लोगों ने एक साथ हाथ उठाकर संविधान संशोधन विधेयक का समर्थन किया। ग्रामीणों ने कहा कि यह फैसला लो. कतंत्र को मजबूत करेगा और राजनी. ति को नई दिशा देगा। बैठक में भाजपा एवं राष्ट्रीय लोक दल के कई नेताओं ने पहुंचकर सभा को संबोधित किया इस दौरान सैकड़ो लोग मौजूद रहे।

पंचायत में जमीन विवाद बना अखाड़ा, गाली-गलौज के बाद लाठी-डंडे चले

कांधला। थाना क्षेत्र के गांव रामकौर गढ़ी में जमीनी विवाद को सुलझाने के लिए बुलाई गई पंचायत में मारपीट हो गई। लेकिन पंचायत में सुलह समझौता करने के बजाय माहौल अचानक बिगड़ गया। जमीन के टुकड़े को लेकर चली पंचायत इस कदर गरमा गई कि दोनों पक्षों के लोग आपा खो बैठे। बातों-बातों में गाली-गलौज शुरू हुई और फिर मामला हाथापाई तक पहुंच गया। लाठी-डंडे चलने लगे, देखते ही देखते अफरा-तफरी मच गई। झगड़े में एक दंपति लहूलुहान हो गया, वीडियो तूने डाक्टरी परीक्षण कराने के बाद थाने पर तहरीर देकर अभियोग पंजीकृत कराया है। थाना क्षेत्र के गांव गढ़ी रामकौर निवासी गुलाब सिंह का कहना है कि उनके रिश्तेदार श्यामा पुत्र साधु के साथ जमीन का पुराना विवाद चल रहा था। इसी मामले को लेकर पंचायत बुलाई गई थी।

लेकिन पंचायत में श्यामा अपने पक्ष में गांव के ही रामसरण और संजय पुत्र रामकुमार को भी ले आया। चर्चा शुरू हुई ही थी कि किसी बात को लेकर दोनों पक्षों में तकरार बढ़ गई। देखते ही देखते रामसरण और संजय ने उन पर और उनकी पत्नी संतोष पर हमला बोल दिया। आरोप है कि दोनों ने गाली-गलौज करते हुए मारपीट शुरू कर दी और उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी। पंचायत में मौजूद लोगों ने किसी तरह बीच-बचाव कर दोनों की जान बचाई। लेकिन तब तक दंपति बुरी तरह जख्मी हो चुका था। परिजनों ने लहूलुहान हालत में दोनों को साम. ुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भर्ती कराया गया पीड़ित दंपति ने अपना डाक्टरी परीक्षण कराने के बाद थाने पहुंचकर तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की।थाना प्रभारी निरीक्षक सतीश कुमार ने बताया कि पीड़ित की तहरीर पर आरोपी संजय व रामसरण के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। उन्होंने कहा कि पुलिस टीम दबिश दे रही है और शीघ्र ही आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा।

रामलीला सेवा समिति की बैठक

नांगल सोती। मुख्य बाजार वाले शिव मंदिर के कीर्तन भवन में श्री रामलीला सेवा समिति रजिस्टर्ड की एक बैठक रामलीला मंचन की तैयारियों के लिए आयोजित की गई। बैठक रामलीला समिति के अध्यक्ष वीरेंद्र शर्मा, मंत्री सुनील सैनी, कोषाध्यक्ष सुशील शुक्ला, मुकेश शर्मा, गोपाल शर्मा, योगेश शुक्ला, धनीराम जोशी, राजवीर काकरान, गार्विन चौधरी, सिंधुराज सिंह, विजय चौधरी, दिनेश भूईयार, नवीन रहे।

कृष्णा कॉलेज में पोषण सप्ताह का शुभारंभ

'बेहतर जीवन के लिए सही भोजन करें' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता

शाह टाइम्स ब्यूरो

बिजनौर। कृष्णा कालेज में आज पोषण सप्ताह का शुभारम्भ महाविद्यालय प्रबंधक निदेशक राजीव कुमार, चेयरमैन मनोज कुमार, निदेशक पवन कुमार, कृष्णा कालेज ऑफ लॉ के प्राचार्य डा. परवेज अहमद खान, कृष्णा कॉलेज ऑफ साइंस की प्राचार्या डॉ. सीमा शर्मा ने बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया।

गृह विज्ञान विभाग की सभी छात्राओं ने पोस्टर' प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। छात्राओं ने इस वर्ष की थीम 'बेहतर जीवन के लिए सही भोजन करें' और विभागीय थीम सभी के लिए पोषणयुक्त आहार बच्चों से लेकर

बुजुर्गो तक के विषय पर छात्राओं ने अलग-अलग प्रकार के पोस्टर बनाए और समाज को पोषण के प्रति जागरूक किया।

छात्रों ने बताया कि वही बच्चे सफल हो पाएगें जो पौष्टिक भोजन खाएगें। फल, सब्जी, अनाज का सेवन बढ़ाएं, जंक फूड को अपनी प्लेट से दूर रखना चाहिए।

ठगने का आरोप

नजीबाबाद। नेशनल सिक्योरिटी एण्ड एन्टी करप्शन क्राइम प्रिवेन्टिव ब्रिगेड की राष्ट्रीय सचिव सुशीला गुप्ता ने समाजसेवा के नाम पर लोगों को ठगने वाली महिला के खिलाफ आंदोलन की बात कही है। श्रीमती गुप्ता ने कहा कि आदर्शनगर की एक गली निवासी महिला ने उत्तराखण्डी समाज को पिछले करीब दस साल से काफी त्रस्त कर रखा है। इस महिला की अति अब बर्दाश्त से बाहर होने पर पीड़ित काफी लोगों ने उनके पास आकर अपनी पीड़ा बताई। आरोप है कि उक्त महिला ने पहले अपने घर में श्रंगार केंद्र खोल. कर, दरबार सजा कर, कुंभ में खाने की थालियां भेजने के नाम पर फाउंडेशन से मोटी रकम लेकर बेतहाशा धन कमाया। अब उक्त महिला किसी पर भी अपना रौब गालिब कर उसकी इज्जत खराब करने पर उतारू हो जाती है।

विभिन्न स्थानों पर हादसे में दो घायल

कांधला। थाना क्षेत्र के किवाना मोड पर दो बाइको की आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। दोनों बाइकों की भिडंत में एक बाइक सवार घायल हो गया और दूसरा अपनी बाइक उठकर मौके से फरार हो गया। सूचना पर पहुंची 108 एंबुलेंस ने घायल को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। दूसरी और कस्बा निवासी एक युवक की बाइक कीचड़ में फिसल जाने से घायल हो गया। थाना क्षेत्र के गांव मखमूलपूर निवासी रवि गांव भभीसा स्थित अपने रिश्तेदारी में शादी समारोह में शामिल होने के लिए आया था। देर रात बाइक सवार बाइक पर सवार होकर अपने गांव में जा रहा था जैसे ही वह क्षेत्र के किवाना मोड पर पहुंचा तो विपरीत दिशा से आ रहे अन्य बाइक सवार ने टक्कर मार दी आरोपी बाइक सवार मौके से अपनी बाइक उठाकर फरार हो गया और पीड़ित रवि गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल की चीख पुकार सुनकर राहगीरों ने 108 एंबुलेंस सेवा को जानकारी दी। 108 एंबुलेंस कर्मचारियों ने उपचार के लिए नगर के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार कर जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। दूसरी और कस्बे के मोहल्ला खेल निवासी दानिश ने बताया कि वह किसी कार्य से बाइक पर सवार होकर बाजार में आ रहा था तभी सड़क पर फैलें कीचड़ में उसकी बाइक फिसल गई और वह घायल हो गया। आसपास के लोगों ने निकट के प्राइवेट चिकित्सक के यहां भर्ती कराया। पीडित दानिश ने अपना एक ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर सड़क पर फैलै कीचड़ की शिकायत पालिका अध्यक्ष से कर नगर पालिका परिषद के कर्मचारियों को दोषी ठहराया है।

सूचना

मेरी दो दुकानो स्थित सीटी कॉम्पलैक्स देवबन्द के बैनामे संख्या 7682 एवं 7701 दिनांक 30,07,2014 मंगलौर चौकी व जेल देवबन्द के बीच कहीं खो गए हैं। दो

शमशाना पत्नी अस्जद हुसैन

खामपुर, मुजफ्फरनगर

संक्षिप्त खेल समाचार

उ.मुंबई में होगा सांसद खेल महोत्सव

मुंबई, वार्ता। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने हॉकी, कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट, फुटबॉल, जेवलिन, शूटिंग, तीरंदाजी खेलों से खिलाड़ियों को जोड़ने के लिए कांदिवली पश्चिम स्थित एमसीए क्लब में सोमवार को उत्तर मुंबई में सांसद खेल महोत्सव की घोषणा की। गोयल ने मुम्बई स्पोर्ट्स फेडरेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सांसद खेल महोत्सव की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यह महोत्सव 21 सितंबर से 25 दिसंबर के बीच व्यापक स्तर पर आयोजित किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम खेल को हर घर तक पहुंचाने की दिशा में काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य लगभग एक लाख खिलाड़ियों को जोड़ने और भारत में खेले जाने वाले सभी खेलों जैसे हॉकी, कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट, फुटबॉल, जेवलिन, शूटिंग, तीरंदाजी आदि को प्रोत्साहन देने का है। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही हम हमारे खिलाड़ियों को अधिकतम सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं जिससे वो देश के साथ-साथ विश्व में भारत का नाम रोशन कर सकें।

एस20 की नीलामी में एंडरसन और शाकिब उपलब्ध

लंदन, वार्ता। इंग्लैंड के पूर्व तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन, बांग्लादेश के शाकिब अल हसन नौ सितंबर को होने वाले एसए 20 2026 की नीलामी के लिए उपलब्ध 541 खिलाड़ियों में शामिल हैं। नीलामी के लिए एंडरसन सहित इंग्लैंड के कुल 97 खिलाड़ी उपलब्ध हैं जिसमें मोईन अली, एलेक्स हेल्स और एसए20 2025 फाइनल के प्लेयर ऑफ द मैच टॉम एबेल शामिल हैं। एंडरसन ने टी-20 ब्लास्ट में लैंकशायर के लिए खेलते हुए टी-20 क्रिकेट में 11 वर्षों बाद वापसी की थी, वहीं उन्होंने द हंड्रेड में मैनचेस्टर ऑरिजिनल्स के लिए, आठ में से तीन मैच खेले। ऑलराउंडर शाकिब अल हसन और तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान नीलामी के लिए उपलब्ध बांग्लादेश के 14 खिलाड़ियों में शामिल हैं। डी आर्की शॉर्ट और पीटर हत्जोग्लू नीलामी सूची में शामिल केवल दो ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी हैं क्योंकि बीबीएल और एसए20 एक साथ होने वाले हैं। नीलामी में 28 वेस्टइंडीज और 24 श्रीलंकाई खिलाड़ी हैं, जबकि दीपेंद्र सिंह ऐरी नीलामी सूची में शामिल एकमात्र नेपाली खिलाड़ी हैं। एडन मारक्रम, जिन्होंने सनराइजर्स ईस्टर्न केप द्वारा रिटेन न किए जाने का फैसला किया, सूची में दक्षिण अफ्रीका के 300 खिलाड़ियों में प्रमुख हैं, उनके साथ टी-20 विश्व कप 2024 के उपविजेता खिलाड़ी अनरिख नॉर्खिए, क्विंटन डी कॉक, केशव महाराज, तबरेज शम्सी और गेराल्ड कोएत्जी भी शामिल हैं।

महिला एकदिवसीय विश्व कप के लिए पुरस्कार राशि में चार गुना वृद्धि

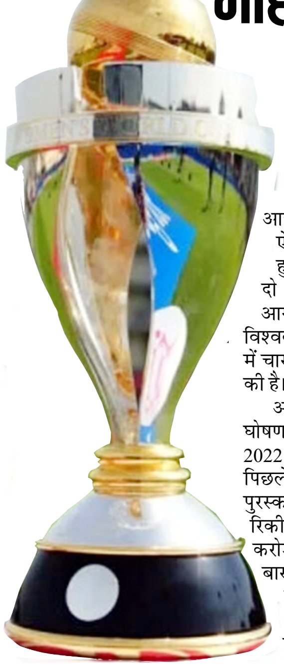

वर्ष 2022 में पुरस्कार राशि 35 लाख अमेरिकी डॉलर थी, जिसे बढ़ाकर 138.8 कर दी

दुबई, वार्ता। आईसीसी ने एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए भारत में 30 सितंबर से दो नवंबर तक होने वाले आगामी महिला एकदिवसीय विश्वकप के लिए पुरस्कार राशि में चार गुना से अधिक की वृद्धि की है।

आईसीसी द्वारा आज की गई घोषणा के अनुसार, न्यूजीलैंड में 2022 में खेले गए इस टूर्नामेंट के पिछले संस्करण में कुल पुरस्कार राशि 35 लाख अमेरिकी डॉलर (लगभग 30-80 करोड़ रुपये) थी। जिसे इस बार बढ़ाकर कुल 138.8 लाख अमेरिकी डॉलर (करीब 117.74 करोड़ रुपये) कर दिया है। यह राशि 2023 में होने वाले पुरुष एकदिवसीय विश्व कप के लिए निर्धारित पुरस्कार राशि एक करोड़ अमेरिकी डॉलर (लगभग 88 करोड़ रुपये) से भी अधिक है। आईसीसी के अध्यक्ष जय शाह ने कहा कि यह घोषणा महिला क्रिकेट के सफर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। पुरस्कार राशि में यह चार गुना वृद्धि महिला क्रिकेट के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है और इसके दीर्घकालिक विकास के प्रति हमारी स्पष्ट प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हमारा संदेश सरल है, महिला क्रिकेटरों को यह पता होना चाहिए कि अगर वे इस खेल को पेशेवर रूप से चुनेंगी तो उनके साथ पुरुषों के समान व्यवहार किया जाएगा। आईसीसी ने टूर्नामेंट के प्रत्येक चरण के लिए पुरस्कार राशि में भी वृद्धि की है। विश्वकप विजेता को अब 44.8 लाख अमेरिकी डॉलर (करीब 39.42 करोड़ रुपये) मिलेंगे। यह 2022 में ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम को मिली 13-2 लाख अमेरिकी डॉलर (11-62 करोड़ रुपये) की राशि से दोगुना से अधिक है। उपविजेता टीम को 22.4 लाख अमेरिकी डॉलर (लगभग 19. 71 करोड़ रुपये) मिलेंगे। हारने वाले दोनों सेमीफाइनलिस्टों को 11-2 लाख अमेरिकी डॉलर (9.86 करोड़ रुपये) मिलेंगे। ग्रुप-स्टेज में प्रत्येक जीत के लिए विजेताओं को 34,314 अमेरिकी डॉलर (30-2 लाख रुपये) मिलेंगे।

जेमी ने टेस्ट क्रिकेट से लिया ब्रेक

● कहा: मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानता हूं कि मैंने इंग्लैंड के लिए दो टेस्ट मैचों सहित 99 प्रथम श्रेणी मैच खेले है

लंदन, वार्ता। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज ऑलराउंडर जेमी ओवरटन ने सोमवार को शारीरिक क्षमता का हवाला देते हुए टेस्ट क्रिकेट से अनिश्चितकालीन ब्रेक लेने की घोषणा की। जेमी ओवरटन ने आज सोशल मीडिया मंच पर अपनी पोस्ट में लिखा कि काफी सोच-विचार के बाद, मैंने लाल गेंद वाले क्रिकेट से अनिश्चितकालीन ब्रेक लेने का फैसला किया है।

मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानता हूं कि मैंने इंग्लैंड के लिए दो टेस्ट मैचों सहित 99 प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं। उन्होंने कहा कि लाल गेंद वाले प्रथम श्रेणी क्रिकेट ने मेरे पेशेवर करियर की नींव रखी है और अब तक मुझे खेल में मिले हर अवसर का प्रवेश द्वार रहा है। यहीं से मैंने खेल सीखा और इसने मेरे लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं को बल दिया जो मुझे इतने लंबे समय तक प्रेरित करती रहीं। हालांकि, मेरे करियर के इस पड़ाव पर, 12 महीने के कैलेंडर में क्रिकेट की मांगों के साथ, अब हर स्तर पर सभी प्रारूपों के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध होना, शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से, संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि आगे मेरा ध्यान सफेद गेंद वाले क्रिकेट पर रहेगा और मैं उच्चतम स्तर पर खेलने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास जारी रखूंगा। 2022 में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने वाले ओवरटन ने अब तक केवल दो टेस्ट मैच खेले हैं, उनका आखिरी मैच हाल ही में समाप्त हुई घरेलू श्रृंखला में भारत के खिलाफ ओवल में था। इस ऑलराउंडर ने टेस्ट की दो पारियों में केवल दो विकेट लिए और नौ रन बनाए।

2012 में सरे के साथ शुरू हुआ उनका प्रथम श्रेणी करियर थोड़ा ज़डादा शानदार रहा है, जहां 31 वर्षीय ओवरटन ने 21-51 की औसत से 2410 रन बनाए हैं, जिसमें एक शतक और 13 अर्द्धशतक शामिल हैं। गेंदबाजी में, उन्होंने 99 मैचों में 31-66 की औसत से 239 विकेट लिए हैं।

चंद्रशेखर-प्रशांत की भारतीय जोड़ी ने किया बड़ा उलटफेर

● चंद्रशेखर और विजय की भारतीय जोड़ी ने एक सेट से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए सेमीफाइनलिस्ट जोड़ी को 3-6, 6-3, 6-4 से हराया

न्यूयॉर्क, वार्ता। भारत के अनिरुद्ध चंद्रशेखर और विजय सुंदर प्रशांत ने यूएस ओपन 2025 टेनिस टूर्नामेंट के पुरुष युगल वर्ग के पहले दौर में आठवीं वरीयता प्राप्त अमेरिकी की इवान किंग और क्रिश्चियन हैरिसन की जोड़ी को हराकर बड़ा उलटफेर किया।

मुकाबले में अनिरुद्ध चंद्रशेखर और विजय सुंदर प्रशांत की भारतीय जोड़ी ने एक सेट से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए इस साल के फ्रेंच ओपन की सेमीफाइनलिस्ट जोड़ी को 3-6, 6-3, 6-4 से हराया। आठवें गेम में अपनी सर्विस गंवाने के बाद भारतीय जोड़ी ने पहला सेट गंवा दिया, लेकिन दूसरे गेम के छठे गेम में अमेरिकी जोड़ी की सर्विस तोड़कर वापसी की और निर्णायक सेट तक का सफर तय किया। अनिरुद्ध चंद्रशेखर और विजय सुंदर प्रशांत की जोड़ी ने तीसरे सेट में भी अपनी लय बरकरार रखी और शुरुआती गेम में इवान किंग और क्रिश्चियन हैरिसन की सर्विस तोड़कर मैच के बाकी समय तक अपनी सर्विस बचाए रखी। अंतिम क्षणों में वैकल्पिक खिलाड़ी के रूप में ड्रॉ में प्रवेश करने वाली भारतीय जोड़ी दूसरे दौर में ब्राजील के फर्नांडो रोम्बोली और ऑस्ट्रेलिया के जॉन-पैट्रिक स्मिथ की जोड़ी के साथ मुकाबला करेगी। हालांकि, पुरुष युगल ड्रॉ में भारत की ऋत्विक चौधरी बोलिपल्ली और एन-श्रीराम बालाजी की जोड़ी अपने पहले दौर के मैच से आगे नहीं बढ़ पाई। भारतीय जोड़ी बार्ट स्टीवंस और वासिल किरकोव की डच-अमेरिकी जोड़ी के खिलाफ 3-6, 7(10)-6(8), 6-4 से हार गई और साल के आखिरी ग्रैंड स्लैम से बाहर हो गई।

सबालेंक, नोवाक व अल्काराज क्वार्टरफाइनल में

● एकल वर्ग के मुकाबले में सबालेंका ने स्पेन की किस्ट्रीना बुक्सा को 6-1, 6-4 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया

न्यूयॉर्क, वार्ता। विश्व की नंबर एक खिलाड़ी आर्यना सबालेंका, सर्बियाई टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच और स्पेन के दिग्गज कार्लोस अल्काराज ने अपने-अपने मुकाबलों में जीत दर्ज कर यूएस ओपन के क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली है। लुइस आर्मस्ट्रांग स्टेडियम में एकल वर्ग के मुकाबले में सबालेंका ने स्पेन की क्रिस्टीना बुक्सा को 6-1, 6-4 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। अपने शुरुआती तीन राउंड में कड़ी परीक्षा दे चुकी गत चैंपियन को फ्लशिंग मीडोज में विश्व की 95वें नंबर की खिलाड़ी को हराने और लगातार पांचवीं बार अंतिम-आठ में जगह बनाने में केवल 73 मिनट लगे। सबालेंका का अगले दौर में मुकाबला कजाकिस्तान की एलिना रिबाकिना और चेक गणराज्य की मार्केटा वोंद्रासोवा के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा। आर्थर ऐश स्टेडियम में रविवार रात नोवाक जोकोविच ने जर्मनी के जान-लेनार्ड स्ट्रफ को हराकर एक ही सीजन में चारों ग्रैंड स्लैम के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले सबसे उम्रदराज़ खिलाड़ी बनकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। वहीं अल्काराज ने ओपन युग में 13 ग्रैंड स्लैम क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बनने की उपलब्धि हासिल की। एक घंटे 49 मिनट तक चले मुकाबले 38 वर्षीय सर्बियाई खिलाड़ी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जर्मन क्वालीफायर जान-लेनार्ड स्ट्रफ को 6-3, 6-3, 6-2 से हराकर अपने करियर के 14वें यूएस ओपन क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। जोकोविच का अगला मुकाबला अमेरिकी नंबर 4 सीड टेलर फ्रिट्ज से होगा, जिन्होंने इससे पहले चेक गणराज्य के टॉमस मचाक को सीधे सेटों में हराया था। मैच के बाद साक्षात्कार में जोकोविच ने कहा कि अगर आप अच्छी सर्विस करते हैं तो यह निश्चित रूप से मददगार होता है। मुझे लगता है कि पिछले राउंड में और आज भी मेरी सर्विस बहुत अच्छी रही। शायद मुझे उतनी मेहनत करने की ज़रूरत नहीं है।

अपने करियर के ज़डादातर समय मैं बेसलाइन से दौड़ता, फिसलता और घिसटता रहा हूं। लेकिन जब सही समय आता है, तो मैं आक्रामक होने का प्रयास करता हूं। रात भी ऐसा ही हुआ। इस जीत के साथ जोकोविच ने रोजर फेडरर और आंद्रे अगासी को भी पीछे छोड़ दिया, जो दोनों 13-13 यूएस ओपन क्वार्टर फ़ाइनल में पहुंचे थे, और अब वह 14-14 के साथ अकेले खड़े हैं। ओपन एरा रिकॉर्ड बुक में अब वह केवल कॉनर्स से पीछे हैं, जो 17 क्वार्टर फाइनल तक पहुंच चुके हैं।

आकर्शी कश्यप को मिला एनटीपीसी कोरबा का समर्थन

रायपुर, वार्ता। भारत की उभरती हुई बैडमिंटन स्टार आकर्शी कश्यप को एनटीपीसी कोरबा ने अपनी सीएसआर पहल के तहत समर्थन दिया है। आकर्शी ने लागोस इंटरनेशनल क्लासिक्स 2025 में रजत पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया है। आकर्शी ने अपनी खुशी व्यद्र करते हुए कहा कि यह उपलब्धि एनटीपीसी कोरबा और मेरे शुभचिंतकों के निरंतर समर्थन के बिना संभव नहीं थी। यहां का अनुभव मुझे और कड़ी मेहनत करने और बड़ी सफलता हासिल करने के लिए प्रेरित करता है। आकर्शी की अगली चुनौती वियतनाम इंटरनेशनल सीरीज़ है जो नौ से 14 सितंबर 2025 तक खेली जाएगी।

सोनी बेकर द. अफ्रीका के खिलाफ करेंगे अंतर्राष्ट्रीय एकदिवसीय क्रिकेट में पदार्पण

● सोनी बेकर ने मैनचेस्टर ओरिजिनल्स के लिए 145 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करते हुए सात मैचों में 9 विकेट हासिल किए

हेडिंग्ले, वार्ता। हैम्पशायर के तेज गेंदबाज सोनी बेकर मंगलवार को दक्षिण अफ्रीका के साथ इंग्लैंड की एकदिवसीय श्रृंखला के पहले मैच से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करेंगे। 22 वर्षीय बेकर ने अब तक केवल 11 लिस्ट ए मैच खेले हैं, लेकिन हंड्रेड के दौरान उन्होंने शानदार प्रदर्शन कर सबका ध्यान अपनी ओर खींचा। उन्होंने मैनचेस्टर ओरिजिनल्स के लिए 145 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करते हुए सात मैचों में नौ विकेट लिए। उन्होंने सर्दियों में लायंस के साथ प्रभावशाली प्रदर्शन किया और इस साल की शुरुआत में उन्हें इंग्लैंड का अनुबंध मिला। चैंपियंस ट्रॉफी के बाद अपना पहला एकदिवसीय मैच खेल रहे जोफ्रा आर्चर और ब्रायडन कार्से इंग्लैंड के तेज गेंदबाजी आक्रमण में उनके साथ शामिल होंगे। हैरी ब्रुक दूसरी श्रृंखला में एकादश की कप्तानी कर रहे हैं, जबकि जेमी स्मिथ और बेन डकेट अपनी सलामी जोड़ी बनाये रखा गया है। पहले एकदिवसीय मैच के लिए इंग्लैंड की एकादश इस प्रकार है:- जेमी स्मिथ, बेन डकेट, जो रूट, हैरी ब्रुक (कप्तान), जोस बटलर (विकेटकीपर), जैकब बेथेल, विल जैक्स, ब्रायडन कार्स, जोफ्रा आर्चर, आदिल राशिद और सन्नी बेकर।

टेनिस प्रीमियर लीग का ऐतिहासिक सातवां सीजन अहमदाबाद में

मुंबई, वार्ता। अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) के तत्वावधान में आयोजित होने वाली टेनिस प्रीमियर लीग (टीपीएल) का सातवां सीजन नौ से 14 दिसंबर तक अहमदाबाद के गुजरात विश्वविद्यालय टेनिस स्टेडियम आयोजित होगा। महाराष्ट्र के बाहर पहली बार आयोजित होने वाले टीपीएल के सातवें सीजन में लिएंडर पेस, सानिया मिर्जा, महेश भूपति, रकुल प्रीत सिंह और सोनाली बेंद्रे जैसे दिग्गजों द्वारा समर्थित आठ-फ्रैंचाइजी प्रतियोगिता में एटीपी रैंकिंग में 30 से 50 के बीच रैंकिंग वाले अंतर्राष्ट्रीय टेनिस सितारे, दो बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन रोहन बोपन्ना सहित भारत के शीर्ष खिलाड़ी शामिल होंगे। टीपीएल के सह-संस्थापक, कुणाल ठाकुर ने इस अवसर पर कहा कि हमें टीपीएल को पहली बार गुजरात में लाकर खुशी हो रही है। शहर की ऊर्जा, बुनियादी ढांचा और खेलों के प्रति जुनून इसे एक आदर्श मेजबान बनाते हैं। सातवां सीजन अहमदाबाद के प्रशंसकों के लिए विश्व स्तरीय टेनिस एक्शन प्रदान करते हुए एक विशेष संस्करण होने का वादा करता है। गुजरात टेनिस संघ के सचिव श्रीमल भट्ट ने कहा कि गुजरात के इतिहास में पहली बार, 30 से 50 वर्ष की आयु के शीर्ष एटीपी रैंकिंग वाले खिलाड़ी हमारे राज्य में आ रहे हैं। यह गुजरात में टेनिस के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन होगा।

दक्षिण कोरिया ने बांग्लादेश को, मलेशिया ने चीनी ताइपे को हराया

राजगीर, वार्ता। दक्षिण कोरिया ने सोमवार को बांग्लादेश को हराकर एशिया कप के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। वहीं मलेशिया की टीम ने चीनी ताइपे को एकतरफा मुकाबले में 15-0 से रौंदा। बिहार स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी हॉकी स्टेडियम, खेले गए क्वार्टर फाइनल के ग्रुप बी में दक्षिण कोरिया ने बांग्लादेश को 5-1 के विशाल अंतर से पराजित कर सुपर फोर में अपनी जगह पक्की कर ली है।

मैच की शुरुआत से ही दक्षिण कोरियाई टीम ने अपनी आक्रामक खेल का प्रदर्शन किया। टीम के स्टार खिलाड़ी डेन सोन ने शानदार मैदानी गोल दागकर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। इसके दो मिनट बाद ही कोरिया ने पेनाल्टी कॉर्नर पर गोल दागकर टीम की बढ़त को दोगुना कर दिया। इसके बाद दूसरे क्वार्टर में भी दक्षिण कोरिया का दबदबा बना रखा 16वें मिनट में सिंगबू ली ने मैदानी गोल दागकर स्कोर 3-0 कर दिया। इसके बाद 22वें मिनट में सेयोंग ओह ने चौथा गोल दागकर स्कोर 4-0 पहुंचा दिया। इसी दौरान 22वें मिनट में ही शोहानुर शोबुज ने पेनाल्टी कॉर्नर पर बांग्लादेश की टीम के लिए गोल किया। मैच के अंतिम क्षणों में दक्षिण कोरिया ने उन्हें मिले पेनाल्टी स्ट्रोक को अनुभवी खिलाड़ी जिहुन यांग ने गोल दागकर 5-1 के स्कोर के साथ अपनी टीम की जीत पक्की कर दी। वहीं एक अन्य मैच में मलेशिया ने चीनी ताइपे को एकतरफा मुकाबले में 15-0 से हराया।

वेस्ट दिल्ली लायंस ने जीता डीपीएल का खिताब

● नितीश राणा ने एक विकेट लेकर 79 रनों की पारी भी खेली, वेस्ट दिल्ली लायंस ने सेंटर दिल्ली किंग्स को हराया

नई दिल्ली, वार्ता। नितीश राणा (एक विकेट/79रन) के हरफनमौला प्रदर्शन की बदौलत वेस्ट दिल्ली लायंस ने सेंट्रल दिल्ली किंग्स को छह विकेट से हराकर दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) 2025 का खिताब अपने नाम किया।

अरुण जेटली स्टेडियम में रविवार रात हुए रोमांचक फाइनल मुकाबले में सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में सात विकेट पर 173 रनों का स्कोर खड़ा किया। युगल सैनी ने 48 गेंदों में 65 रन बनाये। प्रांशु विजयरन ने 25 गेंदों में 50 रनों की पारी खेली। आर्यन राणा (21), सिद्धार्थ जून (10) और जोंटी सिद्धू ने 10 रनों का योगदान दिया। मैच की शुरुआत में ही किंग्स का शीर्ष क्रम दबाव में लड़खड़ा गया और नियमित अंतराल पर विकेट गिरते रहे। एक समय तो वे 78/6 के स्कोर पर लड़खड़ा रहे थे और वेस्ट दिल्ली लायंस पूरी तरह से नियंत्रण में दिख रही थी। जब युगल सैनी और प्रांशु विजयरन क्रीज पर आए तो कहानी नाटकीय रूप से बदल गई। दोनों ने धैर्य, संयम और चतुराई भरे शॉट चयन का परिचय देते हुए सातवें विकेट के लिए 78 रनों की शानदार साझेदारी की। युगल ने 48 गेंदों पर 65 रनों की दृढ़ पारी खेलकर पारी को संभाला, जिसमें लगातार रन बनाने के साथ-साथ समय पर चौके भी शामिल थे। दूसरे छोर पर, प्रांशु ने शानदार आक्रामक खेल दिखाया और सिर्फ़ 24 गेंदों पर नाबाद 50 रनों की शानदार पारी खेली। अंतिम ओवरों में उनके निडर स्ट्रोक्स ने सुनिश्चित किया कि किंग्स न केवल वापसी करें, बल्कि लायंस के शुरुआती दबदबे को कम करते हुए शानदार लय भी बनाए रखें।वेस्ट दिल्ली लायंस के लिए मनन भारद्वाज और शिवांक वशिष्ठ ने दो-दो विकेट लिये। नितीश राणा, शुभम दुबे, मयंक गुसाई ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। 174 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए, सेंट्रल दिल्ली किंग्स के गेंदबाजों सिमरजीत सिंह और अरुण पुंडीर ने लगातार दो विकेट झटके, जिससे पांचवें ओवर में ही 48/3 के स्कोर पर लायंस की स्थिति खराब हो गई। ऐसे संकट के समय कप्तान राणा ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। उन्होंने मयंक गुसाईं के साथ मिलकर 42 रनों की साझेदारी करके टीम को जीत की राह पर बनाए रखा। गुसाईं (11 गेंदों पर 15 रन) तेजस बरोका का शिकार बने, लेकिन तब तक कप्तान ने नियंत्रण हासिल कर लिया था। इसके बाद राणा को ऋतिक शौकीन के रूप में एक आदर्श साथी मिला और दोनों ने सुनिश्चित किया कि आगे कोई झटका न लगे।

केरल पर्यटन मंत्री आज सीताथोर्ड कायकिंग उत्सव का करेंगे उद्घाटन

● प्रतियोगिताओं का आयोजन पुरुष-महिला, पुरुष युगल, महिला युगल और मिश्रित श्रेणियों में होगा

पथनमथिट्टा, वार्ता। केरल के पर्यटन मंत्री पी ए मोहम्मद रियास मंगलवार को सीताथोड़ में राज्य पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित कोडियेरी बालकृष्णन मेमोरियल सीताथोड कयाकिंग महोत्सव के पहले संस्करण का उद्घाटन करेंगे।

सुबह 9:30 बजे शुरू होने वाले इस कार्यक्रम में उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता विधायक केयू जनीश कुमार करेंगे जबकि उपाध्यक्ष चित्तयम गोपकुमार कोन्नी में सीताथोड़ अग्निशमन केंद्र के पास कक्कट्टार नदी में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं को हरी झंडी दिखाएंगे। पर्यटन विभाग के अंतर्गत केरल एडवेंचर टूरिज्म प्रमोशन सोसाइटी (केएटीपीएस) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को तकनीकी रूप से केरल कयाकिंग सोसाइटी और कैनोइंग एसोसिएशन का समर्थन प्राप्त है। प्रतियोगिताओं का आयोजन पुरुष, महिला, पुरुष युगल, महिला युगल और मिश्रित श्रेणियों में किया जाएगा जो 15 वर्ष से अधिक आयु के कयाकरों के लिए खुली है। कुल 110 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया है जिनमें पुरुष एकल में 40, महिला एकल में 14, पुरुष युगल में 34, महिला युगल में आठ और मिश्रित युगल में 14 प्रतिभागी शामिल हैं। इस महोत्सव में केरल के बाहर चार राज्यों से 12 कयाकर तथा यूक्रेन और नेपाल से दो अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी भी शामिल हो रहे हैं। प्रतिभागियों के लिए लाइफ जैकेट पहनना अनिवार्य है जबकि कयाक, जैकेट और पैडल केएटीपीएस द्वारा उपलब्ध कराए जाएंगे।

पीईटी परीक्षा को शांतिपूर्वक कराएं सम्पन्न: डीएम

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। जिलाधिकारी मनीष बंसल ने आगामी 6 व 7 सितम्बर को प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा पीईटी 2025 परीक्षा की तैयारियों समीक्षा की तथा सम्बंधितों को परीक्षा को शांतिपूर्ण, निष्पक्षता एवं शूचितापूर्ण सम्पन्न कराने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी मनीष बंसल ने कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में कहा कि सभी जोनल, सेक्टर एवं स्टेटिक मजिस्ट्रेट, संबधित अधिकारीगण, केन्द्र पर्यवेक्षक परीक्षा के सफल संचालन एवं परीक्षा को शान्तिपूर्वक, निष्पक्षता एवं शुि. चतापूर्ण सम्पन्न कराने के लिए लगन से सौंपे गये दायित्वों का निर्वहन करना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिए कि परीक्षा को पूर्व परीक्षाओं की भांति पूरी पारदर्शिता के साथ नकल. विहीन संपन्न करायी जाये। इसकी संवेदनशीलता, शुचिता एवं पारदर्शिता किसी भी स्तर पर भंग न हो, यदि कोई भंग करने का प्रयास करेगा तो उसके विरूद्ध कडी कार्यवाही की जाएगी। उन्होने रोडवेज, रेलवे, एआरटीओ, एसपी यातायात तथा सिटी मजिस्ट्रेट को दिए निर्देश कि परीक्षार्थियों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। सुनिश्चित किया जाए कि परीक्षार्थियों से होटल संचालक, टैम्पोर्ध्ई-रिक्सा चालक अतिरिक्त दरें न वसूलें। निर्धारित दर पर ही व्यवस्था हो। सिटी मजिस्ट्रेट होटल प्रबन्धकों के साथ परीक्षा के दृष्टिगत बैठक करें। श्री बंसल ने कहा कि जनपद में काफी संख्या में अभ्यर्थियों का मूवमेंट होगा। किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो, इसलिये रेलवे व परिवहन विभाग के अधिकारी समय रहते सभी तैयारियां पूर्ण कर लें। उन्होंने अभ्यर्थियों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचने की भी व्यवस्था किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने परीक्षा में महिला अभ्यर्थी भी शामिल होंगी, उनकी सुरक्षा के लिये विशेष प्रबंध किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि अभ्यर्थियों के साथ मधुर व्यवहार किया जाए एवं उनके बैग इत्यादि रखवाने की उचित व्यवस्था की जाए। उन्होने रोडवेज को निर्देश दिए कि अभ्यर्थियों हेतु अतिरिक्त बसों का संचालन सुनिश्चित किया जाए। प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा जनपद में 41 परीक्षा केंद्रों पर संपादित होगी जिसमें 79584 अभ्यर्थी शामिल होंगे। प्रत्येक पाली में 19896 सम्मिलित अभ्यर्थी होंगे। परीक्षा दो पालियों में पूर्वान्ह 10 से 12 बजे तक एवं द्वितीय पाली अपरान्ह 3 बजे से 5 बजे तक होगी। जिलाधिकारी ने सम्बन्धित जोनल, सेक्टर एवं स्टैटिक मजिस्ट्रेट को निर्देश दिए कि परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण करना सुनिश्चित करें ताकि कोई भी कमी ना रहे। इसके साथ ही कि परीक्षा केन्द्रों पर सीसीटीवी, विद्युत व्यवस्था, पेयजल, शौचालय एवं आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था भी सुनिश्चित कर लें। उन्होने कहा कि सभी स्टैटिक मजिस्ट्रेट अपने-अपने परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा के दिनांकों को प्रथम एवं द्वितीय पाली हेतु प्रात: 7 बजे से परीक्षा केन्द्रों पर अनिवार्य रूप से उपस्थित होकर आयोग के अनुदेशों के अनुरूप परीक्षा के दिन समस्त अपेक्षित कार्यवाही समय पर सम्पादित करेंगे। तैनात सभी सैक्टर मजिस्ट्रेट परीक्षा के दिनांकों को गोप. नीय परीक्षा सामग्री को प्राप्त करने के लिये प्रथम पाली हेतु प्रात: 5 बजे एवं द्वितीय पाली हेतु 10 बजे कोषागार डबल लॉक को समय पर खोलेंगे।

बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रशासन संतोष बहादुर सिंह, एसपी सिटी व्योम बिंदल, सिटी मजिस्ट्रेट कुलदीप सिंह, जिला विद्यालय निरीक्षक, जोनल, स्टेटिक मजिस्ट्रेट, सैक्टर मजिस्ट्रेट, केन्द्र पर्यवेक्षक सहित प्रधानाचार्यगण उपस्थित रहे।

फादर जॉन चिमन की सिल्वर जुबली मनाई

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। सेक्रेड हार्ट चर्च मैं फादर जॉन चिमन की सिल्वर जुबली धूमधाम से मनाई गई।

सेक्रेड हार्ट चर्च में आज फादर जॉन चिमन को पुरोहित बने पूरे 25 वर्ष हो गए हैं इस मौके पर कई राज्यों से बाहर से पुरोहित भी इस समारोह में शामिल हुए। फादर टाइट्स ने बताया फादर जॉन का जन्म पंजाब राज्य के जिले गुरदासपुर में हुआ था सेंट चार्ल्स सेमिनरी नागपुर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और साथ में ही पत्रकारिता और जनसंपर्क का अध्ययन भी किया। फादर जॉन चिमन की पहली नियुक्ति उनके ईसानगर होली फैमिली चर्च में सहायक पुरोहित के रूप में हुई और अब वह सहारनपुर में मैनेजर है। चर्च में प्रार्थना सभा बाहर से आए पुरोहितों ने की और लोगों को उपदेश दिया उसके बाद परम प्रसाद भी लोगों को दिया गया जो केवल ईसाई समाज के रोमन कैथोलिक लोगों को ही दिया जाता है बीसी ग्रुप के सब लीडरों ने एक-एक पाठ पढ़ा और उसे पाठ का महत्व भी बताया।

कैथोलिक सदस्य नीरज जॉय ने कहा फादर ने पत्रकारिता की उपाधि ले रखी है इसलिए वह यहां जहां भी रहे वहां उन्होंने पत्रकारों से अपने मधुर संबंध बना रखे थे और अब सहारनपुर में सेंट मेरिज अकैडमी के प्रबंधक के तौर पर नियुक्त किए गए हैं। संचालन ईवा और वेरोनिका ने किया। इस मौके पर फादर जॉन मेंडोंसा, फादर जोमन जोसेफ, फादर पकिया नाथन, फादर एंटो जोसेफ, फादर टाइट्स, फादर कमलेश, फादर थॉमस, फादर समूल, सिस्टर जीवन लता, सिस्टर शीला सोलंकी, रोहन, अनुपम फ्रांसिस, माइकल सोलोमन, मास्टर अजय, अनुष्का, अलेक्स जॉय, केमिस्टर, एडवीना, प्रमिला मसीह, सरोज मसीह मौजूद रहे।

नगर आयुक्त ने किया गैराज का निरीक्षण

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। निगम गैराज पर एक और मंजिल बनायी जायेगी। इसके लिए नगरायुक्त ने अधिकारियों को आकलन कर प्रस्ताव प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। नगरायुक्त शिपू गिरि आज गैराज का निरीक्षण कर रहे थे।

नगरायुक्त शिपू गिरि ने आज गैराज का निरीक्षण करते हुए गैराज का शेष कार्य शीघ्र पूरा करने और गैराज परिसर को साफ सुथरा रखने के निर्देश दिए। उन्होंने वाहनों को डीजल देने की प्रक्रिया की बारीकी से जानकारी ली और वाहनों के प्रयोग व उनके रखरखाव के बारे में भी जानकारी ली। प्रतिबंधित पालीथिन अभियान के तहत जब्त की गई पालीथिन का ढेर देखकर उन्होंने उसका निस्तारण करने के भी निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान अधिशासी अभियंता व गैराज प्रभारी वी बी सिंह, जी एम स्मार्ट सिटी दिनेश सिंघल, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रवीण शाह, मुख्य सफाई निरीक्षक इंद्रपाल व परमानंद सहित अनेक अधिकारी मौजूद रहे।

एफबीडी के शिविर में 101 लोगों का स्वैच्छिक रक्तदान

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। फैमिली ऑफ ब्लड डोनर्स ट्रस्ट व होटल रॉय ल रेजीडेंसी के संयुक्त रक्तदान शिविर में 101 लोगों ने रक्तदान किया तथा 200 से अधिक रक्तदाताओं को ट्रस्ट की ओर से सम्मानित किया गया।

आज फैमिली ऑफ ब्लड डोनर्स ट्रस्ट और होटल रॉयल रेजीडेंसी द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर के संयोजक विनीत रामपाल ने बताया कि रक्तदान शिविर में 150 रक्तदाताओ ने रजिस्ट्रेशन कराया था जिसमे से कुछ स्वास्थ्य कारणों एव जनपद में पूरा दिन भारी वर्षा के चलते रक्तदान नही कर सके। इस रक्तदान शिविर में महिलाओ एवं युवाओ ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया जिसके फलस्वरूप कुल 101 रक्तदानियों ने रक्तदान किया। कार्यक्रम में अपर पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण क्षेत्र) सागर जैन, मौ. शारिक अंसारी, मौ. अनवार अहमद ने रक्तदाताओ को ट्रॉफी और सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम सह संयोजक अमित जैन व अभिषेक डागा ने बताया की हमारी ट्रस्ट समाज को स्वैच्छिक रक्तदान करने के लिए जागरूकता अभियान चला रही है। इसी मिशन के अंतर्गत हमने ये रक्तदान शिविर आयोजित किया है। रक्तदान करने से शरीर में कोई भी कमजोरी नहीं आती है।

होटल रॉयल रेजीडेंसी के प्रोपराइटर मौ. अनवार अहमद ने बताया कि रक्तदान एक ऐसी महान सेवा है जिसका कोई दूसरा विकल्प नहीं है। कुदरत का बनाया हुआ रक्त केवल मानव शरीर से ही लिया जा सकता है।

लगातार मूसलाधार बारिश से थमा जन जीवन, घाड़ में उफान पर आई नदियां

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। सोमवार की सुबह सूरज की किरणों के साथ ही शुरू हुई बरसात ने पूरे जनपद को मानो थाम-सा दिया। लगातार हो रही बारिश ने सामान्य जनजीवन को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया है।

पहाड़ों पर हो रही लगातार बारिश की वजह से हथिनीकुंड बैराज में पानी क्षमता से अधिक हो गया था जिस कारण यमुना नदी में पानी छोड़ना पड़ा। लोग न केवल अपने दैनिक कार्यों से वंचित हो रहे हैं, बल्कि नदियों का बढ़ता जलस्तर सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए चिंता का विषय बन गया है। नगर की मुख्य सड़कें जलभराव से लबालब हो चुकी हैं। जगह-जगह पानी भरने के कारण लोगों को आवागमन में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। हालात यह हैं कि केवल अत्यावश्यक कार्यों से ही लोग घरों से बाहर निकल रहे हैं। सप्ताह का पहला दिन होने के बावजूद बाजारों में अजीब सी खामोशी छाई रही। दफ्तर और कामकाज पर जाने वाले लोग भी परेशान दिखे, वहीं सड़कों पर दौड़ने वाले वाहन धीमी रफ्तार से चलते दिखाई दिए। नगर के बीचों-बीच बहने वाली पांवधोई नदी का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। निचले इलाकों और सीमावर्ती कॉलोनियों में पानी घरों के बाहर और सड़कों पर भर जाने से दहशत का माहौल बना हुआ है। स्थिति यह है कि कई जगहों पर लोग घरों से बाहर निकलने तक में असमर्थ हो गए हैं। स्कूल-कॉलेज से लौटने वाले बच्चों और अभिभावकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। जगह-जगह जमे पानी में वाहन फँसते रहे और पैदल चलने वालों की भी मुश्किलें बढ़ गईं। नगर निगम और प्रशासन के दावों के बावजूद जल निकासी व्यवस्था पूरी तरह ठप साबित हुई। उधर, मौसम विभाग ने चेतावनी जारी करते हुए बताया कि मंगलवार तक लगातार बारिश जारी रहने की संभावना है। ऐसे में जिला प्रशासन के लिए चुनौती और बढ़ गई है। सहरानपुरवासियों की चिंताओं में इजाफा करते हुए यह बरसात अब राहत से अधिक आफत बन चुकी है। उधर ग्राम पंचायत ढीक्का कलां के ग्राम टपरी निवासी 53 वर्षीय ससोनू पुत्र इश्कलाल की यमुना नदी में डूबने से मौत हो गई। हालांकि मृतक का शव अभी नहीं मिला है। जिला प्रशासन द्वारा भेजी टीमें रेसक्यू कर सोनू के शव को तलाश कर रही है। बताया जाता है कि सोनू यमुना नदी के पानी बहकर आ रही लकड़ी को निकालने का प्रयास कर रहा था जिस कारण पैर फिसलने से वह यमुना नदी में बह गया।

बेहट। शिवालिक पहाड़ियों एवं मैदानी क्षेत्र में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश से जहां क्षेत्र की सभी बरसाती नदियां उफान पर है वहीं जन जीवन भी पूरी तरह प्रभावित हो रहा है। नदियों के जाल से घिरे दर्जनों गांव का सम्पर्क दिन भर तहसील मुख्यालय से कटा रहा। यातायात प्रभावित होने से लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ा। वहीं कृषि रकबे के कटाव के साथ जल भराव से फसलों को भी भारी नुकसान की संभावना बनी है।

शिवालिक पहाड़ियों एवं मैदानी क्षेत्र में हो रही बारिश से क्षेत्र का जन जीवन पूरी तरह प्रभावित हो रहा है। सोमवार को पहाड़ियों एवं मैदानी क्षेत्र में भारी बारिश के चनते बड़कला, शाकंभरी, सहंश्रा, कोठडी यमुना नदी आदि बरसाती नदियां उफान पर आ गई। शाकंभरी खोल में आए पानी के तेज बहाव ने भी अपना रूद्र रूप दिखाया जिससें मां के भक्तों को भी परेशानियों का सामना करना पड़ा। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस द्वारा श्रद्धालुओं को भूरादेव मंदिर पर ही रोक दिया गया। इसके अलावा बेहट बिहारीगढ मार्ग पर घंटो तक बसों का संच. ालन ढप होने से यात्री हलकान रहे। जान जोखिम में डालकर लोग बरसाती नदियों को पार करते नजर आए। बरसाती नदियों की तेज धार ने कई स्थानों पर कृषि रकबे का भी कटाव किया। जलभराव होने के कारण मक्का, तिल आदि फसलों को भी नुकसान होने की संभावना है।

गंगोह। तेज बारिश से बाजार नहर का रूप ले गए। बारिश के कारण सडकों पर भरे पानी ने स्कूली बच्चों के सामने जाते समय परेशानी खड़ी कर थी।

पिछले कई दिनों से उमस भरी गर्मी के साथ बूंदा-बांदी भी चल रही थी। उमस भरी गर्मी भी लगातार परेशान कर रही थी। सोमवार सुबह अचानक मौसम बदल गया तथा काली घटाएं आई व हवा ने भी लोगों को सुकून दिया। इसके बाद बारिश शुरू हो गई तथा जमकर पानी बरसा जिससे खेतों समेत चारों तरफ पानी-पानी हो गया। बारिश के कारण नगर के मुख्य बाजार भी नहर बन गए। सुबह ओर दोपहर छुट्टी के समय तेज बारिश होने के कारण स्कूली छात्र-छात्राओं को दिक्कत का सामना करना पड़ा। गुड़ छप्पर मार्ग पर हजारों छात्र-छात्राओं का रोज आना जाना रहता है। मार्गो पर पानी भरने से उन्हें भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। इसी मार्ग पर स्थित एक प्लाट से पानी हर बरसात में सडकों पर आ जाता है। सराय क्षेत्र में भी चारों तरफ पानी भर गया। यहां स्थित एक प्राइमरी स्कूल परिसर में भी पानी घुस गया जिससे बच्चों को पानी के बीच ही स्कूल जाना पड़ा।

पर्यावरण बचाना बेहद जरूरी: कमिश्नर

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। मण्डलायुक्त अटल कुमार राय ने कहा कि मौजूदा समय में पर्यावरण को बचाना बेहद जरूरी है और हमें इस प्रयास को अपने जीवन में शामिल करना चाहिए।

मण्डलायुक्त ने यह बात जनता रोड पर आज मोहन फ्यूल जंक्शन के नयारा पेट्रोल पंप के उद्घाटन मौक पर कही। उन्होने कहा कि मौजूदा समय में पर्यावरण का संरक्षण किया जाना बेहद जरूरी है। जो. निस कम्पनी के मालिक मनोज ने बताया कि इस पेट्रोल पम्प के खुलने से क्षेत्रवासियों को बहुत सुविधा होगी। इसमें अत्याधुनिक पर्यावरण के मानको का अनुसरण किया गया है।

इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के प्रांत के महासचिव अनुपम गुप्ता, जिलाध्यक्ष वरुण, महासचिव राजीव चानना, राजीव आनंद, आदेश बिंदल, अमर गुप्ता, राम राजीव सिंघल, डा. अंकुर उपाध्याय, डा. नूतन उपाध्याय, राहुल माहेश्वरी मौजूद रहे।

जमानत शर्तों के उल्लंघन पर कोर्ट में आत्मसमर्पण के निर्देश

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। जमानत की शर्तो का अनुपालन न करने पर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने 4 लोगों की जमानत निरस्त कर 8 सितम्बर से पहले आत्मसमर्पण के निर्देश दिये।

वादी मनीष गर्ग द्वारा सत्र न्यायाधीश कोर्ट में अग्रिम जमानत प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया गया था। जिसमें कोर्ट द्वारा जिसमें न्यायालय द्वारा आदेश पारित कर शर्त तीन का उल्लंघन किया गया है। क्योंकि पासपोर्ट एसएसपी कार्यालय में जमा कर सूचित करने का आदेश दिया गया था। उसके बाद एक प्रार्थना पत्र सीजेएम के समक्ष विदेश जाने की अनुमति दिये जाने का दिया था जो कोर्ट द्वारा निरस्त कर दिया गया। इसके बाद भी कुछ आरोपी आदेश का उल्लंघन कर विदेश यात्रा पर गये। इस प्रार्थना पत्र के सम्बन्ध में रिपोर्ट मंगाकर शर्त तीन का उल्लंघन करने पर जमानत निरस्त करने की याचना की गयी। कोर्ट ने दस्तावेजों व साक्ष्यों के आधार पर आरोपी श्रीमति सतेन्द्र कुमार, श्रीमति प्रीति दुआ, टिम्मू सिंह, प्रभजीत सिंह की अग्रिम जमानत निरस्त कर 8 सितम्बर से पहले कोर्ट में सरेन्डर करने के आत्मसमर्पण करने के आदेश दिये।

उत्तम सत्य धर्म के रूप में मनाया पांचवा दिन

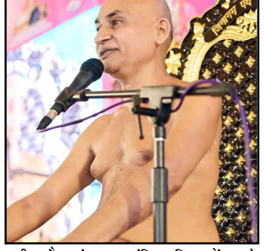

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। श्री 1008 शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, मदनपुरी कॉलोनी में जैन समाज द्वारा दसलक्षण पर्व का पांचवा दिन बड़े श्रद्धा और उत्साह के साथ उत्तम सत्य धर्म के रूप में मनाया गया।

प्रात:काल जैन समाज के श्रद्धालुओं ने श्रीजी की शांतिधारा एवं विशेष पूजा-अर्चना की। इसके पश्चात पंडित इंद्रसेन जैन शास्त्री ने प्रवचन देते हुए कहा कि "अपने मन से असत्य का त्याग कर, मन की पवित्रता के साथ सत्य को अपनाना ही उत्तम सत्य धर्म है। उन्होंने बताया कि जीवन में सच्चाई और ईमानदारी को बनाए रखना ही सच्चे धर्म का प्रतीक है। सांयकाल मंदिर परिसर में महिला जैन मिलन शांतिनाथ द्वारा एक मिनट धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीमती सारिका जैन परिवार भारत विहार सहारनपुर की ओर से विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन सचिन जैन, सुधांशु जैन, मयंक जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंदिर समिति पदाधिकारी धीरज जैन, सुनील जैन, सुधीर जैन, विपिन जैन, राकेश जैन, सुरेंद्र जैन, गौरव जैन, पीयूष जैन, राजेश जैन, अनुपम जैन, सीमा जैन, सुमन जैन, अनीता जैन, राखी जैन, आभा जैन, रुचि जैन, मंजू जैन, अन्नू जैन, अंजली जैन सहित जैन समाज के अनेक लोग उपस्थित रहे।

डीआईजी के निरीक्षण में जर्जर मिले मकान

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। पुलिस उप महानि. रीक्षक परिक्षेत्र अभिषेक सिंह ने सोमवार को पुलिस लाइन्स स्थित पुलिस कर्मियों के आवासों एवं बैरक का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान लगभग 50 आवास अत्यधिक पुराने और जर्जर हालत में पाए गए। पुलिस अधीक्षक यातायात लाइन्स ने जानकारी देते हुए बताया कि इनमें से 29 आवासों को पहले ही निष्प्रयोज्य घोषित करने की प्रक्रिया चल रही है। डीआईजी ने शेष 21 आवासों और पुलिस अस्पताल भवन को भी निष्प्रयोज्य घोषित करने की कार्यवाही पूरी करने के निर्देश दिए।इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण सागर जैन, पुलिस अधीक्षक यातायात सिद्धार्थ वर्मा, सहायक पुलिस अधीक्षक लाइन्स, सहायक अभियंता, अवर अभियंता लोक निर्माण विभाग आदि मौजूद रहे।

स्वर्ण पदक विजेता अंकुर का स्वागत

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में आयोजित एशियन शूटिंग चैपियनशिप में सहारनपुर के लाल अंकुर गोयल ने 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में पदक जीत का लौटे अंकुर अग्रवाल का नगर विधायक राजीव गुंबर, पूर्व राज्य मंत्री संजय गर्ग मेयर डॉक्टर अजय सिंह समेत आदि लोगों ने उनका स्वागत किया। उन्होने कहा कि अंकुर ने जो उपलब्धि हासिल की है वह पूरे देश के लिए गर्व की बात है। आज उसका स्वागत करते हुए हमें आनन्द की अनुभुति हो रही है। दूसरे खिलाडी भी अंकुर से प्रेरणा ले। उन्होने अंकुर अग्रवाल के उज्जवल भविष्य की कामना की।

छेड़छाड़ की शिकायत पर परिजनों से मारपीट

शाह टाइम्स संवाददाता

गंगोह। स्कूल में पुत्री के साथ कुछ लड़कों द्वारा छेड़ छाड़ की शिकायत करने गए परिजनों के साथ मारपीट की गई। गंभीर रूप से घायल पीड़ित को जिला हस्पताल रेफर किया गया। शिकायत के बाद पुलिस जांच में जुटी। दूसरी और स्कूल प्रबंधन द्वारा भी तहरीर दी गई है।

मोहल्ला बाहुद्दीन निवासी एक व्यक्ति हिफ्जुल ने कोतवाली मे तहरीर देते हुए बताया कि उसकी पुत्री बाइपास मार्ग स्थित गंगोह पब्लिक स्कूल मे कक्षा आठ मे पढ़ती है। आरोप है कि पिछले काफी समय से उसकी बेटी को स्कूल का ही दसवीं कक्षा का एक छात्र छेड़छाड़ कर परेशान कर रहा है। छात्रा ने इसकी शिकायत स्कूल के प्रधानाचार्य से की तो उन्होंने उसे धमकी दी कि यदि उसने यह बात अपने परिजनों को बताई तो उसे स्कूल से निकाल देंगे। पीड़िता ने यह बात घर आकर स्वजन को बताई। सोमवार को छात्रा के पिता और चाचा उसके साथ स्कूल पहुंच गए। आरोप है कि उन्होंने आरोपी छात्र द्वारा की जा रही हरकत के बारे मे प्रधानाचार्य से शिकायत की तो उनके साथ अभद्रता की गई यही नही अन्य व्यक्तियों को बुलवाकर उसके साथ मारपीट भी की गई जिसमें वह गंभीर रूप ले घायल हो गया। आरो. पियों ने उसे जान से मारने का प्रयास भी किया और उसे धमकी दी है कि वे उसे छोड़ेंगे नही। पीड़ित ने आरोपियों से अपनी जान का खतरा बताते हुए पुलिस से कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर लेकर घायल को मेडिकल के लिए सीएचसी भिजवा दिया जहां से उसे गंभीर हालत मे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। उधर स्कूल के प्रधानाचार्य पंकज कुमार सैनी की पत्नी पूजा सैनी ने भी कोतवाली में तहरीर दी है जिसमे कहा गया है कि उसके पति अपने स्कूल पर दैनिक कार्य कर रहे थे तभी चार लोग स्कूल मे आए तथा उनके साथ मारपीट करने लगे। आरोप है कि बीच बचाव के दौरान उसके साथ भी आरो. पियो ने बदतमीजी की।

भारत की कूटनीतिक जीत

ट्रम्प से जारी टैरिफ वॉर के बीच चीन के तीसरे बड़े तियानजिननगर में हुए एससीओ समिट में पहलगाम आतंकी हमले की निंदा भारत की कूटनीतिक जीत है। भारत की इस जीत में रूस की भूमिका भी काफी अहम रही है। एससीओ समिट में मोदी–पुतिन और जिनपिंग की जुगलबंदी भी अमेरिका के लिए कड़ा संदेश है। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओद्ध के शिखर सम्मेलन में भारत ने एक उपलब्धि हासिल कर ली है। एससीओ के साझा घोषणापत्र में आतंकवाद की निंदा की गई और पहलगाम आतंकी घटना की भर्त्सना हुई। यह पीएम मोदी की कूटनीतिक जीत है। चीन जो अभी तक पहलगाम पर चुप्पी साधे था और ऑपरेशन सिंदूर के वक्त खुल कर पाकिस्तान के पक्ष में था, वह भी इस घोषणापत्र से सहमत हो गया। दरअसल भारत को यह उपलब्धि हासिल करवाने में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पूरा सहयोग किया। यह निंदा उस मंच से की गई जिसमें पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ भी मौजूद थे। तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगन भी आमंत्रित नेताओं में से थे। इनके अलावा सैन्य परेड में दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के राष्ट्रप्रमुख पहुंच रहे हैं। भारत शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) में है, इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसके सम्मेलन में हिस्सा लेने चीन गए थे। यह 2001 में बना था, तब चीन और रूस के अलावा कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान और किर्गिस्तान इसके सदस्य देश थे। 2017 में भारत भी इस संगठन में आ गया। उसी वर्ष पाकिस्तान भी अस्ताना के शिखर सम्मेलन में पाकिस्तान भी इसका सदस्य देश बना था। आज इसमें बेला रूस को मिला कर 10 देश हैं। इसका पिछला शिखर सम्मेलन पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में 15 और 16 अक्टूबर को हुआ था। उसमें भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नहीं शरीक हुए थे। तब विदेश मंत्री एस। जयशंकर गए थे। 2024 के इस शिखर सम्मेलन में रूस और चीन से पुतिन तथा शी की बजाय उनके देशों के प्रधानमंत्री पहुंचे थे। इसके विपरीत 2025 में चीन के तियानजिन शहर में हुए एससीओ के 30 और 31 अगस्त के शिखर सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री स्वयं गए। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उन्होंने अमेरिका और उसकी लाबी के देशों से कोई दूरी बना ली हो। भारत आज भी क्वाड से जुड़ा हुआ है। प्रधानमंत्री के चीन पहुंचने के पूर्व जापान भी गए थे, जो क्वाड का महत्त्वपूर्ण देश है। इस तरह उन्होंने यह संकेत भी दिया कि अमेरिका के प्रति वे कोई कटुता नहीं पाले है। तियानजिन चीन का तीसरा बड़ा शहर है। चीन ने टेक्नोलॉजी में जो तरक्की की है, उसका प्रदर्शन भी किया गया। चीन ने अपनी एआई तकनीक की क्षमताओं का प्रदर्शन भी किया। जो भी उसकी इस तरक्की को देखता है उसकी आँखें फटी की फटी रह जाती हैं। चीन टेक्नोलाजी में अमेरिका से जरा भी पीछे नहीं है, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि चीन भले पड़ोसी हो और आर्थिक रूप से समृद्ध हो किंतु आज भी वह आर्थिकी में अमेरिका के मुकाबले आधा ही है। अमेरिका 30 ट्रिलियन डॉलर पर खड़ा है, जबकि चीन की अर्थव्यवस्था 18 ट्रिलियन डॉलर की है और भारत मात्र 4 ट्रिलियन डॉलर पर टिका है। इसलिए जाहिर है व्यापार के लिए अमेरिका ही अकेला ऐसा देश है, जहां भारत अपना माल बेच सकता है, खपा सकता है, मगर कोई भी देश अपना स्वाभिमान खत्म कर व्यापार नहीं कर सकता।

सत्ता के हाथ में धर्म को देंगे, तो हानि ही होगी

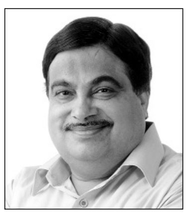

लोगों से अपील है कि वे धर्म काज से मंत्री–नेताओं को दूर रखें, धर्म की आड़ में राजनीति समाज के लिए नुकसानदायक है, राजनीतिज्ञ जहां घुसते हैं, आग लगाए बिना नहीं रहते, सत्ता के हाथ में धर्म को देंगे, तो हानि ही होगी, धर्म कार्य, समाज कार्य और राजनीति कार्य अलग– अलग हैं। धर्म व्यक्तिगत श्रद्धा का विषय है, कुछ राजनीतिज्ञ इसका इस्तेमाल करते हैं, इससे विकास और रोजगार का विषय दोयम दर्जे का हो जाता है, बोलना आसान है, करना कठिन है, मैं अधिकारी नहीं हूं, लेकिन मुझे अनुभव है कि जिस क्षेत्र में मैं काम करता हूं, वहां मन से सच बोलने की मनाही है।

–नितिन गडकरी
केंद्रीय मंत्री

जल प्रलय के सन्देश

तनवीर जाफरी

भारत के पंजाब राज्य को सबसे उपजाऊ धरती के राज्यों में सर्वोपरि गिना जाता है। इसका मुख्य कारण यही है कि यह राज्य खेती के लिए सबसे जरूरी समझे जाने वाले कारक यानी पानी के लिए सबसे धनी राज्य है। सिंधु नदी की पांच सहायक नदियां सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब और झेलम इसी पंजाब राज्य से होकर बहती हैं। इन पांचों नदियों में केवल व्यास ही एक ऐसी नदी है जो केवल भारत में बहती है शेष सतलुज, रावी, चिनाब और झेलम नदियां भारत से होते हुए पाकिस्तान में भीप्रवाहित होती हैं। यही नदियां जो पंजाब को उपजाऊ भूमि बनाने और यहां की संस्कृति का आधार समझी जाती हैं इन दिनों यही नदियां भारत से लेकर पाकिस्तान तक जल प्रलय का कारण बनी हुई हैं। इन नदियों के उफान पर होने का कारण जम्मू कश्मीर व हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में लगातार होने वाली तेज बारिश यहां तक कि अनेक स्थानों पर बादल फटने जैसी घटनाओं को माना जा रहा है।

दरअसल पिछले कुछ दिनों हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर और पंजाब के जलागम क्षेत्रों में असामान्य रूप से भारी बारिश हुई। कई जिले तो ऐसे भी थे जहां केवल एक ही दिन में पूरे एक महीने की बारिश दर्ज की गई। जैसे केवल अमृतसर और गुरदासपुर में 150–200 मिमी से अधिक वर्षा दर्ज हुई। इससे शहरी जलनिकासी प्रणाली पूरी तरह फेल हो गई। दुर्भाग्यवश हमारे देश के अधिकांश राज्यों में बरसाती जल निकासी प्रणाली प्राय: फेल ही रहती है। भ्रष्टाचारयुक्त निर्माण से लेकर सरकारी अम्लों की अकर्मण्यता व गैर जिम्मेदार जनता द्वारा नाले नालियों में अवांछित वस्तुओं की डम्पिंग यहां तक कि मरे जानवर से लेकर रजाई गद्दे बोतलें प्लास्टक पॉलीथिन आदि सब कुछ नालों व नालियों में फेंक देने जैसी गैर जिम्मेदाराना प्रवृति, जल निकासी प्रणाली के फेल होने में सबसे अहम भूमिका निभाती है।

एक ओर तो भारी बारिश व जलभराव उसके बाद भारत के सबसे विशाल भाखड़ा नंगल डैम, पोंग डैम रणजीत सागर डैम व शाहपुर कंडी जैसे डैम्स से अतिरिक्त पानी का छोड़ा जाना भी पंजाब की बड़े हिस्से की तबाही का कारण बन गया। इन डैम्स से पानी छोड़ना भी इसलिए जरूरी हो गया था क्योंकि इनमें इनकी क्षमता से अधिक जलभराव हो गया था। उदाहरण के तौर पर भाखड़ा डैम का जल स्तर 1,671 फीट तक पहुंच गया था तो पोंग डैम का जलस्तर भी अधिकतम से ऊपर चला गया था। इसी के परिणाम स्वरूप राज्य की सतलुज, ब्यास और रावी नदियां उफान पर आ गई थीं। भारत से पानी छोड़ने के कारण ही पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में भी बाढ़ आई, जहां रावी, सतलुज और चेनाब नदियां प्रभावित हुईं। इस स्थिति के मद्देनजर भारत ने पहले ही मानवीय आधार पर पाकिस्तान को तीन चेतावनियां जारी कर दी थीं।

भारतीय पंजाब के जो जिले इस भीषण जल प्रलय में प्रभावित हुए उनमें गुरदासपुर, पठानकोट, होशियारपुर, कपूरथला, अमृतसर, तरन तारन, फिरोजपुर व फजिल्का के नाम खासतौर पर उल्लेखनीय हैं जबकि लुधियाना और जालंधर में भी बढ़ का प्रभाव देखने को मिला। दर्जनों पुल टूट गए, सैकड़ों पशु बह गए अनेक वाहन तेज बहाव में समा गए। लाखों एकड़ फसल तबाह हो गई, तमाम मकान बह गए या क्षतिग्रस्त हो गए। दर्जनों जगह से हाईवे व मुख्य मार्ग बंद हो गए। और इस प्रलयकारी हालात से जूझने में कई जगह पंजाब का वह किसान स्वयं को असहाय महसूस करता दिखाई दिया जो हमेशा पूरी हिम्मत व हौसले के साथ दूसरों की सेवा सत्कार के लिए तत्पर दिखाई देता है। एक अनुमान के अनुसार राज्य के 500 से अधिक गांव डूबे गए इन गांवों में लगभग 6,600 से अधिक लोग फंसे थे। अमृतसर के रामदास क्षेत्र में रावी नदी का धुसी बांध टूट गया, जिससे 40 गांव डूब गए। इसी तरह गुरदासपुर में लगभग 150, कपूरथला में करीब 115, और अमृतसर में लगभग 100 गांव इस प्रलयकारी बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित हुए। गोया इस बार की बाढ़ ने कृषि–प्रधान पंजाब की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित कर दिया। इस बाढ़ के चलते सैकड़ों घर, 300 से अधिक स्कूल अनेक सड़कें, पुल और बिजली लाइनें आदि क्षतिग्रस्त हो गईं। अमृतसर में गुरुद्वारा बाबा बुढ़ा साहिब डूब गया। कई जगह रेल यातायात बाधित हुआ अनेक ट्रेन्स कैंसिल कर दी गईं। हाईवे टूटने व क्षतिग्रस्त होने के चलते 1,000 से अधिक सड़कें बंद कर गईं। अकेले वैष्णो देवी में बारिश के चलते हुए भूस्खलन से 30 से अधिक मौतें होने की खबर है।

अभी तक जो अनुमान लगाया जा रहे उसके मुताबिक धान, गन्ना व मक्का की लगभग 1।5 लाख एकड़ फसल पूरी तरह डूब गई। पंजाब में लगभग 3 लाख एकड़ से अधिक भूमि जलमग्न हो गई। इन बाढ़ग्रस्त क्षत्रों के किसानों को सितंबर–अक्टूबर में होने वाली रबी की फसलों में भी नुकसान की आशंका बनी हुई है। पंजाब में आई बाढ़ से हुआ अरबों रूपए का यह नुकसान खाद्य मुद्रास्फीति को भी प्रभावित करेगा। बाढ़ और बारिश–संबंधी हादसों से भारत व पाकिस्तान में अनेक मौतें भी हुई हैं जबकि अनेक लोग लापता भी हो गए हैं। इसी तरह हजारों पशुओं के बह जाने, मरने,बीमार पड़ने के साथ साथ उनके चारों की भी भारी कमी दर्ज की जा रही है। इन्हीं हालात में बीमारियों का भी खतरा बढ़ गया है। इससे पर्यटन उद्योग भी बुरी तरह प्रभावित हुआ है। आपदा के इस समय में सेना एनडीआरएफ व एसडीआरएफ द्वारा 5,000 से अधिक लोगों की जान बचाई गई व उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। इन ऑपरेशन्स में चिनूक हेलीकॉप्टर, चीता हेलीकॉप्टर,नावें और एम्फीबियन वाहन इस्तेमाल किए गए।

पंजाब और खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में होने वाली असाधारण बारिश व बादल फटने जैसी अनेक घटनाओं ने मौसम वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया है। इन हालात के लिए जहां दुर्लभ परिस्थितियों में पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी मौसम प्रणालियों के एक साथ आने को जिम्मेदार माना जा रहा है वहीं ग्लेशियर का लगातार पिघलते जाना भी बाढ़ को और अधिक भयावह बना रहा है। माना जा रहा है कि यह बाढ़ 1988 की उस भीषण बाढ़ से भी प्रलयकारी है जिसे हजार वर्षों में एक बार आने वाली बाढ़ की संज्ञा दी गई थी। गोया हमें जल प्रलय के इस सन्देश को समझना होगा कि इन हालात के लिए ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप होने वाला जलवायु परिवर्तन ही सबसे अधिक जिम्मेदार है। और निश्चित रूप से विकास और इसके नाम पर पैदा किए गए ग्लोबल वार्मिंग के यह हालात पूरी तरह मानवजनित हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

भारतीय पंजाब के जो जिले इस भीषण जल प्रलय में प्रभावित हुए उनमें गुरदासपुर, पठानकोट, होशियारपुर, कपूरथला, अमृतसर, तरन तारन, फिरोजपुर व फजिल्का के नाम खासतौर पर उल्लेखनीय हैं जबकि लुधियाना और जालंधर में भी बढ़ का प्रभाव देखने को मिला। दर्जनों पुल टूट गए, सैकड़ों पशु बह गए अनेक वाहन तेज बहाव में समा गए। लाखों एकड़ फसल तबाह हो गई, तमाम मकान बह गए या क्षतिग्रस्त हो गए। दर्जनों जगह से हाईवे व मुख्य मार्ग बंद हो गए। और इस प्रलयकारी हालात से जूझने में कई जगह पंजाब का वह किसान स्वयं को असहाय महसूस करता दिखाई दिया जो हमेशा पूरी हिम्मत व हौसले के साथ दूसरों की सेवा सत्कार के लिए तत्पर दिखाई देता है। एक अनुमान के अनुसार राज्य के 500 से अधिक गांव डूबे गए इन गांवों में लगभग 6,600 से अधिक लोग फंसे थे।

पुनर्जनन के दौरान अंग की मूल आकृति का निर्माण

वर्ष 2013 में नेचर पत्रिका में मकोतो टेकिओ और उनके साथियों ने बताया था कि नाखूनों की तली में स्टेम कोशिकाएं होती हैं, जो न सिर्फ निरंतर सख्त और किरेटिनयुक्त नाखून बनाने वाली को. शिकाओं में बदलती रहती हैं, बल्कि वे ऐसे संकेत भी भेजती हैं जो उंगली के पुनर्जनन को गति देते हैं।

चाहे सुंदर दिखने के लिए या सफाई और सहूलियत के लिए हम कभी–कभी नाखून काटते हैं, लेकिन थोड़े दिनों बाद ही वे वापस बढ़ जाते हैं। किरेटिन नामक प्रोटीन से बने नाखून हमें क्षति से सुरक्षित रखते हैं। यदि किसी नवजात शिशु की उंगली के ऊपरी पोर वाला हिस्सा (जोड़ के पहले तक की किसी जगह से) कट या टूट जाता है तो उंगली अपनी मूल आकृति में पुनरू बन जाती है।

वर्ष 2013 में नेचर पत्रिका में मकोतो टेकिओ और उनके साथियों ने बताया था कि नाखूनों की तली में स्टेम कोशिकाएं होती हैं, जो न सिर्फ निरंतर सख्त और किरेटिनयुक्त नाखून बनाने वाली कोशिकाओं में बदलती रहती हैं, बल्कि वे ऐसे संकेत भी भेजती हैं जो उंगली के पुनर्जनन को गति देते हैं। गौरतलब है कि स्टेम कोशिकाएं कई प्रकार की कोशिकाओं में तब्दील और विकसित हो सकती हैं। ये कोशिकाएं Wnt संकेत मार्ग को सक्रिय करती हैंय यह प्रक्रिया पुनर्जनन के लिए आवश्यक तंत्रिकाओं को आकर्षित करती है। छिपकली हमारे घरों में एक अनचाहा मेहमान है। हम अक्सर इसे मारने की कोशिश करते हैं, लेकिन अक्सर हाथ केवल इसकी पूंछ ही आती है। भगोड़ी छिपकली अपनी पूंछ छोड़कर भाग निकलती है और उसे फिर से बना लेती है, ठीक नवजात शिशु की घायल उंगली की तरह। इस प्रक्रिया की आणविक जैविकी का सार एलिजाबेथ हचिन्स और उनके साथियों ने 2014 में प्लॉसवन पत्रिका में प्रस्तुत किया था। इस प्रक्रिया को अंजाम देने में 300 से अधिक जीन शामिल होते हैं और इस दौरान घाव को भरने और पूंछ वापस उगाने के लिए कई विकासात्मक और घाव–प्रतिक्रिया पथ सक्रिय होते हैं। हालांकि जंतुओं और वनस्पतियों दोनों में घाव की मरम्मत सम्बंधी शोध पारंपरिक रूप से जीन–नियंत्रित क्रियापथों पर केंद्रित रहा है। लेकिन हालिया शोध विकासात्मक पादप विज्ञान में भौतिक संकेतों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता हैं। भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं शोध संस्थान IISER, पुणे की मेबेल मारिया मैथ्यू और कालिका प्रसाद ने हाल ही में करंट बायोलॉजी में प्रकाशित अपने एक अध्ययन में विकास और पुनर्जनन पर एक कम अध्ययन किए गए लेकिन महत्वपूर्ण कारक पर प्रकाश डाला हैरू कोशिकीय ज्यामिति। शोधकर्ताओं ने अध्ययन में देखा की कि कैसे शंक्वाकार आकृति का मूलाग्र कट जाने के बाद पुनरू अपने आकार में पनप जाता है। उन्होंने पाया कि मौजूदा कोशिकाओं ने अपनी ज्यामिति को बदलकर नई बनी कोशिकाओं की कतार को एक तिरछे, झुके पथ पर संरेखित किया। अंतत: कोशिकाओं की इन तिरछी पंक्तियों ने जड़ की शंक्वाकार आकृति का पुनर्निर्माण किया। तकनीकी शब्दों में, इस प्रक्रिया को आकृति–जनन कहा जाता है। आकृति–जनन वह जैविक प्रक्रिया है जो किसी जीव को उसका आकार और संरचना विकसित करने में मदद करती है। इसमें कोशिकाओं की समन्वित वृद्धि, विभाजन, विभेदन और व्यवस्थापन शामिल होता है जिससे ऊतक, अंग और यहां तक कि एक संपूर्ण जीव का निर्माण होता है। मूलाग्र पुनर्जनन की प्रणाली का अध्ययन सरसों परिवार के एरेबिडोप्सिस थैलिआना Arabidopsis thaliana पौधे पर किया गया था। इसमें यह समझा गया था कि कोशिका ज्यामिति में परिवर्तन आकृति–जनन में कैसे योगदान देते हैं और उसे सुगम बनाते हैं। उन्नत सूक्ष्मदर्शी और उपकरणों की मदद से टीम ने देखा कि जड़ों की सामान्य घनाकार कोशिकाओं की आकृति बदलकर समचतुर्भुज हो गई। फिर यह परिवर्तित कोशिकाएं विकर्ण रेखा पर विभाजित हुईं जिससे त्रिकोणीय प्रिज़्म आकृति की कोशिकाएं बनीं। विकर्ण रेखा से विभाजन ने आस–पड़ोस की कोशिकाओं की वृद्धि को एक तिरछे पथ पर मोड़ा, जिन्होंने मिलकर कटा हुआ पतला सिरा फिर से बनाया। गणितीय और भौतिक विश्लेषण करने पर पता चला कि इन बदलावों के पीछे जो वास्तविक बल काम करता है वह है आंतरिक यांत्रिक तनाव। यह एक प्रकार का तनाव है जो कोशिकाओं को आकार बदलने और निर्धारित रूप से विभाजित होने के लिए उकसाता है। आकृति–जनन को समझने में जहां लंबे समय से स्टेम कोशिकाएं और जेनेटिक क्रियापथ अध्ययन का केंद्र रहे हैं, वहां यह अध्ययन एक अनदेखे महत्वपूर्ण पहलू पर प्रकाश डालता हैरू कोशिकाएं तनाव में अपनी आकृति को कैसे ढालती हैं। यह दर्शाता है कि कोशिका की आकृति और ज्यामिति ऊतक पुनर्जनन के दौरान आकृति–जनन में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

–डॉ. डी बालसुब्रमण्यन

गुमनामी बाबा के कमरे से निकला सामान खास क्यों है

विनीत नारायण

पिछले हफ्ते नेताजी सुभाष चंद्र बोस के विषय में इस कॉलम में जो मैंने लिखा था उस पर बहुत प्रतिक्रियाएं आई हैं। पाठकों को और जानने की उत्सुकता है। इस विषय में यूट्यूब पर तमाम इंटरव्यू व रिपोर्ट्स हैं। वहां आप 'गुमनामी बाबा' या सुभाष चंद्र बोस' टाइप करके उन्हें देख सकते हैं। विशेषकर अनुज धर, चंद्रचूड़ घोष, शक्ति सिंह, डॉ दिनेश सिंह तोमर, आदि के इंटरव्यू व जी टीवी पर एक 'गुमनामी बाबा का बॉक्स नंबर 26' जैसी रिपोर्ट्स देख, सुनकर आप दंग रह जाएंगे।

पिछले लेख में मैंने उनके कमरे से मिली 2760 वस्तुओं में से कुछ का जिक्र किया था। यहां उन सामानों में से कुछ और का विस्तार से वर्णन कर रहा हूं। ए सूची इतनी प्रभावशाली है कि केवल साधना करने वाले संत का सामान नहीं हो सकता। आप सोचने पर मजबूर हो जाएंगे कि 'गुमनामी बाबा' अगर नेताजी सुभाष चंद्र बोस नहीं थे तो और कौन थे? ए सूची जब मैंने देश के एक सबसे बड़े पुलिस अधिकारी रहे सज्जन को पढ़वाई तो वे भी दंग रह गए।

'गुमनामी बाबा' के कमरे में अंग्रेजी, बंगला व संस्कृत साहित्य की 304 पुस्तकें मिली हैं। वहीं 260 आध्यात्मिक पुस्तकें भी मिली हैं। मेडिकल साइंस पर 118, राजनीति व इतिहास पर 57, रहस्य और तंत्रशास्त्र पर 46, रामायण व महाभारत पर 36, सुभाष चन्द्र बोस पर 34, यात्रा वृतांत ग्रन्थ 33 व ज्योतिष और हस्तरेखा विज्ञान पर 12 पुस्तकें मिली हैं। अब जरा अंग्रेजी की पुस्तकों के लेखकों नाम और उनके लिखे ग्रंथों की संख्या देखिए, चार्ल्स डिकेंस (51), अलेक्सांद्र सोल्जेनित्सिन (11), विल ड्यूरांट (11), शेक्सपियर का लिखा सम्पूर्ण साहित्य व 9 नाटक, टी. लोबसांग रम्पा (10), वाल्टर स्कॉट (8), अलेक्जेंडर डुमास (8), एरिक वॉन डेनिकेन (4), पीजी वोडहाउस (3), कुलदीप नैयर (3) आदि पुस्तकें उनके बक्सों और अलमारी से निकली हैं। ऐसे उच्च कोटि के विश्व. विख्यात साहित्य को पढ़ने वाला कोई भजनानंदी साधु नहीं हो सकता। सभी जानते हैं कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस एक संपन्न व कुलीन परिवार से थे। आईसीएस (वर्तमान में आईएएस) की परीक्षा में, 1920 में उनकी चौथी रैंक आई थी। आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए 1921 में उन्होंने इतनी बड़ी नौकरी से इस्तीफा दे दिया था।

उपरोक्त साहित्य के अलावा, उनके कमरे से रीडर्स डाइजेस्ट, अमरीकी पत्रिका टाइम, इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया, ब्लिट्ज, ऑर्गेनाइजर, जुगवाणी, द पायनियर, आज, अमृत प्रभात, अमृत बाजार पत्रिका, आनंद बाजार पत्रिका, दैनिक जागरण, द स्टेट्समैन, टेलीग्राफ, टाइम्स ऑफ इंडिया व अमर उजाला जैसी तमाम प्रतिष्ठित पत्रिकाएं और अखबार भी मिले हैं।

उनके बक्से में से उनके परिवार व निकट के लोगों के 110 चित्र मिले हैं। जिनमें नेताजी के माता–पिता का फ्रेम करा हुआ चित्र, मखमली कपड़े में लिपटा हुआ उनके बक्से में रखा था। शक्ति सिंह के अयोध्या स्थित घर, 'राम भवन' के जिस कमरे में गुमनामी बाबा रहते थे, उसमें दीवार पर मां काली का चित्र टंगा था। जिनकी वे रोज धूप–बत्ती जला कर पूजा करते थे। रोचक बात यह है कि 23 जनवरी को देश भर में जहां भी उनका जन्मदिन मनाया जाता था उसकी खबरों में से सुभाष चंद्र बोस की फोटो निकाल कर संग्रह की गई हैं। इसी बक्से से नेताजी की बचपन से मित्र रहीं और क्रांतिकारी संगठन की नेत्री लीला रॉय, पंडित नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद और महात्मा गांधी के चित्र भी मिले हैं।

उनके संगीत संग्रह में महिषासुरमर्दनी स्रोत की रिकॉर्डिंग, रवींद्र संगीत, नजरुल इस्लाम, श्यामा संगीत, केएल सहगल, ज्योतिका रॉय, उस्ताद फैयाज खघन, पं. रवि शंकर का सितार वादन, बिस्मिल्लाह खघं की शहनाई, नेताजी के बचपन से मित्र और मशहूर गायक दिलीप कुमार रॉय के गाए गीत, हेमंत कुमार के गीत, पन्नालाल घोष, लालन फकीर आदि की गायकी के रिकॉर्ड भी मिले हैं। इसके अलावा बॉलीवुड की फिल्म 'सुभाष चंद्र बोस' का पूरा साउंडट्रैक भी मिला है। इंग्लैंड के टाइपराइटर और जर्मनी की बनी दूरबीन, जापानी क्रॉकरी, दो महंगी घड़ियां जिनमें से एक सोने की बनी ओमेगा घड़ी बिल्कुल वैसी है जैसी नेताजी की मां ने उन्हें जन्मदिन पर भेंट की थी, जिसे वो अक्सर पहना करते थे। दूसरी महंगी घड़ी रोलेक्स की है। गोल फ्रेम के 8 चश्में जिसमें से एक का फ्रेम शायद सफेद सोने का है। इन सब सामानों में सबसे भावुक वस्तु है नेताजी सुभाष चंद्र बोस के पिता जानकी नाथ बोस की एक पुरानी छतरी जो, उनकी यादगार के प्रतीक रूप में गुमनामी बाबा ने सहेज कर रख रखी थी। इस छतरी को नेता जी के भतीजी ललिता बोस ने पहचाना।

उनके कागजों में अयोध्या व काशी के विस्तृत नक्शे, भारत के सड़क मार्गों व फौजी ठिकानों के नक्शे, मध्य एशिया, मध्य पूर्व एशिया व दक्षिण पूर्व एशिया के नक्शे, जिन्हें हाथ से बनाया गया था, भी वहां बरामद हुए हैं। उनके सबसे प्रिय साथी पवित्र मोहन रॉय की संपत्तियों के नक्शे व एक अन्य साथी अतुल कृष्ण गुप्तो की ढाका में छूट गई संपत्ति के नक्शे आदि भी मिले हैं। उनके रहन–सहन के स्तर दर्शाते हुए उनके कमरे से नहाने के 75 साबुन मिले हैं, जो महंगे ब्रांड के हैं, जैसे यार्डले, क्यूटीक्यूरा, पियर्स, पोंड्स, लेवेंडर व डड्ू आदि। सबको मालूम है कि सुभाष चंद्र बोस 'चेन स्मोकर' थे। वे लगातार सिगरेट पीते थे। उनके सामानों में 'गोल्ड फ्लैक' व 'इंडिया किंग्स', सिगरेट के कई पैकेट, रोल बनाकर सिगरेट बनाने वाले कागज के 15 पैकेट व इन कागजों में भरने वाले तंबाकू के पैकेट और इनको लपेट कर सिगरेट बनाने वाली छोटी सी मशीन, जो इंग्लैंड की बनी हुई है। 3 विदेशी पाइप व तम्बाकू के पैकेट, सिगरेट जलाने वाले लाइटर भी मिले हैं। उनके कमरे में अंग्रेजी व बंगला में हस्त लिखित 1683 पत्र भी मिले हैं। दो भारतीय और एक अमरीकी हस्तलेखन विशेषज्ञों ने यह प्रमाणित किया है कि इन पत्रों पर पाई जाने वाली लिखाई 1935–36 की नेताजी सुभाष चंद्र बोस की लिखाई से पूरी तरह मेल खाती है।

पूजा के सामानों में तीन मुखी व छह मुखी रुद्राक्ष की, स्फटिक व तुलसी की 28 मालाएं मिली हैं। गौमुखी कमण्डल, आचमनी, शिवलिंग, शिवजी व मां काली के चित्र, मैहर की देवी का चित्र, चंदन की लकड़ियां, सिंदूर, आलता, शंख जिसे कान के पास लाने पर वह गूंजता है मिला है। गुमनामी बाबा के कमरे से 13 कमीजें, 4 पैंट, 31 बनियान, 31 चड्डी, 58 धोतियां, 3 वार्मर, 2 दस्ताने, 2 बरसाती कोट, 30 तौलिए, 1 जैकेट, 2 जोड़ी काले जूते, 1 जोड़ी लाल जूते, चेरी ब्लॉसम की पॉलिश के डिब्बे, जूता चमकाने की क्रीम, खड़ाऊं, बंदर टोपी, 7 गद्दे, राजस्थानी रजाई जिस पर रेशम की कढ़ाई है, चादर व तकिए आदि भी मिले हैं। उनके कमरे से जो तमाम बर्तन व रसोई का सामान मिला है उनमें से कुछ विदेशों में निर्मित हैं जो उनके लाइफस्टाइल को दर्शाता है। चूंकि वे होम्योपैथी के अच्छे जानकर थे इसलिए इसकी व दूसरी तमाम दवाइयां भी मिली हैं। अब आप खुद ही सोच लीजिए कि गुमनामी बाबा अगर नेताजी सुभाष चंद्र बोस नहीं थे तो और कौन थे?

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

उनके कमरे से जो तमाम बर्तन व रसोई का सामान मिला है उनमें से कुछ विदेशों में निर्मित हैं जो उनके लाइफस्टाइल को दर्शाता है। चूंकि वे होम्योपैथी के अच्छे जानकर थे इसलिए इसकी व दूसरी तमाम दवाइयां भी मिली हैं। आप सोच लीजिए कि गुमनामी बाबा नेताजी सुभाष चंद्र बोस नहीं थे तो और कौन थे?

इशारा ट्रम्प की ओर, जिनपिंग बोले: दादागिरी की राजनीति बर्दाशत नहीं

ट्रम्प का नाम लिए बिना चीन के राष्ट्रपति का एससीओ के मंच से बड़ा हमला

तियानजिन (चीन)। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की शुरुआत में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में धमकी वाले व्यवहार की कड़ी आलोचना की और अधिक निष्पक्षता, न्याय और बहुपक्षीयता की मांग की।

जिनपिंग की ओर से यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है, जब चीन ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की ओर से भारत समेत कई देशों पर भारी टैरिफ लगाए जाने की कड़ी निंदा की है। फिलहाल अमेरिका और चीन ने टैरिफ पर एक अस्थाई समझौता किया है, जिसमें ट्रम्प ने बीजिंग पर भारी टैरिफ को फिर से 90 दिनों के लिए टाला है, ताकि बातचीत जारी रह सके। हालांकि, पिछले हफ्ते ट्रम्प ने फिर धमकी दी थी कि अगर चीन अमेरिका को दुर्लभ खनिजों (रेअर-अर्थ मिनरल्स) का निर्यात रोकेगा, तो वह 200 फीसदी टैरिफ लगाएंगे। राष्ट्रपति जिनपिंग ने यह बात 20 से ज्यादा देशों के नेताओं के सामने कही, जिनमें भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और मध्य एशिया, पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के राष्ट्राध्यक्ष शामिल थे।

जिनपिंग ने ऐसी विश्व व्यवस्था की मांग की जो न्याय व समानता पर आधारित हो और जिसमें सभी को भागीदारी का अधिकार हो

उन्होंने किसी का नाम लिए बिना कुछ शक्तिशाली देशों पर हठधर्मिता और शक्ति की राजनी. ति करने का आरोप लगाया। उन्होंने एक ऐसी विश्व व्यवस्था की मांग की जो न्याय और समानात पर आधारित हो और जिसमें सभी को भागीदारी का अधिकार हो। जिनपिंग ने कहा, लगभग 24 साल पहले जब इस संगठन की स्थापना हुई थी, तब हमने 'शंघाई भावना' की नींव रखी थी। यह भावना आपसी विश्वास, आपसी लाभ, समानता, सलाह-मशविरा, सभ्यताओं की विविधता का सम्मान और साझा विकास की कोशिशों पर आधारित है। हमने अपनी सीमाओं पर सैन्य विश्वास बढ़ाने की व्यवस्था सबसे पहले की, जिससे हमारी लंबी सीमाएं दोस्ती, विश्वास और सहयोग का सेतु बन गईं।

हमने सबसे पहले आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद की तीन ताकतों के खिलाफ मिलकर बहुपक्षीय कार्रवाई शुरू की। हमने कानून व्यवस्था और सुरक्षा सहयोग को लगातार आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा, हमने कानून व्यवस्था और सुरक्षा सहयोग को बढ़ाया, मतभेदों को सही तरीके से संभाला और सुलझाया, बाहरी दखल का स्पष्ट रूप से विरोध किया और क्षेत्र में शांति व स्थिरता बनाए रखी। हमने सबसे पहले बेल्ट एंड रोड पहल की शुरुआत की हम हमेशा अंतर्राष्ट्रीय न्याय और निष्पक्षता के पक्ष में खड़े रहते हैं, सभ्यताओं के बीच समावेश और आपसी सीख को बढ़ावा देते हैं और प्रभुत्ववादी सोच और शक्ति की राजनीति का विरोध करते हैं। चीनी राष्ट्रपति ने कहा, भविष्य को देखते हुए हमें आज की चुनौतियों और बदलावों से भरी दुनिया में शशंघाई भावनाश को आगे बढ़ाना चाहिए। हमें मजबूत कदमों के साथ आगे बढ़ना चाहिए और अपने संगठन की संभावनाओं का बेहतर उपयोग करना चाहिए। हमें मतभेदों को किनारे रखकर एकता की राह पकड़नी चाहिए, क्योंकि साझा लक्ष्य ही हमारी ताकत और लाभ का स्रोत हैं। मतभेदों के बीच समानता तलाशने की इच्छा, समझदारी और दूरदर्शिता को दर्शाती है। अपने भाषण में जिनपिंग ने आगे कहा, एससीओ के सभी सदस्य देश एक-दूसरे के दोस्त और साझेदार हैं।

तियानजिन। चीन में हुए शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन की वैश्विक सफलता ने सदस्य देशों के नेताओं में जोश भर दिया है, रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने जब चीन के राष्ट्रपति जिनपिंग को (SCO) की खूबियां गिनाईं, तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चेहरा भी खुशी से चकम उठा।

जिनपिंग का संयुक्त, डब्ल्यूटीओ व्यवस्था को मजबूत करने का आह्वान

तियानजिन/नई दिल्ली। चीनी के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सदस्य देशों से संयुक्तराष्ट्र पर केंद्रित विश्व व्यवस्था की रक्षा करने का आह्वान किया है।

जिनपिंग तियानजिन एससीओ राष्ट्राध्यक्ष परिषद की 25वीं बैठक में बोल रहे थे। जिन. पिंग ने चीन की अध्यक्षता में हो रहे इस सम्मेलन के पूर्ण अधिवेशन में अपने संबोधन मे कहा कि हमें न्याय और निष्क्षता को बनाए रखना चाहिए, द्वितीय विश्व युद्ध के इतिहास के बारे में सही दृष्टिकोण को बढ़ावा देना चाहिए, युद्ध की मानसिकता, गुटों के टकराव

■ जिनपिंग ने एससीओ से 'वास्तविक परिणामों और उच्च दक्षता के लिए प्रयास' करने का भी आग्रह किया

और धौंस-धमकी का विरोध करना चाहिए और संयुक्त राष्ट्र की केंद्रीय भूमिका वाली अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की व्यवस्था की रक्षा करनी चाहिए। चीनी राष्ट्रपति ने संयुक्त राष्ट्र-केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की रक्षा करने और विश्व व्यापार संगठन को केंद्र में रखते हुए बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली का समर्थन करने का भी आह्वान किया। उन्होंने इस वर्ष एससीओ सदस्य देशों के लिए दो अरब युआन (लगभग 28.1 करोड़ अमेरिकी डॉलर) के अनुदान की घोषणा की, साथ ही एससीओ इंटरबैंक कंसोर्टियम के माध्यम से अगले तीन वर्षों में 10 अरब युआन के अतिरिक्त ऋण की भी घोषणा की। उन्होंने बताया कि अन्य एससीओ सदस्य देशों में चीन का संचई निवेश पहले ही 84 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक हो चुका है, जबकि वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार 500 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है। चीनी राष्ट्रपति ने एससीओ से 'वास्तविक परिणामों और उच्च दक्षता के लिए प्रयास' करने का भी आग्रह किया।

भूकंप की तीव्रता और उसका असर...

आंकड़ों के आईने में देश-विदेश में आए कुछ बड़े भूकंप

नई दिल्ली। भूकंप अमूमन हर दिन आते हैं। दुनियाभर में एक दिन में औसतन 55 झटके लगते ही रहते हैं। आइए जानते हैं कि रिक्टर स्केल पर किस तीव्रता का भूकंप कितना खतरनाक हो सकता है।

0-1.9 तीव्रता:

इसका एहसास सिर्फ सिस्मोग्राफ पर होता है, किसी को पता नहीं चलता।

2-2.9 तीव्रता:

हल्का कंपन महसूस होता है इंसान इसे महसूस कर सकता है।

3-3.9 तीव्रता:

ऐसा एहसास होता है जैसे करीब से कोई ट्रक गुज़रा हो।

4-4.9 तीव्रता:

खिड़कियां टूट सकती हैं दीवारों पर टंगी फ्रेम गिर सकती हैं।

5-5.9 तीव्रता:

फर्नीचर जैसा भारी सामान हिल सकता है और जान-माल के खासे नुकसान की संभावना बन जाती है।

6-6.9 तीव्रता:

यह भूकंप विनाशकारी साबित हो सकता है। बड़ी से बड़ी इमारतों की नींव दरक सकती है और ऊपरी मंजिलों को नुकसान हो सकता है।

7-7.9 तीव्रता:

इस तीव्रता वाले भूकंप में इमारतें तक ढह जाती हैं जमीन के अंदर पाइप फट जाते हैं। यह भी बेहद विनाशकारी हो सकता है। पिछले साल फरवरी में तुर्की और सीरिया में आए 7.8 तीव्रता के भूकंप ने भारी तबाही मचाई थी जिसमें 50000 से अधिक लोग मारे गए और लाखों ज़ख्मी हुए थे। कई शहर पूरी तरह तबाह हो गए थे।

8-8.9 तीव्रता:

इस तीव्रता वाला भूकंप पूरे शहर को नुकसान पहुंचा सकता है। इमारतें और बड़े-बड़े पुल भी नहीं झेल पाते और ध्वस्त होकर गिर जाते हैं। साथ ही समुद्र में सुनामी आने का गंभीर खतरा बना रहता है।

9 या उससे अधिक तीव्रता:

यह सबसे ज्यादा विनाशकारी भूकंप होता है। मैदान में खड़े शख्स को धरती लहराती हुई दिखाई देगी और बहुत बड़े सुनामी का खतरा रहेगा। इस तरह के भूकंप कभी-कभार ही आते हैं। अब तक दुनिया में सिर्फ 5 बार ही 9 या उससे अधिक की तीव्रता वाले भूकंप आए हैं।

दुनिया के कुछ सबसे भीषण भूकंप

1952 (रूस): पांचवां सबसे बडा भूकंप, तीव्रता 9.0 दुनिया में यह पहली बार 9.0 की तीव्रता वाला भूकंप था। इस दौरान सुनामी आई और करोड़ों रुपये की संपत्ति बर्बाद हो गई।

1960 (चिली): दुनिया का सबसे भीषण भूकंप, तीव्रता 9.5। इसे 'ग्रेट चिली अर्थक्वेक' के नाम से भी जाना जाता है। इसमें करीब 1655 लोग मारे गए और 20 लाख से अधिक बेघर हुए।

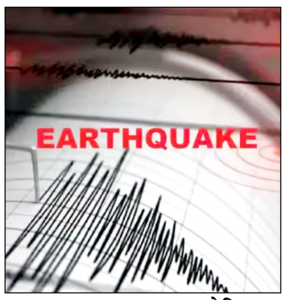

1964 (अलास्का, अमेरिका): दूसरा सबसे भीषण भूकंप, तीव्रता 9.2 इसमें 130 लोग मारे गए और 2.3 बिलियन डॉलर की संपत्ति का नुकसान हुआ।

2004 (सुमात्रा, इंडोनेशिया): तीसरा सबसे भीषण भूकंप। इसका असर भारत के अंडमान निकोबार द्वीप तक दिखा। बड़े-बड़े सुनामी लहरें उठीं जिसने कई देशों को अपनी चपेट में लिया। 2.80 लाख से अधिक लोगों की मौत हुई और दक्षिण एशिया व पूर्वी अफीका में 11 लाख लोग बेघर हुए।

2011 (तोहोकु, जापान): चौथा सबसे विनाशकारी भूकंप, तीव्रता 9.1। इससे पूरे क्षेत्र में सुनामी आ गई। 15,000 से अधिक लोग मारे गए और 1.30 लाख से अधिक लोगों को घर छोड़ना पड़ा।

देश में आए भूकंप...

1. किन्नौर भूकंप, हिमाचल प्रदेश (19 जनवरी, 1975)
- **परिमाण:** 6.8
- **स्थान:** किन्नौर जिला, हिमाचल प्रदेश
- **प्रभाव:** यह भूकंप ऊपरी सतलुज घाटी में आया था। इसके कारण लगभग 60 लोगों की मौत हुई और कई गांवों में भारी क्षति हुई। भूस्खलन और चटानों के गिरने से भी काफी नुकसान हुआ था।

2. बिहार-नेपाल भूकंप (21 अगस्त, 1988)
- **परिमाण:** 6.9
- **स्थान:** भारत-नेपाल सीमा पर (बिहार में दरभंगा, सहरसा, मुजफ्फरपुर और पूर्णिया जैसे जिले प्रभावित हुए)
- **प्रभाव:** इस भूकंप में भारत और नेपाल दोनों में 1000 से अधिक लोगों की जान गई थी, जिनमें से सैकड़ों भारत में थे। हजारों लोग घायल हुए और बड़े पैमाने पर संपत्ति का नुकसान हुआ।

3. उत्तरकाशी भूकंप, उत्तराखंड (20 अक्टूबर, 1991)
- **परिमाण:** 6.8
- **स्थान:** उत्तरकाशी जिला, उत्तराखंड (तब उत्तर प्रदेश का हिस्सा)
- **प्रभाव:** गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में आए इस भूकंप में 760 से अधिक लोगों की मौत हुई और लगभग 5,000 लोग घायल हुए। हजारों घर नष्ट हो गए, जिससे बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ।

4. लातूर भूकंप, महाराष्ट्र (30 सितम्बर, 1993)
- **परिमाण:** 6.2
- **स्थान:** लातूर और उस्मानाबाद जिले, महाराष्ट्र
- **प्रभाव:** यह भारत के सबसे घातक भूकंपों में से एक था, क्योंकि यह एक स्थिर महाद्वीपीय प्लेट क्षेत्र में आया था, जहाँ भूकंपों की उम्मीद कम होती है।

संक्षिप्त समाचार

कृति सैनन बनीं यूएनएफपीए की मानद राजदूत

मुंबई। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष इंडिया ने बॉलीवुड अभिनेत्री, निर्माता और उद्यमी कृति सैनन को लैंगिक समानता के लिए अपना मानद राजदूत नियुक्त किया है। कृति सैनन अपनी नई भूमिका में, महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों और कल्याण की वकालत करेंगी और सशक्तिकरण, शिक्षा, लैंगिक हिंसा को समाप्त करने और सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना समर्थन प्रदान करेंगी। कृति सनोन ने अपनी नई भूमिका के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा कि लैंगिक समानता के लिए यूएनएफपीए इंडिया की मानद राजदूत के रूप में शामिल होकर मुझे बेहद सम्मानित महसूस हो रहा है।

क्रैश हुआ पाक सेना का हेलिकाप्टर, पांच जवानों की मौत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के कब्जे कश्मीर (पीओके) के गिलगित- बाल्टिस्तान क्षेत्र में सोमवार तड़के सेना का एक हेलिकाप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें पांच सैन्यकर्मी मारे गए। मृतकों में दो अधिक. ारी भी शामिल हैं। पाकिस्तानी सेना की ओर से जारी आधिका. रिक बयान के मुताबिक, एमआई-17 हेलिकाप्टर नियमित प्रशिक्षण मिशन पर था, जिसमें उड़ान के दौरान तकनीकी खराबी आ गई।

भारत को कमतर आंकना नासमझी, मोदी और जिनपिंग की मुलाकात अमेरिका को एक बड़ा संदेश

बीजिंग। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को चीन के तियानजिन में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की। इस मुलाकात पर पूरी दुनिया की निगाहें रहीं।

दरअसल दोनों नेताओं की मुलाकात ऐसे समय हुई, जब अमेरिका की ट्रम्प सरकार की टैरिफ नीति ने पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था में उथल पुथल मचाई हुई है। एक चीनी भू-राजनीतिक विशेषज्ञ ने पीएम मोदी और शी जिनपिंग की मुलाकात को ऐतिहासिक बताया और कहा कि यह अमे. रिका लिए एक कड़ा संदेश है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, ताइहे इंस्टीटयूट के वरिष्ठ फेलो एइनार टैंगन ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रम्प भारत को मजबूर करना चाहते थे, लेकिन भारत जैसे देश को, जो बाजारों और श्रम के लिए इतना महत्वपूर्ण है, उसे कमतर आंकना, मुझे नहीं लगता कि यह

एक चीनी भू-राजनीतिक विशेषज्ञ ने पीएम मोदी व शी जिनपिंग की मुलाकात को ऐतिहासिक बताया

अमेरिका दबाव बनाना चाहता है, उसे चिंता है कि भारत गुटनिरपेक्ष दुनिया का नेतृत्व कर सकता है: टैंगन

ठीक है। उन्होंने सुझाव दिया कि नई दिल्ली के पास इस धौंस जमाने वाले देश का सामना करने का अवसर है। टैंगन ने एनडीटीवी पर एक पैनल चर्चा के दौरान कहा कि पीएम मोदी और शी जिनपिंग की यह बैठक केवल भारत और चीन के बारे में नहीं थी, बल्कि कई देशों की चिंताओं के बारे में भी थी, जो अमेरिका के टैरिफ से परेशान हैं। उन्होंने कहा कि यह अहम पल है, जो वाशिंगटन को भारत के प्रति उसके मनमाने व्यवहार के लिए एक कड़ा संदेश देता है। टैंगन ने कहा कि अमेरिका भारत पर दबाव बनाना चाहता है। उसे चिंता है कि भारत गुटनिरपेक्ष दुनिया का नेतृत्व कर सकता है और अमेरिका को बता सकता है कि आप हमारे साथ औपनिवेशिक खेल नहीं खेल सकते और हमें चीन, रूस और कई अन्य देशों सहित एक-दूसरे के खिलाफ नहीं खड़ा कर सकते। अमेरिका ने रूस से कच्चा तेल खरी. दने के लिए अतिरिक्त 25 प्रतिशत टैरिफ लगाया है, जिसके बाद भारत पर कुल टैरिफ 50 प्रतिशत हो गया है। भारत ने इसे अनुचित बताया है। हालांकि मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि ट्रम्प, भारत-पाकिस्तान संघर्षविराम का श्रेय न देने के लिए भारत से नाराज हैं और टैरिफ नीति के पीछे ये भी एक बड़ी वजह है।

अफगान में भीषण भूकंप के बाद हर ओर तबाही का मंजर

वैश्विक संस्थाओं ने बढ़ाए मदद के हाथ

काबुल। अफगानिस्तान में आए भीषण भूकंप के बाद अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं सहायता पहुंचाने एवं राहत-बचाव कार्यों में तेजी ला रही हैं। तालिबान अधिकारियों ने सोमवार को कहा कि इस विनाशकारी भूकंप में कम से कम 800 लोग मारे गए जबकि 2500 से अधिक घायल हुए हैं।

इससें कुनार और नांगरहार क्षेत्रों में अधिकतर गांव पूरी तरह नष्ट हो गए हैं। सीबीएस न्यूज़ ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि अमे. रिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने भूकंप की तीव्रता 6.0 आंकी है और यह स्थानीय समयानुसार रविवार रात 11:47 बजे आया जिसका केंद्र नांगरहार प्रांत के जलालाबाद शहर से लगभग 27

■ भूकंप की तीव्रता 6.0 आंकी गई, कई शहरों में अधिकतर गांव तबाह हो गए

किलोमीटर उत्तर-पूर्व में आठ किलोमीटर की गहराई में था। इसकी वजह से यह ज्यादा विनाशकारी साबित हुआ है।

भूकंप के बाद भी कई झटके महसूस किए गए जिनमें आज सुबह 5.2 तीव्रता का एक हल्का झटका भी शामिल था जिससे स्थानीय लोग अपने घरों से बाहर आ गए। दक्षिण में 350 किलोमीटर से भी जयादा दूर काबुल और इस्लामाबाद तक इसके झटके महसूस किए गए, जहां इमारतें हिल गई थी। अफगानिस्तान के स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता शराफ़त ज़मान ने पुष्टि की है कि अधिकांश मौतें कुनार प्रांत में हुई जहां 610 से जयादा लोगों की मौत और 1300 से जयादा लोगों के घायल होने की पुष्टि हुई है।

नांगरहार में भी कम से कम 12 लोगों की मौत और सैकड़ों लोगों के घायल होने की खबर है। आपदा क्षेत्र के वीडियो फुटेज में स्थानीय लोगों को अंधेरे में अपने हाथों से ढहे हुए घरों को खोदते हुए, मलबे के नीचे से जीवित बचे लोगों एवं शवों को बाहर निकालते हुए देखा गया। हेलीकॉप्टरों और एम्बुलेंसों ने घायलों को अस्पतालों तक पहुंचाया जबकि अस्थाई स्ट्रेचरों की मदद से अन्य लोगों को चिकित्सा टीमों तक पहुंचाया जा रहा था।

पुतिन से मिले प्रधानमंत्री मोदी

कहा: संकट में एक-दूसरे का साथ दिया है भारत-रूस ने

तियांजिन/नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका की विभिन्न देशों पर आयात शुल्क लगाए जाने की घोषणा से दुनिया भर में मची उथल-पुथल के बीच सोमवार को यहां तियांजिन में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ क्षेत्रीय और वैश्विक महत्व के मुद्दों पर महत्वपूर्ण चर्चा की।

उन्होंने कहा कि भारत तथा रूस हमेशा कठिन समय में एक दूसरे के साथ खड़े रहे हैं तथा उनकी साझेदारी दोनों देशों के साथ-साथ वैश्विक शांति, स्थिरता तथा समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। चीन की दो दिन की यात्रा के अंतिम दिन स्वदेश रवाना होने से पहले मोदी ने तियांजिन में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के राष्ट्र प्रमुखों के 25 वें सम्मेलन के समापन के बाद पुतिन के साथ बातचीत में रूस-यूक्रेन संघर्ष के जल्द समाप्त होने की भी उम्मीद जताई। विदेश मंत्रालय ने बताया कि दोनों नेताओं ने आर्थिक, वित्तीय तथा ऊर्जा क्षेत्रों सहित द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा की और द्विपक्षीय संबंधों में मजबूती पर संतोष व्यक्त किया।

उन्होंने दोनों देशों के बीच विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने की प्रतिबद्धता जताई। मोदी ने दोनों देशों के बीच प्रगाढ संबंधों तथा नियमित संपर्क का उल्लेख करते हुए कहा कि हम लगातार संपर्क में रहे हैं। दोनों पक्षों के बीच नियमित रूप से कई उच्च स्तरीय बैठकें भी हुई हैं। इस वर्ष दिसम्बर में हमारे 23 वें शिखर सम्मेलन के लिए 140 करोड़ भारतीय उत्सुकतापूर्वक आपका इंतजार कर रहे हैं।

प्रवेश सूचना-पैरामेडिकल/वोकेशनल एण्ड यूनिवर्सिटी कोर्स
Admission Open
10th व 12th (OPEN Board) से करें (विषय-साइंस, आर्ट, कॉमर्स)
प्रवेश- 10th हेतु- 8th पास और 10th फेल, 12th-10th पास और 12th फेल
Fresh, Part Admission & TOC Facility Available) (Exam-Oct/Nov 2025)
NIOS (शिक्षा मंत्रालय) कोर्स- DNYS, Radiology (एक्स-रे टैक.), CCH (एलोपैथिक), CAT (आयुर्वेदिक-पंचकर्मा टैक), CHD (होम्यापैथिक), ECCE (प्री-प्राईमरी शिक्षक हेतु), Diploma in Yoga & YTTR, CCA (कम्पयूटर), ET (इलेक्ट्रिकल टैक.) ETC.
Contact for UGC Approved University Courses:-
Dip. in CMS&ED, DPT, DMLT, OPTOMETRY, OPHTHALMIC, OT TECH MPHW, DENTAL TECH. & HYGIENE, RADIOLOGY & BACHELOR (IN All Paramedical), (M.SC, B.SC, B.COM, M.COM) BA/MA/PGD YOGA ETC...
:- प्रवेश हेतु सम्पर्क करे:-
श्री कृष्ण वोकेशनल एण्ड पैरामैडिकल कॉलेज
गांधी कॉलोनी, मेन पचैण्डा रोड, निकट गऊशाला, मु.नगर
M.: 8505978850, 9634519104

अब खबरें आपके मोबाइल फोन पर...
www.shahtimesnews.com

ROOP RAKSHAK
आप के रूप का रक्षक
क्या आप अपने चेहरे के मुहासों (Acne) से परेशान हैं। अपनाएं ....
क्या आप अपने चेहरे के दाग, धब्बे व झाईयों से परेशान हैं, अपनाएं
(भारत सरकार द्वारा रजिस्ट्रर्ड ब्रांड)
Customer Care No. 9457717311

यौन समस्याएं
यौन समस्याओं के विशेषज्ञ
पुराने से पुराने यौन रोग के मरीज एक बार अवश्य मिलें
डा. सम्राट
नशामुक्ति, शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा तम्बाकू, प्रोक्सीवॉन कैप्सूल अफीम, चरस, डोडे पोस्त इंजेक्शन व अन्य नशा छुड़ाने का स्थायी ईलाज।
नावल्टी सिनेमा चौक
मुजफ्फरनगर (यू.पी.)
M-9412211108